Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi
Ranchi ● Thursday, 27 July 2023 ● Year : 01 ● Issue : 191 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

जिंदगी में सच के साथ हमेशा चलते रहिए तो वक्त आपके साथ अपने आप चलने लगेगा।

विराट विश्व में सबसे ज्यादा कमाई करने...

SHARE

सेंसेक्स	:	66,707.20
निफ्टी	:	19,778.30

SARAFA

सोना	:	5,660
चांदी	:	80.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

एम्स में आपस में जुड़ी दो बच्चियों को किया गया अलग, दोनों स्वस्थ

NEW DELHI : यहां अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में आपस में जुड़ी एक साल की दो बच्चियों को सर्जरी के माध्यम से सफलतापूर्वक अलग किया गया है। आपस में पेट और छाती से जुड़े जुड़वां बच्चों को सर्जरी कर अलग करने में एम्स के डाक्टरों ने सफलता पाई है। एम्स के पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनू वाजपेयी के नेतृत्व में करीब तीन दर्जन डाक्टरों और पैरामेडिकल कर्मचारियों की टीम ने पिछले महीने यह सफल सर्जरी की। अब दोनों जुड़वां बच्चे स्वस्थ हैं। बच्चे उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के रहने वाले हैं।

पुणे में बम धमाके की साजिश का पदार्फाश, एक गिरफ्तार

MUMBAI : एंटी टेरोरिस्ट स्कॉड (एटीएस) की टीम ने गोंदिया में एक आतंकवादी को गिरफ्तार किया है, जो आतंकी संगठन अल सफा का सक्रिय सदस्य है। शाहनवाज की गिरफ्तारी इससे पहले पुणे में गिरफ्तार आतंकवादी मोहम्मद इमरान मोहम्मद यूसुफ खान और मोहम्मद यूनुस मोहम्मद की निशानदेही पर की गई है। इन तीनों से पूछताछ के दौरान पता चला है कि तीनों पुणे में बम विस्फोट की साजिश रच रहे थे। कोथरुड पुलिस स्टेशन की टीम ने पुणे के कोथरुड इलाके में से मोहम्मद युसुफ खान और मोहम्मद युनुस मोहम्मद को मोटर साइकिल की चोरी का प्रयास करते हुए गिरफ्तार किया था।

जरूरत पड़ने पर LOC भी पार करेंगे : राजनाथ

NEW DELHI : कारगिल विजय दिवस पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि अगर 1999 में हमने एलओसी पार नहीं किया तो इसका मतलब यह नहीं कि हम सीमा पार नहीं कर सकते थे। हम तब भी एलओसी पार कर सकते थे, हम अभी भी एलओसी पार कर सकते हैं और जरूरत पड़ी तो भविष्य में एलओसी पार करेंगे। लद्दाख स्थित द्रास में कारगिल युद्ध स्मारक पर सैन्य परम्परा के साथ हुए इस श्रद्धांजलि समारोह को संबोधित करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि राष्ट्र का मान-सम्मान और इसकी प्रतिष्ठा हमारे लिए किसी भी चीज से ऊपर है और इसके लिए हम किसी भी हद तक जा सकते हैं। हमने सिर्फ पाकिस्तान को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को यह संदेश दिया है कि जब बात हमारे राष्ट्रीय हितों की आएगी, तो हमारी सेना किसी भी कीमत पर पीछे नहीं हटेगी।

शिमला के रामपुर में बादल फटने से तबाही

SHIMLA : हमाचल प्रदेश में मानसून सीजन में हो रही भारी बारिश से कई जिलों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है। राज्य के विभिन्न भागों में भूस्खलन, बाढ़ और बादल फटने की घटनाएं हो रही हैं। शिमला के एक गांव में बादल फटने से काफी नुकसान हुआ है। पानी के तेज बहाव कई जानवर बह गए हैं और कई मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। शिमला जिला के रामपुर उपमण्डल के सरपारा पंचायत के कंधार गांव में मंगलवार की मध्यरात्रि बादल फटने के बाद आई बाढ़ ने तबाही मचा दी। बाढ़ से पांच मकान क्षतिग्रस्त हुए। इसके अलावा प्राइमरी स्कूल, महिला मंडल और युवक मंडल के भवन को भी नुकसान पहुंचा है।

पीएम ने नए आईईसीसी परिसर में किया हवन-पूजन

NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को प्रगति मैदान में अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन केंद्र (आईईसीसी) परिसर में हवन-पूजन में भाग लिया। प्रधानमंत्री ने इस दौरान परिसर में निर्माण कार्य में शामिल मजदूरों को सम्मानित भी किया। प्रधानमंत्री आज शाम को 6:30 बजे एक भव्य उद्घाटन समारोह में आईईसीसी परिसर राष्ट्र को समर्पित करेंगे। लगभग 2700 करोड़ रुपये की लागत से विकसित यह विशाल परिसर 123 एकड़ में फैला हुआ है। यह भारत का सबसे बड़ा एमआईसीई (बैठकें, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनियां) गंतव्य है और यह विश्व के शीर्ष प्रदर्शनी और सम्मेलन परिसरों में शामिल है।

फिर ED के सामने हाजिर नहीं हुए विष्णु अग्रवाल

प्रवर्तन निदेशालय ने पांचवी बार भेजा समन, अब 31 जुलाई को पूछताछ करेगी एजेंसी

- पूजा-पाठ का बहाना बनाकर विष्णु ने ईडी से मांगी 10 दिनों की मोहलत
- चेशायर होम रोड स्थित एक एकड़ जमीन की खरीद-बिक्री के मामले में पूछताछ करेगी ईडी

विष्णु अग्रवाल की फाइल फोटो।

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड के कारोबारी विष्णु अग्रवाल से जमीन की हेराफेरी के मामले में बुधवार को पूछताछ होनी थी। लेकिन एक बार फिर वह ईडी के सामने पेश नहीं हुए। मिली जानकारी के अनुसार विष्णु अग्रवाल ने मेल के माध्यम से बताया कि उनके घर पर पूजा हो रही है, इसलिए वह उपस्थित नहीं हो पाएंगे। इसके साथ ही उन्होंने 10 दिनों के लिए समय की मांग की। जिसके बाद प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने फिर से समन जारी करते हुए 31 जुलाई को हाजिर होने का आदेश दिया है।

बता दें कि अब तक विष्णु अग्रवाल को ईडी के तरफ से पांचवी बार समन भेजा जा चुका है। पांचवी समन में ईडी ने विष्णु अग्रवाल को 31 जुलाई को हाजिर होने का आदेश दिया है। हालांकि ईडी ने उन्हें समन भेज कर 26 जुलाई को पूछताछ के लिए रांची स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में हाजिर होने का निर्देश दिया था। लेकिन पूजा-पाठ का बहाना बनाकर 10 दिन की मोहलत मांग ली। विष्णु अग्रवाल से चेशायर होम रोड स्थित एक एकड़ जमीन की खरीद-बिक्री के सिलसिले में पूछताछ की जानी है। आरोप है कि उक्त जमीन की खरीद-बिक्री कोलकाता के रजिस्ट्री कार्यालय में रखे गये मूल दस्तावेज में छेड़छाड़ कर तैयार किये गये फर्जी कागजात के आधार पर की गयी है। जमीन की इस खरीद-बिक्री में पावर ब्रोकर प्रेम प्रकाश और जालसाजी कर जमीन की खरीद-बिक्री करनेवाले गिरोह के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है। फॉरेंसिक जांच में इस जमीन के दस्तावेज में छेड़छाड़ किये जाने की पुष्टि हो चुकी है। बता दें कि जालसाजी कर तैयार किये गये दस्तावेज के आधार पर भरत प्रसाद और इम्तियाज ने चेशायर होम रोड की जमीन की खरीद-बिक्री के लिए राजेश राय से पावर ऑफ अटॉर्नी ली थी। इसके बाद यह जमीन पुनीत भार्गव को बेची गयी। विष्णु अग्रवाल ने पुनीत भार्गव से यह जमीन खरीदी है। इस जमीन की खरीद-बिक्री में शामिल भरत प्रसाद और राजेश राय को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है।

जिस भाषा में पास होगा विधेयक अब उसी में भेजा जाएगा राजभवन

कल से शुरू हो रहे मॉनसून सत्र को लेकर हुई सर्वदलीय बैठक, भाजपा रही दूर

- सदन चलाने में पक्ष-विपक्ष का सहयोग जरूरी : स्पीकर
- आज भी पक्ष और विपक्ष की अलग-अलग होगी बैठक

सर्वदलीय बैठक में शामिल स्पीकर, सीएम हेमंत सोरेन व अन्य।

विधानसभा मॉनसून सत्र कार्यक्रम

- **28 जुलाई:** विधानसभा के सत्र में नहीं रहने की अवधि में राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों की प्रामाणिक कृतियों का सभा पटल पर रखा जाना. शोक प्रकाश
- **31 जुलाई:** प्रश्न काल, वित्तीय वर्ष 2023-24 के प्रथम अनुपूरक व्यय विवरणी का उपस्थापन
- **01 अगस्त:** प्रश्नकाल, वित्तीय वर्ष 2023 -24 के प्रथम अनुपूरक व्यय विवरणी पर सामान्य वाद-विवाद, मतदान, तत्संबंधी विनियोग विधेयक का उपस्थापन एवं पारण
- **02 अगस्त:** प्रश्नकाल, राजकीय विधेयक एवं अन्य राजकीय कार्य
- **03 अगस्त:** प्रश्नकाल, राजकीय विधेयक एवं अन्य राजकीय कार्य
- **04 अगस्त:** प्रश्नकाल, राजकीय विधेयक एवं अन्य राजकीय कार्य, गैर सरकारी संकल्प

PHOTON NEWS RANCHI : 28 जुलाई से शुरू हो रहे झारखंड विधानसभा के मॉनसून सत्र को लेकर स्पीकर रवींद्र नाथ महतो की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय और सर्वदलीय बैठक हुई। बैठक में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम, श्रम मंत्री सत्यानंद भोक्ता, विधायक सरयू राय, कमलेश सिंह, अमित यादव और लंबोदर महतो ने भाग लिया। बैठक में बीजेपी का कोई भी प्रतिनिधि शामिल नहीं हुआ। सर्वदलीय बैठक के बाद स्पीकर रवींद्र नाथ महतो ने कहा कि उनका आग्रह रहता है कि सदन सुचारू रूप से चले और सभी सदस्य सदन के सफल संचालन में मदद करें, पक्ष और विपक्ष भी सहयोग करे। उन्हें उम्मीद है कि मॉनसून सत्र बेहतर रहेगा, इसमें व्यवधान उत्पन्न होने की संभावना नहीं है, अगर कोई व्यवधान होगा तो उसका पटाक्षेप किया जाएगा और सदन जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा। स्पीकर ने कहा कि विधेयकों में त्रुटि होने और उसके वापस होने के कई मामले आए हैं और अब विधानसभा ने यह फैसला लिया है कि जिस भाषा में विधेयक विधानसभा में पास होगा, उसी भाषा में वो विधेयक राजभवन भेजा जाएगा। विधानसभा में विधेयक हिंदी में पास होता है, अगर किसी विधेयक के अनुवाद करने की आवश्यकता पड़े, तो राजभवन इसके लिए सक्षम है। स्पीकर ने कहा कि पिछले दिनों 3 दिन के कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें आईएएस और झारखंड प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों ने प्रशिक्षण लिया, इसका फायदा भी इस सत्र में मिलेगा। विधायिका और कार्यपालिका दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और दोनों को मिलकर काम करना है। हालांकि बीजेपी अब तक इस सर्वदलीय बैठक में शामिल नहीं हुआ है। सत्र को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष तैयारियों में जुट गया है। मॉनसून सत्र को लेकर 27 जुलाई को पक्ष और विपक्ष की अलग-अलग बैठक होगी। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में सत्ता पक्ष की बैठक होगी। जबकि बीजेपी विधायक दल की बैठक बाबूलाल मरांडी की अध्यक्षता में होगी। सर्वदलीय बैठक में बीजेपी के शामिल नहीं होने के सवाल पर स्पीकर ने कहा कि यह उनका मामला नहीं है, बल्कि इसका जवाब बीजेपी को देना चाहिए। शायद उनकी कोई व्यस्तता होगी, इस वजह से वह बैठक में शामिल नहीं हो पाए। 28 जुलाई से शुरू होने वाले मॉनसून सत्र में कई विधेयकों को सरकार फिर से ला सकती है। सूत्रों की मानें तो जिन विधेयकों पर राजभवन ने जिस तरह की आपत्ति के साथ सरकार को वापस किया था, उन आपत्तियों को दूर कर लिया गया है। बताया जा रहा है कि मॉब लिंचिंग विधेयक इन विधेयकों में अहम विधेयक है। इसके अतिरिक्त ओबीसी आरक्षण बिल, 1932 के खतियान आधारित स्थानीयता विधेयक, जैन विश्वविद्यालय विधेयक शामिल हैं।

ज्ञानवापी में सर्वे को लेकर आज फिर होगी सुनवाई

एएसआई ने कहा- ढांचे को नहीं होगा नुकसान

AGENCY PRAYAGRAJ : ज्ञानवापी सर्वे पर लगी रोक आज तक बढ़ गई है। गुरुवार को साढ़े तीन बजे फिर से इलाहाबाद हाईकोर्ट मामले पर सुनवाई करेगा। मुख्य न्यायमूर्ति प्रीतिंकर दिवाकर ने ज्ञानवापी परिसर में सर्वे कराये जाने के मामले में दाखिल अंजुमन इंतजामिया कमेटी की याचिका पर सुनवाई करते हुए एएसआई के वैज्ञानिक को बुधवार अपराहन 4.30 बजे तलब किया था। एएसआई की ओर से वैज्ञानिक आलोक त्रिपाठी कोर्ट में पेश हुए। उन्होंने कोर्ट को बताया कि जीपीआर विधि और फोटोग्राफी विधि से कैसे सर्वेक्षण होगा। साथ ही एएसआई वैज्ञानिकों ने बताया कि वैज्ञानिक सर्वेक्षण से मूल ढांचे को कोई नुकसान नहीं होगा। इस बीच कोर्ट ने एएसआई से पूछा कितना सर्वे हो चुका है? कब तक पूरा कर लेंगे सर्वे? इस पर एएसआई ने कहा अगर अनुमति मिली तो 31 जुलाई तक सर्वे पूरा हो जाएगा। कोर्ट एएसआई से यह स्पष्ट करना चाहती है कि सर्वे के दौरान कोई क्षति हो सकती है। कोर्ट इस मामले में एएसआई से उस मैथेड को जानना चाहती है, जिसके जरिये एएसआई सर्वे कर रही है। कोर्ट सर्वे सिस्टम का डेमो भी देखेगी। इसके पहले सुनवाई के दौरान मस्जिद पक्ष की ओर से कहा गया कि सर्वे से संरचना को क्षति हो सकती है। जिला जज को सर्वे कराने का अधिकार नहीं है। यह आदेश गलत है। जवाब में मंदिर पक्ष की ओर से जवाब दिया गया कि सर्वे के बाद ही मंदिर के स्ट्रक्चर का सही पता चल सकता है। एएसआई दो तकनीकों के माध्यम से सर्वे कर रही है। उसमे फोटोग्राफी, इमैजिंग करेगी। किसी तरह की क्षति नहीं होगी। इस पर कोर्ट ने सर्वे का डेमो जानना चाहा और सर्वे में लगे एएसआई के साइंटिस्ट को 4.30 बजे तलब किया है। इसके पूर्व सुनवाई के दौरान हिंदू पक्ष के वकील ने कहा वैज्ञानिक सर्वेक्षण से स्थापित ढांचे को कोई नुकसान नहीं होगा। मुस्लिम पक्षकार ने तर्क दिया कि कौन लेगा नुकसान न होने की गारंटी। 1992 अयोध्या में हुए विध्वंस का अनुभव भुलाया नहीं जा सकता।

चेक बाउंस मामले में अमीषा पटेल पर 500 रुपये का जुर्माना

अब रांची सिविल कोर्ट में सुनवाई सात को

CRIME REPORTER RANCHI : अभिनेत्री अमीषा पटेल पर रांची सिविल कोर्ट में चेक बाउंस मामले में 500 रुपए जुमार्ना लगाया गया है। मामले में अगली सुनवाई 7 अगस्त को होगी। अमीषा पटेल पर फिल्म देसी मैजिक बनाने के नाम पर अजय सिंह से ढाई करोड रुपए ठगने का आरोप है। आरोप लगाने वाले अजय कुमार सिंह की ओर से कंपनी के मैनेजर टिंकू सिंह कोर्ट में गवाह के तौर पर पेश हुए। लेकिन उनसे अमीषा पटेल के वकील ने क्रॉस एग्जामिनेशन नहीं किया गया। अमीषा पटेल के वकील टाइम पिटीशन दे रहे थे। इसी वजह से कोर्ट ने जुमार्ना लगाया है। सिविल कोर्ट में ज्यूडीशियल मजिस्ट्रेट डी एन शुक्ला की कोर्ट में सुनवाई हुई। अमीषा पटेल पहले भी दो बार कोर्ट में पेश हो चुकी है। अमीषा पटेल के वकील जयप्रकाश ने कोर्ट से अगली तारीख की मांग कर रहे थे। उन्होंने कोर्ट में कहा कि उन्हें सर्टिफाइड कॉपी की जरूरत है।

पीएम ने सांसद संजय सेठ की सराहना की

RANCHI : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को संसदीय दल की बैठक में सांसद संजय सेठ की प्रशंसा की। रांची के सभी धार्मिक एवं सामाजिक संगठन के लोगों ने सांसद संजय सेठ को बधाई दी है। सांसद की ओर से खेल महोत्सव, सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया गया था। खेल महोत्सव में पांच हजार से ऊपर शहर एवं गांव के बच्चों ने अपनी प्रतिभा दिखाई। इसके अलावा सांस्कृतिक महोत्सव में झारखंड के कलाकारों को बड़ा मंच दिया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से गांव के कई प्रतिभावान कलाकार उभरकर सामने आए।

केंद्र सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव को मंजूरी

अध्यक्ष ओम बिरला ने दी स्वीकृति, उचित समय पर चर्चा कराने का दिया आश्वासन

AGENCY NEW DELHI : लोकसभा में बुधवार को विपक्षी दलों ने केन्द्र सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर नोटिस दिया। प्रस्ताव को अध्यक्ष ओम बिरला ने स्वीकृति प्रदान कर दी और उचित समय पर चर्चा कराने का आश्वासन दिया। लोकसभा में 12 बजे कार्यवाही शुरू होने के थोड़े समय बाद अध्यक्ष बिरला ने कहा कि उन्हें सदस्य गौरव गोगोई की ओर से नियम 198 के अंतर्गत मंत्रिपरिषद में अविश्वास का प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। इसके बाद प्रस्ताव को सदन में पेश किए जाने की अनुमति के लिए समर्थन देने वाले सांसद अपने स्थान पर खड़े हुए । अनुमति के लिए आवश्यक संख्या को देखते हुए अध्यक्ष ने प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान कर दी। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव की अनुमति दी जाती है। उन्होंने कहा कि सभी दलों से चर्चा करके और नियमों के तहत उचित समय पर चर्चा की तिथि से सभी को अवगत करा दूंगा। उल्लेखनीय है कि मणिपुर मुद्दे पर कांग्रेस की ओर से लोकसभा में अविश्वास का नोटिस दिया गया था। विपक्ष लगातार मणिपुर के हालात प्रधानमंत्री से इस पर बयान की मांग कर रहा है।

मणिपुर मुद्दे पर पीएम संसद में दें जवाब : मल्लिकार्जुन खड़गे

राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मणिपुर मुद्दे पर संसद के अंदर अपना बयान दें। खड़गे ने गृह मंत्री अमित शाह के पत्र का जवाब देते हुए कहा कि आपको (गृह मंत्री शाह) ध्यान होगा कि मणिपुर में 03 मई के बाद की स्थिति पर इंडिया घटक दलों की लगातार मांग रही है कि प्रधानमंत्री सदन के पटल पर पहले अपना बयान दें। उसके बाद दोनों सदनों में इस विषय पर एक विस्तृत बहस और चर्चा की जाए। पिछले 84 दिनों से मणिपुर में व्याप्त है और जिस तरह की घटनाएं एक-एक कर सामने आ रही है, हम सभी से यह अपेक्षित है कि हम वहां पर तत्काल शांति बहाली कराएं।

मिसाइल प्रणाली विकसित करने का प्रस्ताव रक्षा मंत्रालय के पास, जल्द मिल सकती है मंजूरी

अब भारत खुद बनाएगा एयर मिसाइल डिफेंस सिस्टम

रूस ने भारत को दिया तीन एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम, दो की और करेगा आपूर्ति

एलआर-एसएएम परियोजना का नेतृत्व भारतीय वायु सेना करेगी, जो रक्षा हार्डवेयर में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक है। डीआरडीओ की एलआरएसएएम परियोजना शुरू किए जाने के बाद भारतीय नौसेना ने अपनी स्वदेशी एलआर-एसएएम प्रणाली का नाम बदलकर एमआर-एसएएम कर दिया है। सेना और वायु सेना ने पहले ही इसी तरह की स्वदेशी प्रणाली को एमआर-एसएएम नाम दिया था। भारत और रूस के बीच हुए पांच स्क्वाड्रन एस-400 मिसाइल सिस्टम का यह सौदा 35 हजार करोड़ रुपये से अधिक का है। रूस अब तक भारत को तीन एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की आपूर्ति कर चुका है, जबकि दो सिस्टम अभी मिलने बाकी हैं।

AGENCY NEW DELHI : भारत अपनी 400 किलोमीटर श्रेणी की सतह से हवा में मार करने वाली लंबी दूरी की मिसाइल वायु रक्षा प्रणाली विकसित कर रहा है। तीन स्तरीय लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली विकसित करने का प्रस्ताव रक्षा मंत्रालय के पास है और जल्द ही इसे मंजूरी मिलने की उम्मीद है। भारत ने फिलहाल रूस से पांच एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम खरीदे हैं, जिनमें से तीन की आपूर्ति हो चुकी है।

रक्षा मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) अपना स्वयं का 400 किलोमीटर लंबी दूरी का वायु रक्षा प्रणाली विकसित कर रहा है, जो रूस से लिए गए एस-400 सिस्टम के बराबर है। यह प्रस्ताव अग्रिम चरण में है और जल्द ही रक्षा मंत्रालय से मंजूरी दे दी जाएगी। इस परियोजना की अनुमानित लागत 2.5 बिलियन डॉलर है, जिससे भारत को हवा में दुश्मन की संपत्ति को मार गिराने की स्वदेशी क्षमता मिलेगी। मिसाइल प्रणाली में सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों की तीन परतें होंगी, जो विभिन्न दूरी पर लक्ष्य को भेद सकेंगी। भारत ने पहले ही मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल प्रणाली एमआर-एसएएम विकसित करने के लिए इजरायल के साथ काम किया है।

बिहार में प्रदर्शनकारियों पर FIRING, एक की गई जान

बिजली कटौती के लिए उग्र भीड़ ने किया पथराव

AGENCY KATIHAR : बिहार के कटिहार जिले में बिजली विभाग के खिलाफ उग्र प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों पर पुलिस ने फायरिंग कर दी। इसमें एक ग्रामीण की मौत हो गई है, जबकि दो लोग गंभीर रूप से घायल हैं। प्रदर्शनकारियों के पथराव में 12 से अधिक पुलिसकर्मी और बिजली कर्मचारी भी घायल हैं। पुलिस ने फायरिंग में एक की मौत की पुष्टि की है। उसका नाम बासल गांव निवासी खुर्शीद आलम (34) है। वहीं, बारसोई के चापाखोड़ पंचायत निवासी नियाज आलम (32) की हालत नाजुक है। हालांकि ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस फायरिंग में 5 लोगों को गोली लगी है। बारसोई अनुमंडल में बुधवार दोपहर 12.30 बजे बिजली कटौती के खिलाफ एक हजार से अधिक लोग सड़क पर उतर गए। प्राणपुर के बस्तौल चौक और बारसोई प्रखंड मुख्यालय का मेन रोड जाम करके लोगों ने प्रदर्शन करने लगे। इस दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस पहुंची, लेकिन आक्रोशित लोगों ने पुलिस पर पथराव कर दिया। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पहले लाठीचार्ज की। उग्र भीड़ फिर भी नहीं मानी तब पुलिस ने गोली चलाई।

BRIEF NEWS

कांग्रेस का मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव हास्यास्पद : बाबूलाल मरांडी

RANCHI: भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने बुधवार को कांग्रेस पार्टी पर कड़ा प्रहार किया। मरांडी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी जिसे जनता ने नेता प्रतिपक्ष के लायक भी नहीं समझा वे आज देश के विकास को समर्पित केंद्र सरकार के खिलाफ सदन में अविश्वास प्रस्ताव ला रही है, जो पूरी तरह से हास्यास्पद है। उन्होंने कहा कि एक और मोदी सरकार गांव, गरीब, किसान, आदिवासी, दलित, पिछड़ा, वंचित समाज के लिए समर्पित है तो दूसरी ओर परिवारवाद, वंशवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण की राजनीति में आकंठ डूबे आईएनडीआईए के लोग किसी भी प्रकार से सत्ता प्राप्ति के लिए बेताब हैं। उन्होंने कहा कि देश की जनता राम के अस्तित्व को नकारने वाले, देश के विभाजन को स्वीकार करने वाले, टुकड़े-टुकड़े गैंग के साथ खड़े होने वाले, सेना के पराक्रम पर प्रश्न खड़ा करने वाले, देश को 20 लाख करोड़ के घोटाले की सौगात देने वाले दलों को भली भांति समझ चुकी है।

शिक्षा मंत्री प्रधान ने मेटा अध्यक्ष निक क्लेग से की मुलाकात

NEW DELHI: केंद्रीय शिक्षा और कौशल विकास मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने बुधवार को मेटा के वैश्विक मामलों के अध्यक्ष और ब्रिटेन के पूर्व उप प्रधानमंत्री निक क्लेग से मुलाकात की। मेटा फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया मंचों का परिचालन करती है। केंद्रीय मंत्री प्रधान ने उद्यमिता, डिजिटल इंडिया और स्किल इंडिया को मजबूत करने के लिए मेटा को आमंत्रित किया। मंत्री ने क्लेग को ओडिशा का पारंपरिक हस्तशिल्प पट्टचित्र भी भेंट किया। प्रधान ने मुलाकात की तस्वीरें ट्विटर पर साझा करते हुए कहा कि मेटा के वैश्विक मामलों के अध्यक्ष सर निक क्लेग से मिलकर खुशी हुई। भारत के प्रतिभा आधार, तकनीकी-नवाचार, उद्यम की बढ़ती भावना के साथ-साथ कौशल प्रयासों के बारे में अच्छी बातचीत हुई। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुसार भारत की आबादी को सशक्त बनाने के लिए उद्यमिता के साथ-साथ डिजिटल इंडिया और स्किल इंडिया मिशन को मजबूत करने के लिए मेटा को आमंत्रित किया।

कांग्रेस नहीं बल्कि विपक्षी गठबंधन के घटक दलों का सामूहिक निर्णय है अविश्वास प्रस्ताव : तिवारी

NEW DELHI: कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व लोकसभा सांसद मनीष तिवारी ने कहा कि संसद में अविश्वास प्रस्ताव हम नियम 198 के तहत लेकर आए हैं। यह महज कांग्रेस का नहीं बल्कि विपक्षी ह्यइंडियाह्ण गठबंधन के सभी घटक दलों का सामूहिक अविश्वास प्रस्ताव है। तिवारी ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि मणिपुर बीते 83-84 दिनों तनावग्रस्त है। वहां कानून-व्यवस्था चरमरा गई है। वहां समुदायों के बीच विभाजन हो गया है। पूरे राज्य में तनाव का माहौल है। सरकार के हाथों से राज्य निकल गया है। मनीष ने कहा कि इन तथ्यों ने हमें अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए मजबूर किया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार, सदन का विश्वास खो चुकी है। हमारी मांग है कि सभी कामों को शिथिल करते हुए, लोकसभा अध्यक्ष को प्राथमिकता के साथ कल ही अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा शुरू करनी चाहिए। अविश्वास प्रस्ताव के कारणों की जानकारी देते हुए मनीष तिवारी ने बताया कि हमें केंद्र सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने की जरूरत पड़ी।

सरकार से ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के विकास से संबंधित केंद्र को नहीं मिला कोई प्रस्ताव

PHOTON NEWS RANCHI: सांसद दीपक प्रकाश ने राज्यसभा में केंद्रीय नागर विमानन मंत्रालय से देश में बने नए विमानपत्तन, इसके लिए आवंटित निधि का ब्यौरा सहित झारखंड में निमार्णाधीन विमानपत्तनों की वर्तमान स्थिति के बारे में भी सूचना मांगी थी। इस पर केंद्र सरकार की ओर से जानकारी दी गयी है कि पिछले तीन वर्षों में देश में पांच हजार 650 करोड़ की लागत से 6 हवाईअड्डे परिचालित किए गए हैं। नागर विमानन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के अनुसार भारत सरकार ने देश में ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों के विकास के लिए ग्रीनफील्ड हवाईअड्डा नीति 2008 तैयार की है। केंद्र ने देशभर में 21 ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों की स्थापना के लिए सैद्धांतिक अनुमोदन दिया है। इन 21 हवाईअड्डों में से 11 ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे परिचालित किए गए हैं। केंद्र ने झारखंड में निमार्णाधीन विमानपत्तनों की वर्तमान स्थिति के बारे में बताया कि जीएफए नीति देश में नए ग्रीनफील्ड हवाईअड्डे के विकास के लिए प्रक्रिया और शर्तें निर्धारित करता है। नीति के अनुसार, हवाईअड्डा स्थापित करने की इच्छुक राज्य सरकार या हवाईअड्डा डेवलपर को दो चरणों की मंजूरी के लिए नागर विमानन मंत्रालय (एमओसीए) को एक प्रस्ताव भेजना होता है। साइट-क्लीयरेंस और उसके बाद सैद्धांतिक अनुमोदन का प्रस्ताव जरूरी है। बताया गया कि अब तक झारखंड राज्य में ग्रीनफील्ड हवाईअड्डे के विकास के लिए संबंधित राज्य सरकार या किसी अन्य हवाईअड्डे के डेवलपर से कोई प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ है। हालांकि, झारखंड के देवघर में एक हवाईअड्डे को 2022 में लगभग 400 करोड़ रुपये की परियोजना लागत पर विकसित और चालू किया गया है। देवघर के अलावा पांच हवाईअड्डे बोकारो, दुमका, जमशेदपुर, हजारीबाग और डाल्टनगंज के हवाई अड्डे के पुनरुद्धार के लिए पहचान की गई है। इनमें से जमशेदपुर हवाई अड्डे में 31 जनवरी को प्रचालन शुरू हो चुका है।

प्रधानमंत्री आज झारखंड को 1607 किसान समृद्धि केंद्र की देंगे सौगात

RANCHI: भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं मुख्यालय प्रभारी डॉ प्रदीप वर्मा ने कहा कि 27 जुलाई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सीकर, राजस्थान से देशभर के किसानों को बड़ी सौगात देंगे। वे किसानों को 1.25 लाख किसान समृद्धि केंद्र प्रधानमंत्री समर्पित करेंगे। इसमें 1607 केंद्र झारखंड राज्य के हैं। सुबह 10 बजे पूर्वाह्न सभी केंद्रों पर बड़ी संख्या में किसान इस कार्यक्रम के शुभारंभ में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि यह किसान समृद्धि केंद्र किसानों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि महत्वपूर्ण हैं। केंद्र पर किसानों की कृषि संबंधी हर प्रकार की समस्याओं का निदान उपलब्ध रहेगा। केंद्र पर खाद, बीज, दवा, कीटनाशक, मिट्टी जांच और डॉक्टर्स की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी।

राज्यपाल ने झारखंड युद्ध स्मारक पर अर्पित किए पुष्पचक्र

RANCHI : राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने बुधवार को कारगिल विजय दिवस पर रांची के दीपाटोली स्थित झारखंड युद्ध स्मारक जाकर वहां पुष्पचक्र अर्पित किए एवं वीर शहीदों को नमन करते हुए श्रद्धांजलि दी। राज्यपाल ने सेना के सभी अधिकारियों और जवानों से बातचीत की। इस डिवीजन के शौर्य और पराक्रम से अवगत होकर अभिभूत हुए। उन्होंने सभी को कारगिल विजय दिवस की शुभकामनाएं दी। ● फोटोन न्यूज

CM की सौगात: झारखंड के सभी आंदोलकारी होंगे सम्मानित

चिन्हित करने के प्रस्ताव को मिली मंजूरी

PHOTON NEWS RANCHI: मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कुल 413 आंदोलनकारी को चिन्हित करने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है। चिन्हित सभी आंदोलनकारियों को अनुमान्यता के आधार पर झारखंड आंदोलनकारी के रूप में अधिसूचित किया गया है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर आंदोलकारियों को चिन्हित करने की प्रक्रिया गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा जारी है। आने वाले दिनों में अन्य पात्र आंदोलकारियों को चिन्हित किया जाएगा।

कहां के कितने आंदोलनकारी

चिन्हित आंदोलनकारियों में बोकारो के 20, देवघर के 132, धनबाद के 12, गिरिडीह के 43, गोड्डा के 19, गुमला के 33, हजारीबाग के 23, कोडरमा के 13, लातेहार के 02, लोहरदगा के 29, रामगढ़ के 08, रांची के 47, साहेबगंज के 10 और सरायकेला के 22 आंदोलनकारी हैं।

आंदोलनकारियों के प्रति संजीदा रहे हैं मुख्यमंत्री

सरकार गठन के बाद से ही मुख्यमंत्री आंदोलनकारियों के संघर्ष को सम्मान देने के प्रति संजीदा रहे हैं। यही वजह है कि पूर्व में मुख्यमंत्री ने आंदोलनकारियों को चिह्नित करने के लिए आयोग के पुनर्गठन, आंदोलनकारी या उनके आश्रितों को मासिक पेंशन और अन्य सुविधाएं देने को लेकर निर्णय लिया है। झारखंड-वनांचल अलग राज्य के गठन के लिए चिन्हित पांच आंदोलनकारियों के मृत्युपरांत उनके आश्रितों को लाभ देने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी। मुख्यमंत्री ने झारखंड-वनांचल एवं जेपी आंदोलनकारी चिह्नितकरण आयोग से प्राप्त 13वीं संपुष्ट सूची को भी पूर्व में स्वीकृति दी है। मुख्यमंत्री का स्पष्ट निर्देश है आंदोलन के अंतिम पंक्ति में शामिल रहे पात्र आंदोलनकारी को लाभ दिया जाए।

पंचायती राज विभाग ने जारी किया झारखंड पेसा नियमावली का ड्राफ्ट

RANCHI: पंचायती राज विभाग, झारखंड सरकार ने झारखंड पेसा नियमावली का ड्राफ्ट बुधवार को जारी कर दिया।इसके तहत झारखंड पंचायत उपबंध नियमावली 2022 का औपबंधिक प्रारूप प्रकाशित किया गया है। इसका विस्तार राज्य के अनुसूचित क्षेत्रों में होगा। इसमें ग्राम सभा के सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया गया है। अनुसूचित क्षेत्रों में प्रावधानों के अंतर्गत ग्राम सभा के गठन, इसकी संरचना,कामकाज के संचालन, ग्राम सभा की स्थायी समितियां और उनकी कार्यप्रणाली को स्पष्ट किया गया है। इसके अलावा सामुदायिक संसाधनों के प्रबंधन,परंपराओं का संरक्षण एवं विवादों का निपटारा, विकास योजनाओं का अनुमोदन, लाभार्थियों की पहचान एवं सामाजिक क्षेत्र के संस्थाओं के कार्यों पर नियंत्रण, भू-अर्जन एवं पुनर्स्थापन, लघु जल निकायों का प्रबंधन, लघु खनिज, मादक द्रव्यों का नियंत्रण और लघु वन उपज के संबंध में महत्वपूर्ण विषयों को स्पष्ट किया गया है। इसी तरह संक्रमित भूमि का प्रत्यावर्तन, बाजारों का प्रबंधन, उधार पर नियंत्रण जैसे बिंदुओं पर भी ग्राम सभा और उसकी भूमिका को लेकर विस्तार से जानकारी दी गई है। गौरतलब है कि राज्य में 13 जिले के अधिसूचित क्षेत्र में आते हैं, इनमें रांची, खूंटी, गुमला, लोहरदगा, सिमडेगा, पूर्वी सिंहभूम, प. सिंहभूम, सरायकेला- खरसांवा, दुमका, जामताड़ा, पाकुड़, लातेहार और साहिबगंज जैसे जिले शामिल हैं। इसके अलावा गढ़वा,गोड्डा और पलामू के भी कुछ हिस्से इसके दायरे में आते हैं। इस तरह से राज्य के कुल 16 जिलों को मिलाकर 135 प्रखंडों के 2066 पंचायतों के 16028 ग्राम सभा में जनजाति समाज की महत्वपूर्ण उपस्थिति देखी जाती है।

पोड़ैयाहाट विधायक ने 4.46 करोड़ की योजनाओं का किया शिलान्यास

PHOTON NEWS DUMKA: जिले के सरैयाहाट प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत करीब 4.46 करोड़ की लागत से बनने वाले छह स्वास्थ्य उपकेंद्र भवन सहित विद्यालय की घेराबंदी व पुलिया निर्माण का शिलान्यास बुधवार को पोड़ैयाहाट विधायक प्रदीप यादव ने किया। विधायक ने कहा कि स्वास्थ्य उपकेंद्र का निर्माण होने से आसपास के लोगों को प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध होगी। क्षेत्र के विकास की कड़ी में सरैयाहाट प्रखण्ड के हरिपुर, लकड़बांक, हंसडीहा, रौंधिया, अमघट्टा, और दिग्गी गांव में स्वास्थ्य उपकेंद्र एवं ककनी गांव स्थित उच्च विद्यालय की घेराबंदी व गोविंदपुर-कदिया सड़क में पुलिया का शिलान्यास किया गया। इस मौके पर सहायक अभियंता मिथलेश कुमार, कनीय अभियंता प्रशांत कुमार, हंसडीहा मुखिया प्रीतम कुमार,लकड़बांक मुखिया पुती लाल टुडू, टुनटुन मंडल सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सीपी सिंह ने किशोरगंज में मोदी सरकार के कार्यों की किताबें बांटी

PHOTON NEWS RANCHI: भाजपा महानगर ओबीसी मोर्चा के मंत्री राजेश प्रजापति के नेतृत्व में बुधवार को सुखदेवनगर मंडल ने किशोरगंज में मोदी सरकार के नौ वर्ष के कार्यकाल को लेकर अभियान चलाया. इस अभियान में भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री सीपी सिंह भी शामिल हुए. उन्होंने किशोरगंज की विभिन्न गलियों में भाजपा कार्यकताओं के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 9 वर्षों में किए गए कार्यों से संबंधित पुस्तक एवं पर्चे बांटे। विशिष्ट जनों

को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया. इस अवसर पर सुखदेवनगर मंडल अध्यक्ष ओम प्रकाश पांडेय, सत्यनारायण सिंह, प्रेम वर्मा, डॉ. भीम प्रभाकर, राजू सिंह, मुकेश मुक्ता, अशोक पांडेय, रोहित राज, विपिन वर्मा सहित नेता और कार्यकर्ता शामिल हुए।

विधानसभा में भ्रामक उत्तर और तथ्य छुपाने को लेकर सरयू राय ने सीएम को लिखा पत्र

PHOTON NEWS RANCHI: विधायक सरयू राय ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखकर कहा है कि लिट्टी चौक, जमशेदपुर से एनएच-33 तक पुल एवं पथ निर्माण के बारे में अबतक ढंग से सूचना नहीं मिली है। यह स्थिति तब है जब उन्होंने वर्ष 2022 में झारखंड विधानसभा के बजट सत्र में भी इसके बारे में पथ निर्माण विभाग से जानकारी मांगी थी। अब विधायक ने इसे लेकर विभागीय मंत्री और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से शिकायत की है। पत्र में निर्दलीय विधायक ने कहा है कि सदन में

जानकारी मांगे जाने पर भी प्रश्नों का गलत या भ्रामक उत्तर दिया जाना सदन को गुमराह करना है। यह विधानसभा की भी अवमानना है।

सदन में प्रश्न पूछने वाले सदस्यों के विशेषाधिकार का हनन भी है। पथ निर्माण विभाग की अन्यमस्कता एवं पूर्ववर्ती तथा वर्तमान सरकार के स्तर पर गंभीरता के अभाव के कारण जमशेदपुर और मानगो का यातायात नियंत्रित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण योजना अधर में लटक गयी है। ऐसे में मुख्यमंत्री से अनुरोध है कि विधानसभा के मानसून सत्र शुरू होने से पूर्व निर्धारित योजना को प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान करें। योजना निर्माण की प्रक्रिया आरंभ करने का निर्देश दें। सरयू राय का कहना है कि उन्होंने 23 मार्च को सदन में लिट्टी चौक, जमशेदपुर से एनएच-33 के लिए पथ निर्माण एवं पूल के संबंध में जानकारी मांगी थी। इस पर पथ निर्माण विभाग ने बताया था कि जहां तक लिट्टी चौक एनएच-33 के लिए पथ निर्माण एवं पुल का प्रश्न है, यह मार्ग रेखांकन पथ निर्माण विभाग के स्वामित्व का नहीं है, जिसकी संभाव्यता एवं निधि की उपलब्धता के अनुसार अग्रेत्तर कार्रवाई की जा सकेगी। सरयू के मुताबिक इस संबंध में उन्होंने कई बार पथ निर्माण सचिव से अद्यतन स्थिति के बारे में जानकारी मांगी पर नहीं मिली।

आदिवासी विकास समिति ने पीएम का फूंका पुतला

RANCHI: मणिपुर में महिलाओं के साथ हुई अमानवीय घटना के विरोध में झारखंड आदिवासी विकास समिति के सदस्यों ने बुधवार को विरोध मार्च निकाहा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मणिपुर के सीएम का पुतला फूंका. इसका नेतृत्व समिति के प्रभाकर नाग ने किया. उन्होंने कहा कि गृह मंत्री के पास इंटेलिजेंस विंग है. फिर भी आदिवासी समाज के साथ अत्याचार हो रहा है। मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये, ताकि वहां जल्द शांति बहाल हो सके. रांची महानगर अध्यक्ष अमित मुंडा ने कहा कि पूंजीपति आदिवासी समाज को तोड़ने में लगे हैं. मौके पर जगन लिंडा, बिरसा टोपो, मंगल उरांव, सोमरा उरांव, एतवा लोहरा, पैरो टोप्पो, अमित मुंडा समेत सैकड़ों आदिवासी शामिल थे।

PM MODI ने ठोका 'तीसरे टर्म' का दावा

'भारत मंडपम' में पीएम मोदी के संबोधन की 7 बड़ी बातें

AGENCY DELHI: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी स्थित प्रगति मैदान में पुनर्विकसित अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी एवं सम्मेलन केंद्र परिसर (आईईसीसी) को राष्ट्र को समर्पित किया। शाम में परिसर पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री ने इसका उद्घाटन किया. नये परिसर को 'भारत मंडपम' नाम दिया गया है. इस दौरान पीएम मोदी ने सभी को संबोधित भी किया और 'तीसरे टर्म' का दावा ठोका। लगभग 123 एकड़ भूभाग में तैयार यह परिसर अधिकारियों के मुताबिक, यह परिसर देश में अंतरराष्ट्रीय बैठकों, सम्मेलनों और प्रदर्शनियों की मेजबानी के लिए विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण पर आधारित है। इस परियोजना को लगभग 2,700 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया गया है. लगभग 123 एकड़ भूभाग में तैयार यह परिसर देश के सबसे बड़े बैठक, सम्मेलन और प्रदर्शनी केन्द्र के रूप में विकसित किया गया है. इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने भारत की अध्यक्षता में हो रही जी-20 बैठकों पर दो स्मारक सिक्का और दो डाक टिकट जारी किये।

विश्व के शीर्ष प्रदर्शनी और सम्मेलन केंद्रों में से एक

आयोजनों के लिए उपलब्ध स्थान के मामले में यह परिसर विश्व के शीर्ष प्रदर्शनी और सम्मेलन केंद्रों में से एक है. इसमें सम्मेलन केंद्र, प्रदर्शनी हॉल और एम्फीथियेटर सहित कई अत्याधुनिक सुविधाएं शामिल हैं. इस सम्मेलन केंद्र को प्रगति मैदान परिसर के केंद्रीय स्थल के रूप में विकसित किया गया है. इस परिसर में बहु-उद्देश्यीय हॉल और प्लेनरी हॉल की संयुक्त क्षमता 7,000 लोगों की है, जो ऑस्ट्रेलिया के सिडनी ओपेरा हाउस से अधिक है. इसके शानदार एम्फीथियटर में 3,000 लोगों के बैठने की व्यवस्था है. इससे पहले पीएम मोदी ने आज सुबह परिसर में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजा-अर्चना की. पूजा करने के बाद प्रधानमंत्री ने इस परिसर के पुनर्विकास में योगदान देने वाले श्रमिकों से मुलाकात की और उनके साथ तस्वीरें भी खिंचवाई।

पीएम मोदी की संबोधन की बड़ी बातें

1. पीएम मोदी ने अपने समोढ़न में इस बात का विश्वास जताया कि 2024 के चुनाव में भी उनकी पारी जीतकर सामने आएगी. उन्होंने कहा कि मेरे तीसरे कार्यकाल में, भारत दुनिया की शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा...ये मोदी की गारंटी है.

2. पीएम मोदी ने यह भी कहा कि कुछ लोगों की प्रवृत्ति होती है टिप्पणी करने और अच्छे कार्यों को रोकने की. जब 'कर्तव्य पथ' बन रहा था तो कई बातें ब्रेकिंग न्यूज के तौर पर अखबारों के पहले पन्ने पर चल रही थीं. इसे अदालतों में भी उठाया गया, लेकिन जब इसका निर्माण हुआ तो उन्हीं लोगों ने कहा कि यह अच्छा है. मुझे यकीन है कि 'टोली' भी 'भारत मंडपम' को स्वीकार करेगी और यह भी संभव है कि वे यहां किसी सेमिनार में व्याख्यान देने आएं.

3. इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर-भारत मंडपम के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी ने कहा, दुनिया का सबसे बड़ा संग्रहालय दिल्ली में बनाया जाएगा.

4. पीएम मोदी ने यह भी अकह कि आज एक ऐतिहासिक दिन है क्योंकि आज कारगिल विजय दिवस है. हमारे वीर बेटे-बेटियों ने देश के दुश्मनों को हराया. मैं कारगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले हर नायक को श्रद्धांजलि देता हूं.

5. साथ ही उन्होंने कहा कि देश को जो सपना देखा, उन सपनों को साकार होते भी देश देख रहा है. साथ ही उन्होंने कहा कि भारत मंडपम को देखकर हर भारतीय खुश है. इसका निर्माण बहुत पहले हो जाना चाहिए था. लेकिन इसे रोकने के लिए नकारात्मक लोगों ने कोशिश की. साथ ही उन्होंने कहा कि आज देश में सबसे बेहतर निर्माण हो रहा है. और ऐसा इसलिए क्योंकि विकसित होने के लिए बड़ा सोचना की होगा.

6. पीएम मोदी ने कहा कि भारत की विकास यात्रा अब रुकने वाली नहीं है. उन्होंने बताया कि आज हर महीने 6 किमी मेट्रो लाइन का काम हो रहा है.

7. आगे पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि पिछले 5 वर्षों में 13.5 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आये हैं. आगे उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां भी कह रही हैं कि भारत में अत्यधिक गरीबी खत्म होने की कगार पर है. इससे पता चलता है कि पिछले 9 वर्षों में जो निर्णय और नीतियां बनाई गई हैं, वे देश को सही दिशा में ले जा रही हैं.

NDA की सरकार की 5 बातों का समझें पूरा समीकरण

1. कम से कम 50 सदस्यों के समर्थन की आवश्यकता

आपको बता दें कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बुधवार को वर्तमान केंद्र सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है. साथ ही लोकसभा अध्यक्ष ने यह भी कहा है कि सभी दलों से बातचीत करने के बाद बहस की तिथि और समय तय किया जाएगा. आपको बता दें कि अविश्वास प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए सदन के कम से कम 50 सदस्यों के समर्थन की आवश्यकता होती है. इस प्रस्ताव पर सदन में 50 से अधिक सदस्यों का समर्थन प्राप्त था.

2. अविश्वास प्रस्ताव से सरकार को नुकसान की गुंजाइश नहीं

बता दें कि विपक्षी दलों के गठबंधन क.ठ.ऊ.क.अ. के नेताओं के द्वारा बीते दिन मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मणिपुर हिंसा पर संसद में बोलने के लिए प्रस्ताव लाने का फैसला किया था. हालांकि, एनडीए के पास लोकसभा में अभी भी बहुमत हासिल है.

3. लोकसभा में एनडीए की कुल ताकत 332 सांसद

सीटों की अगर बात करें तो 2019 में बीजेपी ने अकेले 303 सीटें जीतकर 37.3 वोट शेयर हासिल किया था. हालांकि, अभी की स्थिति की अगर बात करें तो एकनाथ शिंदे की शिवसेना के 13 सांसद, अपना दल (सोनेलाल) के 2 और लोजपा के 6 लोकसभा सांसद हैं. एनसीपी के अजित पवार की एंट्री के बाद एनडीए की कुल संख्या 332 तक पहुंच चुकी है.

4. विपक्ष ने क्यों लाया यह प्रस्ताव ?

कई राजनीतिक सलाहकारों और पूर्व में लाए गए प्रस्तावों के मद्देनजर यह कहा जा सकता है कि अविश्वास प्रस्ताव का इस्तेमाल अक्सर विपक्ष द्वारा विशेष मुद्दों पर सदन में चर्चा के लिए मजबूर करने के लिए एक टूल के तौर पर किया जाता है.

5. 2018 में एनडीए ने जीता था अविश्वास प्रस्ताव

जानकारी हो कि लोकसभा में मोदी सरकार के खिलाफ पहला अविश्वास प्रस्ताव 20 जुलाई, 2018 को पेश किया गया था. हालांकि, उस समय राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने 325 सांसदों के साथ भारी बहुमत से जीत हासिल की और अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में केवल 126 वोट पड़े. लेकिन बहस ने विपक्ष को कृषि संकट, धीमी आर्थिक वृद्धि और मॉब लिंचिंग की बढ़ती घटनाओं सहित कई मुद्दों पर सरकार पर हमला करने का मौका दिया।

BRIEF NEWS

मृत बंदी की पत्नी को पांच लाख की सहायता राशि

RANCHI : जिले के लापुंग थाना क्षेत्र निवासी वीरेंद्र मुंडा की आश्रित पत्नी सुमन कुमारी को पांच लाख की आर्थिक सहायता राशि दी जायेगी। निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी रांची डीसी राहुल कुमार सिन्हा होंगे जबकि राशि की निकासी रांची जिला कोषागार से की जायेगी। वीरेंद्र मुंडा रांची के लापुंग थाना क्षेत्र स्थित रायटोली का रहने वाला था। वीरेंद्र ने हत्या मामले में कोर्ट के सामने सरेंडर किया था। उसे जुलाई 2021 में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा भेज दिया गया था। 22 नवंबर, 2022 को उसका शव जेल में फंदे पर लटकता मिला था।

पुलिस की चुस्ती और सतर्कता से ही घटनाओं पर लगेगा अंकुश : मधुसूदन मोदक

RANCHI : डेली मार्केट के थाना प्रभारी मधुसूदन मोदक ने कहा कि पुलिस की चुस्ती और सतर्कता से ही किसी भी तरह की घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सकता है। मोदक बुधवार को थाने में उपस्थित सभी पुलिस पदाधिकारियों एवं पुलिसकर्मियों के साथ बैठक में बोल रहे थे। थाना प्रभारी ने सभी उपस्थित पुलिस पदाधिकारियों एवं पुलिसकर्मियों को वरीय पुलिस अधीक्षक से मिले आदेशो निदेर्शों से अवगत कराते हुए त्योहार को सकुशल सम्पन्न कराये जाने के लिए सतर्कता बनाये रखने की हिदायत दी। थाना प्रभारी ने सभी पुलिस पदाधिकारियों को निर्धारित समय पर गश्ती करने, रात्रि के समय मुस्तैदी के साथ डयूटी किये जाने का निर्देश दिया।

बाइक सवार लुटेरों ने बुजुर्ग महिला से झपटी सोने की चेन

RANCHI : जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र स्थित हेसाग में रहने वाले राजकुमार की पत्नी के गले से बाइक सवार अपराधियों ने मंगलवार की सुबह चेन उड़ा लिया। राजकुमार के बयान पर जगन्नाथपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज हुई है। राजकुमार ने पुलिस को बताया कि वह अपनी पत्नी के साथ टहल कर घर लौट रहे थे। तभी के घर से बाइक पर सवार दो युवक पहुंचे और एक युवक बाइक से उतरकर पत्नी के गले से चेन छीनकर भागने लगा। राजकुमार ने उस युवक को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हो पाए और युवक बाइक पर बठकर फरार हो गया। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी में घटना कैद हुई है। अपराधियों का चेहरा और बाइक का नंबर पुलिस को पुलिस मिला है। पुलिस फुटेज के आधार पर अपराधियों की पहचान करने में जुटी हुई है। पुलिस जल्द ही दोनों अपराधियों को पकड़कर जेल भेजेगी। इधर, पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी ने टिवट् कर इस मामले में प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा है कि हेमंत है तभी तो ये हिम्मत है।

एटीएस को छापेमारी के दौरान ईंधन सहित अन्य संसाधन मुहैया कराने के निर्देश

RANCHI : छापेमारी के दौरान आतंकवाद निरोधी दस्ता (एटीएस) को वाहन, ईंधन सहित किसी अन्य प्रकार के संसाधनों की कमी ना हो इसके लिए डीजीपी अजय कुमार सिंह के आदेश पर आईजी प्रोविजन प्रभात कुमार ने सभी जिले के एसएसपी और एसपी को आदेश जारी किया है। जारी आदेश में कहा गया है कि एटीएस की टीम राज्य में कहीं भी छापेमारी में जाती है, तो उनके वाहनों में आवश्यकता पड़ने पर संबंधित जिले के एसएसपी और एसपी ईंधन की आपूर्ति करना सुनिश्चित करेंगे। साथ ही छापेमारी के दौरान एटीएस को जरूरत के अनुसार सभी संसाधन मुहैया कराए जाएं।

atom美
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

रांची के ग्रामीण एसपी नौशाद आलम बने साहिबगंज एसपी

झारखंड के 7 आईपीएस का ट्रांसफर, होम डिपार्टमेंट ने जारी की अधिसूचना

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड सरकार के गृह, कारा एवं आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से बुधवार को सात आईपीएस अधिकारियों के तबादले की अधिसूचना जारी कर दी गई। सरकारी आदेश आने के साथ ही एक झटके में सात जिलों के एसपी बदल गए। सरकार ने इस बार अपने तबादला सूची में प्रमोटी आईपीएस अधिकारियों पर विश्वास जताया है। राज्य सेवा में लंबे समय तक कार्य का अनुभव प्राप्त करने के बाद आईपीएस बने ज्यादातर अधिकारियों को जिलों की दी गई है। मौजूदा सूची में केवल दो अधिकारी डायरेक्ट आईपीएस हैं। जबकि पांच प्रमोटी आईपीएस अधिकारी हैं। प्रियदर्शी आलोक और रीष्मा रमेशन डायरेक्ट आईपीएस अधिकारी हैं। वहीं नौशाद आलम, अजीत पीटर डुंगडुंग, दीपक कुमार शर्मा, डॉ विमल कुमार तथा पितांबर सिंह खेरवार को अलग-अलग समय पर आईपीएस में प्रमोशन मिला है।

नौशाद आलम

अजीत पीटर डुंगडुंग

रिश्मा रमेशन

अधिसूचना के मुताबिक, रांची के ग्रामीण एसपी नौशाद आलम को अगले आदेश तक साहिबगंज का एसपी बनाया गया है। धनबाद जिले के गोविंदपुर में अपनी सेवा दे रहे प्रियदर्शी आलोक को बोकारा का पुलिस अधीक्षक बना दिया गया है। झारखंड जगुआर (एसटीएफ) के एसपी अजीत पीटर डुंगडुंग का रांची से ट्रांसफर कर दिया गया है। उन्हें देवघर के एसपी की नयी जिम्मेदारी सौंपी गयी है। धनबाद की ग्रामीण एसपी रीष्मा रमेशन अब पलामू की एसपी बनायी गयीं हैं। दीपक कुमार, जो अब तक विशेष शाखा में वरीय पुलिस उपाधीक्षक थे, उनको आईपीएस में प्रोन्नत किये जाने के बाद गिरिडीह का एसपी बना दिया गया है। इसी तरह डॉ बिमल कुमार, जो झारखंड पुलिस सेवा के अधिकारी थे, को आईपीएस में प्रोन्नति मिलने के बाद उन्हें सरायकेला-खरसावां के एसपी की जिम्मेदारी दी गयी है। इसके पहले वह रांची में विशेष शाखा (मुख्यमंत्री सुरक्षा) में वरीय पुलिस अधीक्षक थे। झारखंड पुलिस सेवा से भारतीय पुलिस सेवा में प्रोन्नत किये गये एक और अधिकारी को बड़ी जिम्मेदारी मिली है। इनका नाम पीतांबर सिंह खेरवार है। खेरवार धनबाद जिले के निरसा में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी थे। झारखंड सरकार ने अगले आदेश तक उन्हें दुमका का एसपी बना दिया है।

इन आइपीएस अधिकारियों की हुई पोस्टिंग

- जैप 3 कमांडेंट के पद पर पदस्थापित प्रियदर्शी आलोक को बोकारो जिला का एसपी बनाया गया है।
- रांची ग्रामीण एसपी के पद पर पदस्थापित नौशाद आलम को साहिबगंज जिले का एसपी बनाया गया है।
- एसटीएफ एसपी के पद पर पदस्थापित अजीत पीटर डुंगडुंग को देवघर एसपी बनाया गया है।
- धनबाद ग्रामीण एसपी के पद पर पदस्थापित रिश्मा रमेशन को पलामू जिले का एसपी बनाया गया है।
- नव प्रोन्नत प्रोन्नत आईपीएस दीपक कुमार शर्मा को गिरिडीह जिले का एसपी बनाया गया है।
- नव प्रोन्नत आईपीएस डॉ विमल कुमार को सरायकेला जिले का एसपी बनाया गया है।
- नव प्रोन्नतआईपीएस आईपीएस पीतांबर सिंह खेरवार को दुमका जिले का एसपी बनाया गया है।

हटाए गए एसपी रहेंगे वेटिंग फॉर पोस्टिंग में: तबादले से संबंधित आदेश में जिक्र किया गया है कि जिन अधिकारियों की पोस्टिंग नहीं की गई है वे, पुलिस मुख्यालय रांची में योगदान देंगे। ये अधिकारी फिलहाल वेटिंग फॉर पोस्टिंग में रहेंगे।

धारा 498ए का हो रहा दुरुपयोग : हाईकोर्ट

SPECIAL REPORTER RANCHI : झारखंड हाईकोर्ट ने एक मामले कहा कि भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए (महिला के प्रति क्रूरता) मूल रूप से विवाहित महिलाओं पर पतियों या उनके रिश्तेदारों द्वारा की गई क्रूरता को दंडित करने के लिए बनाई गई थी लेकिन वर्तमान समय में इसका दुरुपयोग हो रहा है। जस्टिस संजय कुमार द्विवेदी ने बुधवार को कहा कि ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां अदालतों ने धारा 498ए के दुरुपयोग और ऐसी शिकायतों में बिना वैवाहिक विवादों में पति के रिश्तेदारों को फंसाने की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त की थी। याचिकाकताओं की ओर से अधिवक्ता राजेश कुमार, पत्नी की ओर से अधिवक्ता ललन कुमार सिंह और राज्य सरकार की ओर से अधिवक्ता शैलेश कुमार सिन्हा ने अदालत के समक्ष पक्ष रखा।

अदालत ने यह टिप्पणी एक महिला के पति के रिश्तेदारों के खिलाफ दर्ज आपराधिक मामले को रद्द करने की याचिका में सुनवाई के दौरान की। याचिकाकताओं के खिलाफ आरोपों को ध्यान में रखते हुए हाई कोर्ट ने आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 482 के तहत उनके खिलाफ मामले को रद्द कर दिया है। हालांकि, अदालत ने स्पष्ट किया कि उसने पति के खिलाफ लंबित शिकायत और आपराधिक कार्यवाही में हस्तक्षेप नहीं किया है।

लाखों टन आयरन के निष्पादन के मामले में सरकार ने नहीं दिया जवाब

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट ने सारंडा के जंगल में आयरन ओर (लौह अयस्क) के खनन एवं उसके ट्रांसपोर्टेशन से होने वाले प्रदूषण की रोकथाम के लिए विधायक सरयू राय की जनहित याचिका पर राज्य सरकार से जवाब मांगा गया था कि उसे निष्पादित करने की क्या प्रक्रिया अपनाई जा रही है लेकिन इस पर बुधवार को सुनवाई के दौरान सरकार का कोई शपथ पत्र नहीं आया। सरकार की ओर से समय की मांग की गई, जिसके बाद कोर्ट ने मामले की सुनवाई छह सितंबर निर्धारित की है। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता दिवाकर उपाध्याय ने पैरवी की। हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले की सुनवाई की। पूर्व की सुनवाई में याचिकाकर्ता की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि फिलहाल सारंडा के जंगल में माइनिंग गतिविधि रुकी हुई है।

डीडीसी समय पर लक्ष्य पूरा करें : ग्रामीण विकस सचिव

ग्रामीण विकास विभाग की योजनाओं को लेकर हुई बैठक

PHOTON NEWS RANCHI : ग्रामीण विकास सचिव चंद्रशेखर ने बुधवार को विभागीय योजनाओं की समीक्षा वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से की। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास की योजनाओं में डीडीसी की भूमिका अहम है। ससमय लक्ष्य पूरा करें। किसी प्रकार की शिकायत नहीं मिलनी चाहिए। उन्होंने मनरेगा अंतर्गत मानव दिवस सृजन में आवश्यक प्रगति का निर्देश दिया। सभी संबंधित डीडीसी को निर्देश दिया कि योजनाबद्ध तरीके से एक समुचित कार्य प्रारूप तैयार कर जल्द से जल्द सभी योजनाओं को पूर्ण करने की दिशा में कार्य करें। मनरेगा योजनांतर्गत सक्रिय मजदूरों का शत-प्रतिशत आधार सीडिंग कराने का निर्देश दिया। उन्होंने पूर्व की लंबित योजनों का अवलोकन कर प्राथमिकता के आधार पर उन्हें पूर्ण कराने का निर्देश दिया। सचिव चंद्रशेखर ने कहा कि कल्याणकारी योजनाओं को धरातल पर उतारना ही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। बैठक में सभी उप विकास आयुक्त, मनरेगा आयुक्त राजेश्वरी बी, एसबीएम नेहा अरोड़ा, संयुक्त सचिव अरुण कुमार सिंह आदि उपस्थित थे।

योजनाओं की समीक्षा बैठक में शामिल अधिकारी ● फोटोन न्यूज

पलाश मार्ट को और सुदृढ़ करने की जरूरत

बैठक में उन्होंने जेएसएलपीएस की क्रियान्वित योजनाओं की समीक्षा की। जेएसएलपीएस के सफल संचालन का निर्देश दिया। कहा कि पलाश मार्ट को और सुदृढ़ करने की जरूरत है। पलाश और दीदी किचन के आउटलेट जिले के मुख्य बाजार और दर्शनीय स्थल में खुलने चाहिए। दीदी किचन को स्थापित कर उन्हें प्रोफेशनल तरीके से चलाने का प्रशिक्षण दिया जाए। समूह के बैंक से संबंधित कार्यों को समीक्षा कर इनका निष्पादन सुनिश्चित किया जाए।। समूह की महिलाओं का सखी के रूप में चयन कर, उनको बैंक से जोड़ना है।

लाभुकों की वास्तविक स्थिति का सर्वे कराएं

उन्होंने फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के तहत चिह्नित लाभुकों की वास्तविक स्थिति की जानकारी के लिए सर्वे करने का निर्देश दिया। साथ ही चयनित लाभुकों की नियमित निगरानी एवं सहयोग देने को कहा। अमृत सरोवर योजना के अंतर्गत 75 तालाबों का जीर्णोद्धार, निर्माण की प्रगति की समीक्षा करते हुए सचिव ने ससमय कार्य पूर्ण कराने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने अरबन मिशन और जलछाजन की भी समीक्षा की।

दिये गये अहम निर्देश

- प्रधानमंत्री आवास योजना -ग्रामीण के तहत लाभुकों को यथाशीघ्र द्वितीय किस्त जारी करने का निर्देश दिया। राज्य में अब तक 42,413 लाभुकों को द्वितीय किस्त जारी नहीं हुआ है।
- 30,179 लाभुक जिन्हें द्वितीय किस्त विमुक्त कर दिया गया है, इनके आवास को 15 अगस्त 2023 तक अनिवार्य रूप से पूर्ण किया जाए।
- लंबित आवास के लाभुकों को प्रेरित करते हुए आवास पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया जाए।
- यथासंभव ढलाई छत वाले आवास के निर्माण के लिए लाभुक को प्रेरित किया जाए।
- बाबा साहब भीमराव अंबेडकर आवास योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2023-24 के 75 प्रतिशत आवासों की स्वीकृति 15 अगस्त 2023 तक कर दिया जाए।
- मनरेगा अभिषरण के तहत पूर्व में पूर्ण आवासों के लिए मस्टर रॉल जारी किया जाए, ताकि आवास निर्माण के क्रम में ज्यादा से ज्यादा मानव दिवस का सृजन किया जा सके।

कुर्की-जब्ती करने पहुंची थी बिहार पुलिस, HC का आ गया स्टे ऑर्डर

बेगूसराय कोर्ट का मामला, पटना हाईकोर्ट ने दी राहत

CRIME REPORTER RANCHI : शहर के कोकर इंडस्ट्रियल एरिया में बहू को प्रताड़ित करने के मामले में बुधवार को अविनीश सिंह के घर बिहार पुलिस कुर्की-जब्ती करने पहुंची। फर्स्ट क्लास ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट मिस रूबी कुमारी के कोर्ट ने अमरेश सिंह और उसके पूरे परिवार वालों के खिलाफ कुर्की जब्ती का आदेश जारी किया था। हालांकि पटना हाईकोर्ट के स्टे ऑर्डर के बाद पुलिस को बैरंग वापस लौटना पड़ा। इसके बाद बीच में ही पुलिस को अपनी कार्रवाई बंद करनी पड़ी। जिसके बाद पुलिस लौट गई। बिहार के बेगूसराय जिला कोर्ट के आदेश पर बिहार पुलिस, रांची पुलिस के सहयोग से कार्रवाई करने पहुंची थी। पीड़ित महिला सपना बिहार राज्य के बेगूसराय जिले के रहने वाली है। उसकी शादी वर्ष 2018 में 51 इंडस्ट्रियल एरिया निकट केपी ऑटोमोबाइल वर्कशॉप के रहने वाले अविनीश कुमार उर्फ अविनीश सिंह के साथ हुई थी। सपना ने पुलिस को बताया था कि शादी के दौरान 10 लाख नकदी, 10 लाख के आभूषण और पांच लाख के घरेलू सामान दिए गए थे। सपना जब ससुराल पहुंची तो उसके पति अविनीश, उसकी सास माधुरी सिंह, भसुर डॉक्टर राकेश कुमार सिंह ने उसे प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। इस सब में उसके ससुर अमरेश सिंह की पूरी सहमति थी। शादी के बाद ससुराल वालों ने सपना के परिजनों से 50 लाख दहेज की मांग करनी शुरू कर दी। इसको लेकर उसे प्रताड़ित भी किया जाने लगा। इसके बाद सपना के परिजनों के द्वारा उसे ससुराल से ले जाकर मायके में रखा गया। काफी समय के बाद भी जब अविनीश के परिवार वाले नहीं माने तो सपना ने प्राथमिकी दर्ज कराई।

कोकर इंडस्ट्रियल एरिया में अविनीश सिंह के घर की कुर्की-जब्ती के लिए पहुंची पुलिस।

भाकपा नेता सुभाष मुंडा की गोली मारकर हत्या, विरोध में लोगों ने दुकानों में की तोड़फोड़

सिटी एसपी के वाहन पर भी आक्रोशित लोगों ने किया पथराव

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड की राजधानी रांची में बुधवार की रात को एक वामपंथी नेता सुभाष कुंडा की गोली मारकर हत्या कर दी गयी। हत्या के बाद से इलाके में तनाव का माहौल है। लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। देखते ही देखते लोगों ने दुकानों में तोड़फोड़ शुरू कर दी। कई गाड़ियों में भी तोड़फोड़ की गयी है। सिटी एसपी के वाहन पर भी पथराव कर तोड़ दिया। घटना के बाद स्थिति को नियंत्रित करने के लिए एसएसपी, सिटी एसपी, ग्रामीण एसपी और हटिया के डीएसपी खुद दलादली पहुंच गये हैं। पांच थाने की पुलिस से फोर्स को वहां भेजा गया। बताया गया है कि रात को किसी ने सुभाष मुंडा को गोली मार दी, जिससे उनकी मौत हो गयी। घटना नगड़ी थाना क्षेत्र के दलालदली के पास की है। जैसे ही सुभाष मुंडा की हत्या की खबर मिली, स्थानीय लोग वहां जुट गये और तोड़फोड़ शुरू कर दी। दुकानों के साथ-साथ कई वाहनों में भी तोड़फोड़ की खबर है। बताया जा रहा है कि सुभाष मुंडा के कार्यालय में घुसकर बदमाशों ने उन पर गोली चलायी।

सुभाष मुंडा की फाइल फोटो।

रिम्स के तीन विभागाध्यक्षों सहित डॉक्टरों को शोकॉज

ड्यूटी से मिले गायब, सभी को 24 घंटे के अंदर जवाब देने का आदेश

PHOTON NEWS RANCHI : रिम्स प्रबंधन के सख्त आदेश के बाद भी अस्पताल में सीनियर डॉक्टरों के लगातार गायब रहने से मरीजों को बेहतर चिकित्सीय सुविधा से वंचित रहना पड़ रहा है। बुधवार को रिम्स निदेशक डॉ आरके गुप्ता ने कई विभागों का औचक निरीक्षण किया जिसमें कई विभागाध्यक्ष अपनी ड्यूटी से गायब मिलें। इन विभागों में फिजियोलाजी, एनाटमी और पीएसएम विभाग शामिल हैं, जहां ना ही विभागाध्यक्ष मौजूद थे और ना ही कोई डॉक्टर ड्यूटी में दिखें। रिम्स निदेशक ने इन विभागों के एचओडी व अन्य डॉक्टरों को शोकाज जारी कर 24 घंटे के अंदर अपना जवाब देने को कहा है। निदेशक ने बताया कि लगातार इस तरह का दृश्य देखने को मिल रहा है, जिसमें सीनियर डॉक्टर ही गंभीर नहीं दिख रहे हैं। ऐसे में मजबूरन इन लोगों पर कार्रवाई की जा रही है। इससे पहले भी ओपीडी में कुछ सीनियर डॉक्टर ड्यूटी से नदारद थे, जिन पर भी कार्रवाई की गई। प्रबंधन ने जिन विभागाध्यक्षों को शोकाज किया है उसमें फिजियोलाजी विभाग के एचओडी डॉ मुकुल चंद्र गोप, एनाटमी विभाग के एचओडी डॉ अशोक कुमार दुबे और पीएसएम विभाग के एचओडी डॉ विद्यासागर शामिल हैं। इनके अलावे इन विभाग के वे डॉक्टर भी शामिल हैं जो ड्यूटी से गायब थे। रिम्स के माइक्रोबायलाजी, पैथोलाजी और बायोकेमिस्ट्री विभाग के निरीक्षण में सभी एचओडी व डॉक्टर ड्यूटी पर दिखें। निदेशक ने बताया कि इन विभागों में काम हो भी रहा था, यहीं पर मरीजों के मर्ज की जांच की जाती है, जहां पर सबसे अधिक मरीजों के सैंपल आते हैं। ऐसे में इन विभागों के डॉक्टरों के द्वारा किए जा रहे कार्य को देख दूसरे विभागों को भी अपनाना चाहिए।

जैप 10 की महिला बैंड शादी के इस सीजन बुकिंग के लिए तैयार, लगेंगे 10 से 20 हजार रुपये

अब शादी में बैंड बजायेगी JHARKHAND POLICE

PHOTON NEWS RANCHI : शादियों के इस सीजन में झारखंड पुलिस ने अनूठा पहल किया है। स्कूल-कॉलेजों और सरकारी कार्यक्रम में बजने वाला झारखंड पुलिस का बैंड अब शादियों और दूसरे फंक्शन में भी उपलब्ध होगा। इसे लेकर विज्ञापन जारी किया गया है। शादियों के लिए उपलब्ध होने वाला बैंड है जैप 10 का महिला बैंड। हालांकि ऐसा नहीं है कि यह पहली बार हो रहा है। जैप 10 की ओर से पहले से यह बैंड उपलब्ध कराया जाता है। जैप 10 की ओर से जारी विज्ञापन में बताया गया है कि आम आदमी के लिए पूरी और आधी बैंड का विकल्प है। शादियों के लिए बुकिंग जारी है। जारी विज्ञापन के अनुसार शादी और दूसरे निजी कार्यक्रम के लिए इच्छुक व्यक्ति आधी या पूरी बैंड का विकल्प चुन सकता है। पूरी बैंड में लगभग 34 लोगों की टीम होती है। वहीं आधी बैंड में लगभग 16 से 18 लोगों की टीम होती है।

प्रतीकात्मक तस्वीर।

दो घंटे के लिए करा सकते हैं बुकिंग

जैप 10 महिला बटालियन बैंड की बुकिंग दो घंटे के लिए होगी। इस बैंड की बुकिंग रात 10 बजे के बाद के लिए नहीं होगी। बैंड के आने-जाने का खर्च बुकिंग करने वाले व्यक्ति को देना होगा। निर्धारित दर के अनुसार अगर बुकिंग रांची के लिए है तो बुकिंग करने वाले को 900 रुपये देने होंगे। वहीं रांची के बाहर के लिए 16 रुपये प्रतिकिमी की दर से पैसा जमा करना अनिवार्य होगा। बैंड की बुकिंग कंट्रोल रूम में कमांडेट के पास आवेदन देकर किया जा सकता है। बुकिंग के लिए कंट्रोल रूम के नंबर 0651-2270005 पर संपर्क किया जा सकता है।

पूरी बैंड के लिए 20 हजार रुपये देने होंगे। वहीं आधी बैंड के लिए 10 हजार रुपये लगेंगे। वहीं बैंड के आने जाने के लिए का खर्च बुकिंग करने वाले व्यक्ति को चुकाना होगा। इस संबंध में जैप कमांडेंट धनंजय सिंह ने बताया कि यह पहली बार नहीं हो रहा है। पहले भी समय-समय पर विज्ञापन जारी कर बताया जाता है। जैप 10 की बैंड स्कूल, कॉलेजों के कार्यक्रम में निःशुल्क परफॉर्म करती है।

नाबालिग का अपहरण थाना में प्राथमिकी दर्ज

CRIME REPORTER RANCHI : सुखदेव नगर इलाके में रहने वाली एक नाबालिग का अपहरण करने का मामला सामने आया है। इस मामले में नाबालिग के घरवालों के बयान पर आरोपी शाहिल अंसारी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज हुई है। घरवालों का कहना है कि बच्ची घर से दूध लाने के लिए निकली थी। रात तक वह घर नहीं लौटी तो घरवालों ने उसे काफी खोजा लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। कुछ लोगों से पूछताछ की गई तो पता चला कि शाहिल जबरन उनकी बच्ची को लेकर गया है। वह गाड़ी में बैठना नहीं चाहती थी लेकिन उसे बैठाकर ले जाया गया है। पुलिस का कहना है कि घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी का फुटेज खंगाला जा रहा है। पुलिस ने आरोपित के घरवालों से पूछताछ की है लेकिन आरोपित के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाई है। अभी तक के जांच में पता चला है कि शिकायतकर्ता और आरोपित के परिवार रातू इलाके में पहले एक ही जगह पर रहते थे। कुछ दिन पहले नाबालिग के घरवाले सुखदेव नगर इलाके में रहने आए हैं। दोनों परिवारों में पहले से जान पहचान है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही नाबालिग को बरामद कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

BRIEF NEWS

जेनेरिक पेपर परीक्षा की तिथि बढ़ाई जाए : राजेश कुमार

RAMGARH: अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रामगढ़ जिला सह संयोजक राजेश कुमार ने प्रेस बयान जारी कर कहा कि विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के जेनेरिक पेपर इ.अ. Core एवं B.Sc. Core के परीक्षार्थियों का एक ही विषय के GE का परीक्षा लेना तय हुआ है जो छात्र सेमेस्टर एक से लेकर सेमेस्टर चार तक एक अतिरिक्त GE विषय की परीक्षा आयोजित करने का निर्णय लिया गया इसमें बहुत से छात्र छात्रा राज्य से बाहर है और उनको सूचना नहीं मिल पाया है और इसके कारण आज तिथि खत्म हो गया और बहुत से छात्र छात्रा फॉर्म नहीं भर पाया है इसके लिए तिथि को पूनः आगे किया जाए जिससे सभी छात्र छात्रा फॉर्म भर सकें ।

जेएम कॉलेज में मना कारगिल विजय दिवस, देश के वीर शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

BHURKUNDA: पटेलनगर भुरकुंडा स्थित जेएम कॉलेज एनएसएस इकाई एक के तत्वावधान में बुधवार को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत देश के वीर शहीदों के तस्वीर पर श्रद्धा-सुमन अर्पित कर की। इस दौरान कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. शीला सिंह व डॉ. अरविंद सिंह ने स्वयंसेवको व महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को 26 जुलाई के दिन का महागाथा बताया। उन्होंने कहा कि हम देश सेवा कर ही उन शहीद वीरों को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। जिन्होंने अपने जीवन को तिरंगे में लपेटकर देश को सुर्पुद कर दिया। यह युद्ध विकट परिस्थितियों एवं विकट मौसम में लड़ा गया था। फिर भी हमारे देश के वीर सपूतों ने पाकिस्तानी सेना को पराजित कर विजय हासिल की थी। उन अमर शहीदों के लिए विद्यार्थियों नारा भी बलुंद किया। मौके पर प्रो. प्रमोद सिंह, आलोक, राहुल, सुधीर, संजय, सोम, सूरज, अंकित, स्नेहा, आस्था, पारूल, अंजली, सुमन, प्रिया सहित दर्जनों विद्यार्थी मौजूद थें।

भाजपाईयों ने कारगिल विजय दिवस पर कोर ऑफ मलेट्री पुलिस को किया सम्मानित

BHURKUNDA: कारगिल विजय दिवस के अवसर पर बुधवार को भाजपाईयों ने एसबीआई शाखा में कार्यरत राधेश्याम सिंह को बुके देकर सम्मानित किया। इस दौरान कोर ऑफ मलेट्री पुलिस (सीएमपी) राधेश्याम सिंह ने बताया कि उन्होंने आर्मी में 1983 में अपना योगदान दिया था। जिसके बाद मिजोरम, नागालैंड, लद्दाक, तेजपुर और कारगिल में भी अपना योगदान दिया था। इस अवसर पर जिला सांसद प्रतिनिधि खनिज मद के सुमन सिंह और भाजपा के भुरकुंडा मंडल उपाअध्यक्ष अमरेश सिंह ने बुक्के देकर उनका हौसला आफजाई किया। मौके पर सुमन सिंह ने कहा कि आज हमारे देश में आर्मी का बहुत बड़ा योगदान है। आज आर्मी के लोग जागते है तो पूरा देश चैन की नींद सोता है। उन्होंने कहा कि देश के वीर शहीदों की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है।

भुरकुंडा श्रावणी मेला में निजी सुरक्षाकर्मियों ने की दबंगई, बच्ची के सामने पिता के साथ की मारपीट

BHURKUNDA: लक्ष्मी टॉकीज भुरकुंडा स्थित रामनवमी मैदान में चल रहे डिजनी लैंड फायर श्रावणी मेला में निजी सुरक्षा कर्मियों ने एक युवक को जबरन प्रवेश शुल्क को लेकर मंगलवार की रात्रि जमकर पिटाई कर दी। पिटाई की घटना के बाद लोगों में भारी आक्रोश है। जानकारी के अनुसार एक युवक अपने परिवार के साथ श्रावणी मेला घुमने गया था। जैसे ही युवक अपने परिवार के साथ मेला के मेन गेट पर पहुंचा। तो वहां तैनात सुरक्षाकर्मी ने मेला मे प्रवेश शुल्क की मांग की। इसके बाद सुरक्षा में लगे निजी सुरक्षा कर्मी और मेला संचालन समिति के लिये काम कर रहे कर्मचारियों ने मेला में अंदर जाने के लिए दस रुपए की टिकट कटाने की बात कही। जिस पर युवक ने मेला के अंदर जाने के नाम पर जबरन पैसा वसूलने का विरोध किया। युवक द्वारा विरोध करने पर महिला और पुरूष सुरक्षाकर्मियों ने उसके बच्ची के सामने ही युवक के साथ जमकर मारपीट करने लगें।

अपराधियों ने पुल निर्माण स्थल पर मचाया उत्पात

मजदूरों से की मारपीट, जेसीबी समेत अन्य वाहन भी क्षतिग्रस्त किये

PHOTON NEWS KHUNTI: जिले के मुरहू में पीएलएफआई नक्सलियों ने मंगलवार देर रात जमकर उत्पात मचाया।

तीन नक्सलियों ने मुरहू थाना क्षेत्र के सुरूंदा और मारंगटोली स्थित पुल निर्माण कार्य में लगे मजदूरों के साथ मारपीट की। इतना ही नहीं उनलोगों ने जेसीबी, बाइक, स्कूटी सहित अन्य वाहनों को भी क्षतिग्रस्त कर दिया।

घटना की सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची. लेकिन तब तक नक्सली वहां से फरार हो गये।

बाइक पर सवार होकर पहुंचे थे तीन नक्सली

जानकारी के अनुसार, एक बाइक पर सवार होकर तीन हथियारबंद नक्सली पुल निर्माण स्थल पर पहुंचे. सबसे पहले उन्होंने वहां पर रखी जेसीबी, बाइक और एक स्कूटी को क्षतिग्रस्त किया. इसके बाद जेसीबी चालक और एक मजदूर को हॉकी स्टीक से मारकर जख्मी कर दिया. इसके बाद एक नक्सली देसी कट्टा निकालकर उसमें गोली भरने लगा. हालांकि जेसीबी चालक समेत अन्य मजदूर वहां से जैसे-तैसे भागकर अपनी जान बचायी. इसके बाद मजदूरों ने इसकी सूचना ठेकेदार को दी. फिर ठेकेदार ने एसपी को इसकी घटना की जानकारी दी. एसपी के निर्देश पर डीएसपी अमित कुमार के नेतृत्व में पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और मामले की जांच में जुटी गयी।

बोकारो में ऑटो और डंपर की टक्कर में चालक जख्मी

BOKARO: बालीडीह थाना क्षेत्र के रेलवे फाटक के समीप टैम्पो और डंपर की जोरदार टक्कर में टैम्पो चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे बोकारो सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस दौरान कुछ देर के लिए यातायात बाधित होगा। सूचना पर पहुंची बालीडीह और माराफारी थाना पुलिस ने जाम को हटाया। चालक की पहचान 35 वर्षीय रमेश वर्मा निवासी झोपड़ी कॉलोनी के रूप में हुई है।

पलामू में उत्तर कोयल मुख्य नहर से मिला युवक का शव, हत्या की आशंका

PHOTON NEWS PALAMU: जिले के हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के चेनैनी गांव के समीप उत्तर कोयल मुख्य नहर से बुधवार को एक युवक का शव मिला। उसकी पहचान हैदरनगर थाना क्षेत्र के दक्षिणी सिमरसोत गांव निवासी 18 वर्षीय रंजन कुमार यादव के रूप में हुई है। मृतक के पिता शिवशंकर यादव ने पुत्र की हत्या कर शव नहर में फेंक दिये जाने की आशंका जताई है। हैदरनगर थाना प्रभारी आजाद अंसारी ने बताया कि मृतक रंजन कुमार यादव का वस्त्र उतरी सिमरसोत स्थित झाड़ी में मिला है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए अनुमंडलीय अस्पताल हुसैनाबाद भेज दिया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। रिपोर्ट आन के बाद ही हत्या या आत्महत्या की स्थिति स्पष्ट हो पायेगी।

आमलोग मूलभूत सुविधाओं से वंचित, सड़क-पानी की समस्या

झुमरी तिलैया नगर परिषद के वार्ड नंबर 2 में मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव

- इलेक्ट्रो कास्टिंग फैक्ट्री वाली सड़क कच्ची, नाली भी नहीं
- सड़क पर बहता है पूरे मुहल्ले का पानी, राहगीर परेशान
- बारिश के मौसम में घरों में घुस जाता है सड़क का पानी

PHOTON NEWS KODERMA : झुमरी तिलैया नगर परिषद अंतर्गत वार्ड नंबर 2 में समस्याओं का अंबार लगा हुआ है. यहां सबसे मुख्य समस्या सड़क, नाली व पेय जलापूर्ति की है. वार्ड 2 के स्थानीय लोगों ने बताया कि इस वार्ड में पेय जलापूर्ति की कोई सुविधा ही नहीं है. अगर कभी पानी आ भी गया, तो दो-चार मिनट ही रहता है। इस वार्ड के रहने वाले ओमप्रकाश राम ने बताया कि उनके घर के पास से गुजरने वाली कच्ची गली साई इलेक्ट्रो कास्टिंग फैक्ट्री से विजय रजक के घर तक है. इस गली में नाली ही नहीं है। बारिश के मौसम में सड़क का पानी घरों में पानी घुस जाता है। जिससे मुहल्लेवासियों का जीना मुहाल हो जाता है. वहीं, जागेश्वर यादव ने बताया कि वार्ड नंबर 2 साई फैक्ट्री गझंडी रोड से लेकर शिव मंदिर तिलैया बस्ती तक सड़क के दोनों तरफ नाली नहीं है. जिसके कारण पूरे मुहल्ले का पानी सड़क पर ही बहता रहता है. ऐसे में इस सड़क से गुजरने वाले राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

वार्ड पार्षद से लगाई गुहार, नहीं दिया गया ध्यान– कलवा देवी

इसी वार्ड की कलवा देवी व सारो देवी ने बताया कि उनके घर के पास वाली गली में फाइबर ब्लॉक और नाली निर्माण के लिए कई बार वार्ड पार्षद से गुहार लगाई गई है, लेकिन अभी तक इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया है. वहीं, तिलैया बस्ती छठ तालाब से मंझली गली तिलैया बस्ती तक भी नाली नहीं रहने से पूरे मुहल्ले की पानी सड़क पर ही बहता रहता है।

200 लोगों को आवास दिलवाया : वार्ड पार्षद

इस संबंध में वार्ड पार्षद प्रतिनिधि संजय यादव ने बताया कि अपने कार्यकाल में करीब 200 लोगों को आवास दिया। आधा दर्जन गली और नाली का निर्माण भी करवाया गया. 200 लोगों को पेंशन की सुविधा शुरू कराई। वहीं, गझंडी रोड और नाली के निर्माण के लिए अनुसंशा की गई थी, लेकिन एस्टीमेंट अधिक होने के कारण नगर परिषद से स्वीकृति नहीं मिल पाई।

भू-माफियाओं पर कार्रवाई की मांग को लेकर डीसी से मिले माले विधायक

जमुआ में 21वें दिन भी भू-माफियाओं के खिलाफ जारी रहा धरना

PHOTON NEWS GIRIDIH: भू-माफियाओं के खिलाफ जमुआ अंचल परिसर में चल रहे अनिश्चितकालीन धरना 21वें दिन भी जारी रहा. दूसरी ओर अब तक आरोपितों पर कोई कार्रवाई नहीं होने पर भाकपा माले ने आंदोलन तेज करने की धमकी दी है. इसी मामले में बगोदर के भाकपा माले विधायक बिनोद कुमार सिंह के नेतृत्व में अशोक पासवान, मुनव्वर हसन, बंटी इंकलाबी व असगर अली का शिष्टमंडल गिरिडीह उपायुक्त से मिलकर ज्ञापन सौंपा. इस दौरान विधायक ने उपायुक्त को जमीन के फजीर्वाड़ा की जानकारी देकर भ्रष्ट अधिकारी और-भू माफिया पर कार्रवाई की मांग की.

डीसी को ज्ञापन सौंपते माले नेता साथ में विधायक बिनोद सिंह • फोटोन न्यूज

विधायक ने कहा कि अभी तक कोई पहल नहीं होना चिंताजनक है, इससे जनता का आक्रोश बढ़ता जा रहा है. कभी भी जमुआ में उग्र आंदोलन हो सकता है. बता दें कि जमुआ के मगहाकला खुर्द टोला गन्धकपरी के 40 गरीब किसान बीते 21 दिनों से भू-माफिया के खिलाफ धरना दे रहे हैं।

महाविद्यालय की प्राचार्या ने छात्रों को मिलजुल कर रहने और तन, मन, धन से देश की सेवा करने की दी प्रेरणा

भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक कारगिल विजय दिवस पर समारोह आयोजित

PHOTON NEWS RAJRAPPA: चितरपुर महाविद्यालय चितरपुर में 'राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ इकाई' के द्वारा भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक कारगिल विजय दिवस समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. संज्ञा ने शहीदों के नाम दीप प्रज्वलित कर वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी. इस मौके पर कॉलेज के प्राचार्या तथा सभी शिक्षकों द्वारा पुष्प अर्पित कर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित की गईं। महाविद्यालय की प्राचार्या ने छात्रों को मिलजुल कर रहने और तन, मन, धन से देश की सेवा करने की प्रेरणा दी। कारगिल विजय दिवस हम सभी देशवासियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है। प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को हम सभी देशवासी यह दिवस मनाते हैं। बताते चले कि भारतीय सेना

कार्यक्रम में मौजूद प्राचार्य एवं अन्य। • फोटोन न्यूज

के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक कारगिल विजय दिवस हर साल 26 जुलाई को मनाया जाता है। साल 1999 में कारगिल युद्ध में देश के बहादुर जवानों ने पाकिस्तान को धूल चटा दी थी। भारत-पाकिस्तान के बीच हुए कारगिल युद्ध का कोड नाम ऑपरेशन विजय था। यह युद्ध लगभग 60 दिनों से ज्यादा चला था और 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। 26 जुलाई के दिन भारतीय सेना ने पाकिस्तान द्वारा कब्जाई गई चौकियों पर तिरंगा फहराया था। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्राध्यापक सह राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो. उत्तम कुमार ने किया. उत्तम ने भारतीय सेना की तरफ से कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए अभियान के बारे में छात्रों को विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में शहीदों के नाम एक मिनट का मौन धारण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. निरंजन महतो ने किया।

हर मौके पर हमारे देश की सेना ने इतिहास रचा है: भोला करमाली

RAJRAPPA: चितरपुर प्रखंड के प्राथमिक विद्यालय छोटकी लारी में बुधवार को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दो मिनट का मौन धारण कर कारगिल युद्ध में शहीद हुए समस्त वीर जवानों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नमन किया गया। साथ ही देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा करने का संकल्प लिया। मौके पर प्राचार्य भोला करमाली, सेवानिवृत्त प्राचार्य पुन्नु राम नायक ने सयुंक्त रूप से कहा कि हमारा देश वीरों का देश है। हर मौके पर हमारे देश की सेना ने इतिहास रचा है। यही कारण है विश्व स्तर पर भारत का सिर से ऊंचा रहता है। मौके पर सहायक प्राध्यापक कृपाल महतो, सुदेश महतो सहित छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया।

सदर अस्पताल के सहयोग से महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का किया गया आयोजन

PHOTONE NEWS RAMGARH: रामगढ़ महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई1 और इकाई 2 द्वारा रामगढ़ सदर अस्पताल के सहयोग से महाविद्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के शिक्षक और छात्र छात्राओं ने स्वेच्छा से रक्तदान किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ रेखा प्रसाद ने कहा कि नियमित अंतराल यानी तीन महीने बाद रक्तदान करते रहने से हमारे शरीर में आयरन की मात्रा संतुलित रहती है और रक्तदाता को हृदयाघात की संभावना नहीं रहती। नियमित रक्तदान करने से कैंसर सहित अन्य बीमारियों का खतरा भी कम हो जाता है। उन्होंने आगे कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रयास है कि किसी भी व्यक्ति की रक्त की कमी से जान न जाए। इसके लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं

और बार बार रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। आई क्यू ए सी समन्वयक डॉ रत्ना पांडेय की गरिमामय उपस्थिथि रही। उन्होंने कहा कि एनएसएस युनिट-1की कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ कामना राय और युनिट-2 की प्रोग्राम पदाधिकारी डॉ अनामिका बच्चों में उत्साहवर्धन कर उन्हें रक्तदान के लिए प्रेरित करते रहतीं है जो बहुत सराहनीय है। इस कार्यक्रम में डॉ रत्ना पांडेय, डॉ अनामिका, रमेश, विक्की, अमन, बड़ाईक, देवेंद्र, कुंदन, जोया अख्तर, स्वाति शर्मा ,रीना कुमारी और सुमन ने अपना अपना रक्तदान किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ राहुल, डॉ शाहनवाज खान, डॉ नीतू मिंज, डॉ असीम खलखो, जितेंद्र, जोया ,अंजली, साक्षी, खुशी, स्वाति, रीता, सुमन, प्रिया, राजा, अग्रवाल, विकास आदि ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

कारगिल विजय दिवस भारतीय सेना के अद्भूत शौर्य और पराक्रम का दिन : रामानंद

PHOTON NEWS GIRIDIH : सिरसिया स्थित बीएनएस डीएवी पब्लिक स्कूल में 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि में शामिल सेवानिवृत्त आईएएस रामानंद प्रसाद सिंह ने विद्यालय परिसर में बने शहीद-ए-कारगिल स्मारक पर तिरंगा फहराया। इसके बाद विद्यालय के उप प्राचार्य योगेश्वर शर्मा के नेतृत्व में बच्चों ने अमर सपूतों

कविता वाचन प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे • फोटोन न्यूज

को श्रद्धांजलि दी। मुख्य अतिथि ने कहा कि यह दिवस भारतीय सेना के अद्भुत शौर्य और पराक्रम का दिन है। भारतीय सैनिकों ने दुर्गम पहाड़ियों में भी पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिए थे। इस अवसर पर बच्चों के बीच चित्रांकन और कविता वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कांतिलाल देशमुख, महेंद्र कुमार, जवाहर उपाध्याय, एसके पटनायक, बीके सिंह, अर्चन कुमार मित्रा, रोहित पाठक, देव बनर्जी और सुचित्रा बोस का सराहनीय योगदान रहा।

बालू लोड करने जा रहे हाइवा ने ऑटो को मारी टक्कर, चार की मौत

PHOTON NEWS KHUNTI : बालू लोड करने जा रहे हाइवा ने ऑटो को टक्कर मार दी। इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। हादसा जिले के तोरपा थाना क्षेत्र के डांड टोली गांव के पास मंगलवार की रात हुई। घटना की सूचना पर तोरपा थाना की पुलिस मौके पर पहुंचकर जेसीबी की मदद से हाइवा और ऑटो में फंसे शवों को बाहर निकाला।

ऑटो के टायर फटने से हुआ हादसा

जानकारी के मुताबिक, रांची से एक हाइवा अवैध बालू लोड करने तोरपा जा रहा था। इसी दौरान डांड टोली के समीप ऑटो का एक टायर फट गया और वह अनियंत्रित हो गया। विपरीत दिशा से आ रहे हाइवा ने उस ऑटो को अपनी चपेट में ले लिया। इस हादसे में ऑटो में सवार चालक समेत कुल चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि हाइवा के ड्राइवर और खलासी को कोई गंभीर चोट नहीं लगी है। घटना के बाद हाइवा के ड्राइवर समेत उसमें सवार सभी लोग फरार हो गए।

आमजनों की समस्या से रूबरू हुए उपायुक्त

KODERMA : जिले के उपायुक्त आदित्य रंजन ने जनता दरबार में आए फरियादियों की समस्याएं बारी-बारी से सुनी एवं उसके निष्पादन के लिए संबंधित पदाधिकारी को निर्देश दिया. जनता दरबार में जमीन विवाद, दाखिल खारिज, पेंशन व राशन समेत अन्य समस्याओं को लेकर उपस्थित हुए ग्रामीणों की बारी-बारी से उपायुक्त आदित्य रंजन ने समस्या सुनी एवं यथाशीघ्र उनके समस्याओं के निराकरण करने के लिये संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया।

डीएवी के प्राचार्या ने पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

सैनिकों के भरोसे हम घर में चैन की नींद सोते हैं : डॉ. उर्मिला

PHOTON NEWS RAMGARH : डीएवी बरकाकाना में बुधवार को कारगिल विजय दिवस मनाया गया. इस अवसर पर एनसीसी एएनओ संतोष गुप्ता एवं एनसीसी कैडेट्स ने मुख्य अतिथि प्राचार्या सह क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. उर्मिला सिंह को शहीद बेदी अमर जवान ज्योति तक लाया. जहां प्राचार्या द्वारा पुष्प चक्र अर्पित किया गया। इसके बाद विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने बारी-बारी पुष्प चक्र अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में 10वीं की छात्रा आकांक्षा रानी ने मंच संचालन किया. वहीं 10वीं कक्षा की ही मनस्वी ने कारगिल विजय दिवस पर वक्तव्य दिया।'आज जीत की रात, पहरुए सावधान रहना' वहीं, तनीषा ने स्वरचित कविता पाठ किया. कारगिल युद्ध में शहीद हुए भारत माता के वीर सपूतों के त्याग को वर्ग दशम की निधि शर्मा, देव आर्यन, शिफा फरीदी और मयंक ने नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया। साथ ही एनसीसी के कैडेट्स ने एनसीसी गान गाया। इस अवसर पर प्राचार्या डॉ. उर्मिला सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम सभी देशवासी जिनके भरोसे घरों में चौन की नींद सोते हैं, उनके त्याग को कभी नहीं भूलना चाहिए। कारगिल में 60 दिनों तक चला युद्ध, हमें अपने दुश्मनों से लोहा लेने के लिए सदैव तैयार रहने की शिक्षा देता है। उन्होंने कवि गिरिजा कुमार माथुर की लिखी कविता , "आज जीत की रात, पहरुए सावधान रहना, खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना..." का वाचन भी किया। प्राचार्या ने आगे कहा कि हमारे देश का भविष्य आप बच्चों के हाथ में है। इसे सुरक्षित रखने के लिए आपमें देश प्रेम की भावना होनी चाहिए। साथ ही अधिकार से पहले कर्तव्य के बारे में सोचना चाहिए।

BRIEF NEWS

डेंगू के 63 डेंगू संदिग्ध मरीज के नमूने की हुई जाँच, 7 पॉजिटिव

JAMSHEDPUR : शहर व इसे सटे बस्तियों में डेंगू धीरे धीरे पैर पसार रहा है। बुधवार को भी 7 डेंगू के मरीज पाए गए। जिसमें 2 लोग मेडिकल के छात्र है। इससे पहले जिला सर्विलेंस विभाग इस पर नजर बनाये हुआ है। विभाग द्वारा शहर के 63 डेंगू के संदिग्ध मरीज के नमूना लिया। संदिग्ध मरीजों का नमूना जांच के लिए एमजीएम मेडिकल कॉलेज भेजा गया था। डेंगू पॉजिटिव मरीजों में दो मेडिकल छात्र समेत बागबेड़ा, टेल्को, कदमा, गोलमुरी व हुरलुंग के एक-एक मरीज शामिल है। सात मरीजों में पांच का इलाज एमजीएम अस्पताल और एक मरीज का टीएमएच तथा एक मरीज को टेल्को के अस्पताल में इलाज चल रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार इस साल पूर्वी सिंहभूम में डेंगू के 608 संदिग्ध की जांच हो चुकी है। जिसमें 63 लोग डेंगू पॉजिटिव पाए गए। जिले में बुधवार को चार और संदिग्ध मरीजों का नमूना जांच के लिए एमजीएम मेडिकल कॉलेज भेजा गया। चारों संदिग्ध नमूना के लोग आजादनगर, जाकिर नगर, गोविंदपुर, आस्था सेंटर, के रहने वाले है। सभी इलाज के लिए एमजीएम और टेल्को के अस्पताल में भर्ती है।

जेआरडी टाटा की 119वीं जयंती पर वॉकथन 29 जुलाई को

JAMSHEDPUR : भारत रत्न जेआरडी टाटा की 119 वीं जयंती के अवसर पर टाटा स्टील द्वारा जेआरडी स्पोर्ट्स कंप्लेक्स में 29 जुलाई को सुबह साढ़े छह बजे से वॉकथन का आयोजन किया गया है। इसमें हर उम्र के लोग शामिल हो सकते है। वॉकथन में शामिल होने के लिए 29 जुलाई को जेआरडी स्पोर्ट्स कंप्लेक्स में ही निबंधन कराया जा सकता है। इस संबंध में टाटा स्टील कॉरपोरेट कम्युनिकेशन द्वारा बताया गया कि जेआरडी टाटा की जयंती के अवसर पर प्रत्येक वर्ष जमशेदपुर के नागरिकों के लिए एक वॉकथन का आयोजन किया जाता है। जिसमें हर उम्र के लोग शामिल हो सकते है। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

शांति जूनियर्स प्री स्कूल में मना करगिल विजय दिवस

CHAIBASA : शांति जूनियर्स प्री स्कूल में बुधवार को करगिल विजय दिवस मनाया गया। स्कूल परिसर में बच्चों एवं शिक्षिकाओं रसिका सोरेन, अंजलि मिश्रा, स्वाति सोनकर एवं परमिंदर कौर खोखर ने मिलकर अशोक प्रजाति के पांच पौधे लगाए व 24वें करगिल दिवस को यादगार बनाया। ये पौधे जैसे-जैसे बड़े होते जाएंगे तो बच्चों को करगिल विजय दिवस की याद दिलाते रहेंगे। स्कूल की सेंटर हेड परमिंदर कौर खोखर ने बच्चों को बताया कि भारतीय फौज के वीर जवानों ने लगातार साठ दिनों तक पाकिस्तान के सैनिकों के साथ युद्ध के उपरांत चौबीस मार्च 1999 में करगिल पहाड़ियों पर जीत हासिल करके वहां भारत का तिरंगा फहराया था। इसीलिए भारत में हर वर्ष 24 मार्च को करगिल विजय दिवस मनाया जाता है। धन्यवाद ज्ञापन रौनक सिंह खोखर ने किया।

किस्तों में भूमि मूल्य भुगतान को कबिनेट में मंजूरी देने पर लउभा ने जताई खुशी

ADITYAPUR : झारखंड कैबिनेट द्वारा झारखंड औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार विनियमन, 2016 में संशोधित पांच वर्षों में 10 बराबर किस्तों में भूमि मूल्य भुगतान करने संबंधी विधेयक को मंजूरी दी गई है। इस पर लघु उद्योग भारती (लउभा) के पूर्व जिला महासचिव समीर सिंह ने खुशी जताई है और इसके लिए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बधाई दी है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं उद्योग विभाग द्वारा लिया गया यह बड़ा निर्णय उद्योग हित में है। इसी महीने ऑटो क्लस्टर की बैठक में लघु उद्योग भारती की ओर से उन्होंने यह प्रस्ताव के संबंध में उद्योग सचिव को एक ज्ञापन सौंपा था। उद्योग हित में मांग पूरी करने के लिए मुख्यमंत्री एवं उद्योग विभाग धन्यवाद के पात्र हैं। इस विधेयक के पारित होने से राज्य के हजारों सूक्ष्म एवं लघु उद्यमियों को लाभ पहुंचेगा।

DBMS ने फीस नहीं जमा करने पर 3 छात्रों को स्कूल से निकाला, अभिभावक संघ ने दिया धरना

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : झारखंड के जमशेदपुर के कदमा स्थित डीबीएमएस हाई स्कूल प्रबंधन ने 3 छात्रों को फीस जमा नहीं करने पर स्कूल से बाहर निकाल दिया है। निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार कानून के तहत गरीब व अभिर्वंचित(बीपीएल) वर्ग के अंतर्गत इन छात्रों ने पूर्व में दाखिला लिया था। कक्षा आठवीं तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद इन बच्चों ने कक्षा 9वी में प्रवेश लिया। इसके बाद फीस जमा नहीं करने का हवाला देकर स्कूल से इन्हें बाहर कर दिया गया है।

विरोध-प्रदर्शन करते अभिभावक संघ के लोग। ● फोटोन न्यूज

कुछ ऐसा है पूरा मामला : मिली जानकारी के अनुसार स्कूल ने यह कहते हुए इन बच्चों के अभिभावकों से फीस जमा करने को कहा था कि राईट टू एजुकेशन के तहत गरीब व अभिर्वंचित वर्ग के बच्चों को सिर्फ 8वीं तक की निःशुल्क शिक्षा देने का प्रावधान है। ऐसे में 9वीं कक्षा में सामान्य बच्चों की तरह फीस जमा करना होगा। जब इन बच्चों के अभिभावकों ने फीस नहीं जमा किया तो उन्हें निकाल दिया गया। विदित हो कि ये सभी बच्चे इंट्री कक्षा से ही डीबीएमएस हाईस्कूल के छात्र रहे हैं और वहीं से 8वीं की परीक्षा पास कर 9वीं कक्षा में पहुंचे हैं। स्कूल ने 8वीं कक्षा तक तो निःशुल्क शिक्षा दी लेकिन जैसे ही बच्चे 9वीं कक्षा में गए तो प्रबंधन फीस की मांग करने लगा।

अभिभावक संघ ने किया विरोध प्रदर्शन : स्कूल प्रबंधन द्वारा 9वीं कक्षा के इन बच्चों को क्लास करने से रोके जाने के विरोध में जमशेदपुर अभिभावक संघ ने बुधवार को विरोध प्रदर्शन कर किया। संघ के नेतृत्व में बड़ी संख्या में अभिभावक जिला शिक्षा विभाग के समक्ष इकट्ठा हुए और विरोध प्रदर्शन किया। इसके बाद अभिभावकों ने जिला शिक्षा पदाधिकारी एवं जिला शिक्षा अधीक्षक पूर्वी सिंहभूम को ज्ञापन सौंपते हुए यह मांग की कि (2023-24) शुरूआत से अभिर्वंचित वर्ग के बच्चों से लगातार फीस की मांग की जाती रही है, (ये बच्चे इस स्कूल की कक्षा 8 तक निःशुल्क शिक्षा पाते रहे है) जबकि इन बच्चों के अभिभावकों की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वे फीस दे पाएं।इसके बाद स्कूल प्रबंधन ने 22 जुलाई से पिंकी कुमारी, पुष्पा तंतुबाई व कृष्णा बोदरा के स्कूल आने पर रोक लगा दी है। विभाग इसमें हस्तक्षेप करते हुए इन बच्चों की निःशुल्क शिक्षा जारी कराए।

नई शिक्षा नीति में निःशुल्क शिक्षा दिलाने का है प्रावधान : अभिभावक संघ ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को भारत सरकार द्वारा पूरे देश में लागू कर दिया है। इस कानून का लाभ जमशेदपुर के बच्चों को नहीं मिल रहा है क्योंकि इस कानून के कंडिका 8-8 में अभिर्वंचित एवं कमजोर वर्ग के बच्चों को कक्षा 12 वी तक निःशुल्क शिक्षा देने का प्रावधान है।

कारगिल विजय दिवस पर जमशेदपुर में निकाली गई सैनिक सम्मान यात्रा, हजारों लोग हुए शामिल

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : हाथों में तिरंगा, जुबां पर भारत माता की जय, वंदेमातरम और वीर शहीद अमर रहे के जयघोष के साथ वीर सैनिकों के अदम्य साहस, शौर्य एवं बलिदान के प्रतीक कारगिल विजय दिवस के अवसर पर संस्था नाम्या स्माइल फाउंडेशन की ओर से बुधवार को निकाली गई सैनिक सम्मान यात्रा में पूरा शहर उमड़ पड़ा।

पद यात्रा में शामिल संस्था के लोग। ● फोटोन न्यूज

संस्था के संस्थापक सह पूर्व विधायक कुणाल षाड़ंगी की अगुवाई में मानगो के गांधी मैदान से प्रारंभ हुई इस यात्रा में हजारों लोगों ने हाथों में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के साथ भाग लिया। इस दौरान पूरा वातावरण देशभक्ति नारों के उद्घोष के साथ गूंज उठा। सैनिक सम्मान यात्रा में हर कोई देशभक्ति की भावना से लबरेज था। सभी लोग हाथ में तिरंगा लिए भारत माता के जयकारे लगा रहे थे। सुबह 10 बजे प्रारंभ हुई इस यात्रा में दो हजार से अधिक मोटरसाइकिल पर सवार होकर युवाओं ने भाग लिया। यात्रा में भारत माता एवं अमर क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की सजीव मनमोहक झांकी आकर्षक का केंद रहे। वहीं, देशभक्ति गीतों पर झूमते युवाओं का उत्साह और जोश देखने लायक था।

देशभक्ति गीतों से पूजा शहर: यात्रा में युवा, महिलाएं, पूर्व सैनिक समेत विभिन्न सामाजिक संगठन एवं अन्य क्षेत्रों से जुड़े लोग बड़ी संख्या में शामिल हुए। यात्रा में ए मेरे वतन के लोगों जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़ियां करतीं हैं बसेरा... यह देश है वीर जवानों का अलबेलों का मस्तानों का.. तेरी मिट्टी में.. जैसे गीतों पर राष्ट्रनायकों के शौर्य का गान होता रहा। यात्रा शहर के जिस मार्ग और चौराहे से गुजरी वहां शामिल देशभक्तों का लोगों ने दिल खोलकर स्वागत किया। कई स्थानों पर सामाजिक संगठनों की ओर से सैनिक सम्मान यात्रा के ऊपर पुष्पवर्षा की गई। तो वहीं, कई सामाजिक संगठनों ने शिविर लगाकर सेवा प्रदान की। गोलमुरी स्थित शहीद स्थल पर माल्यार्पण एवं नमन के पश्चात यात्रा का विधिवत समापन हुआ।

सेवा ही लक्ष्य ने जर्जर सड़कों के अविलंब निर्माण हेतु निकाली गई पदयात्रा, उपायुक्त को सौंपा ज्ञापन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : सामाजिक संस्था सेवा ही लक्ष्य की ओर से परसुडीह, हरहरगुट्ठु, बेड़ाढीपा, रानीडीह की जर्जर सड़क को अविलंब निर्माण हेतु पदयात्रा निकाली गई। पद यात्रा संस्था के अध्यक्ष मानिक मलिक और जिला परिषद सह संस्था की महा सचिव पूर्णिमा मालिक के नेतृत्व में निकाली गई। पदयात्रा आम बागान से होकर उपायुक्त कार्यालय तक पहुंचा। पदयात्रा में काफी संख्या में महिलाएं शामिल थी। इसके बाद पदयात्रा करते हुए उपायुक्त कार्यालय मैं एक ज्ञापन सौंपा गया। संस्था ने बताया ज्ञापन के माध्यम से बताया कि परसुडीह, हरहरगुट्ठु, बेड़ाढीपा, रानीडीह की सड़के जर्जर हो चुकी है। जिसके कारण आम जनता एवं राहगीरों को आवागमन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए सेवा ही लक्ष्य संस्था द्वारा 4 चरणों में सड़क निर्माण के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया गया था। जिसमें क्षेत्र के निवासियों द्वारा हस्ताक्षर का समर्थन किया गया।

करीम सिटी कॉलेज में विश्वविद्यालय स्तरीय युवा संवाद प्रतियोगिता आयोजित

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : करीम सिटी कॉलेज के एनएसएस इकाई द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय युवा संवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का थीम इंडिया@2040 रखा गया। इसमें प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागियों ने आने वाले वर्षों में भारत के प्रति उनके दृष्टिकोण को साझा किया।

। ● फोटोन न्यूज

इस प्रतियोगिता में अपना विचार प्रस्तुत करने के लिए दो विषयों को दिया गया- नागरिकों में कर्तव्य की भावना एवं एकता और एकजुटता की ताकत शामिल थी। प्रतिभागियों को अपना विचार रखने के लिए। अधिकतम पांच मिनट का समय किया गया। इस अवसर पर निर्णायक मंडली में जनसंचार विभाग की शिक्षिका डॉक्टर रशमी कुमारी एवं भूगोल विभाग की शिक्षिका डॉक्टर फरजाना अंजुम एवं शिक्षक डॉ. पसारुल इस्लाम उपस्थित रहे। साथ ही एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ आले अली और एनएसएस समन्वयक सैयद साजिद परवेज मौजूद थे।

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान स्नेहा शर्मा, द्वितीय स्थान मोबीना बेगम, तृतीय स्थान सौरव सिन्हा को मिला। सांत्वना पुरस्कार के लिए वर्षा चौधरी को चुना गया। अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापन एनएसएस समन्वयक सैयद साजिद परवेज ने किया और कार्यक्रम का संचालन एनएसएस स्वयंसेवक मानव घोष ने किया।

आयकर रिटर्न भरने की अंतिम तिथि 31 जुलाई

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए इन्कम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने की अंतिम तारीख 31 जुलाई है। सरकार ने साफ कर दिया है कि इन्कम टैक्स रिटर्न दाखिल करने की तिथि को आगे नहीं बढ़ाया जाएगा। इसलिए इन्कम टैक्स के दायरे में आनेवाले इस काम को जल्द से जल्द निपटा लें। क्योंकि अगर इस कार्य को तय समय-सीमा से पहले पूरा नहीं किया गया, तो बाद में इस के लिए पेनल्टी (जुर्माना) देनी पड़ सकती है। हालांकि 31 जुलाई तक आईटीआर दाखिल नहीं करनेवाले व्यक्ति को मौका तो मिलेगा, लेकिन वित्तीय नुकसान झेलना पड़ सकता है। विलंब से रिटर्न दाखिल करने का विकल्प आगामी 31 दिसंबर 2023 तक उपलब्ध है, लेकिन इसके लिए टैक्स के साथ जुमार्ना का भी भुगतान करना पड़ेगा।

सदर प्रखंड के प्रधान शिक्षक-शिक्षिकाओं की मासिक गुरू गोष्ठी संपन्न

शिक्षकों को सही LOCATION के अनुसार BIOMETRIC उपस्थिति दर्ज करने का निर्देश

PHOTON NEWS CHAIBASA : सदर प्रखंड के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं उत्क्रमित मध्य विद्यालयों के प्रधान शिक्षक-शिक्षिकाओं की मासिक गुरु गोष्ठी श्रद्धानंद बालिका मध्य विद्यालय में बीइइओ प्रमिला कुमारी की अध्यक्षता में हुई। इसमें मुख्य रूप से बच्चों की बैंक खाता खुलवाना, सत्र 2023-24 के लिए छात्रवृत्ति का लक्ष्य संबंधी प्रतिवेदन तैयार करने, यू-डाइस प्लस में बच्चों का प्रामाणिकरण, जाति प्रमाण-पत्र व जन्म मृत्यु प्रमाण-पत्र संबंधी प्रतिवेदन तैयार करने व एमडीएम एसएमएस की स्थिति की समीक्षा एवं रुआर अंतर्गत नामांकन की स्थिति पर चर्चा हुई।

मासिक गुरु गोष्ठी में उपस्थित बीइइओ व शिक्षक-शिक्षिका। ● फोटोन न्यूज

बैंक खाता खुलवाने को लेकर पोस्ट ऑफिस के पोस्ट मास्टर अनंत कुमार पति ने जानकारी दी कि बच्चों का खाता खुलवाने के लिए आधार कार्ड और पैन कार्ड का फोटो कोपी, मोबाइल नंबर एवं आवेदक का फोटो के साथ आएं। उन्होंने विस्तार से पोस्ट ऑफिस के अन्य सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। वहीं बीपीओ पार्थ सारथी राय ने जानकारी बताया कि विद्यालयों में बच्चों का ड्रॉप आउट रोकने के लिए प्रयास कार्यक्रम का क्रियान्वयन जारी रखना है। ड्रॉप आउट हुए बच्चों को रुआर कार्यक्रम के तहत पुनर्नामांकन करना है। इसके अलावा शिक्षकों को सही लोकेशन के अनुसार बायोमैट्रिक उपस्थिति दर्ज करने का निर्देश दिया गया।

गोष्ठी में उपेंद्र सिंह, कृष्णा देवगम, रामानुज सिंह, संगीता सावैयां, अनिता सोय, अनिल कुमार, मालती सिंकु, नीलिमा कंडुलना, परमानंद पान, सुजीत विश्वकर्मा, अनुराग वर्मा, दीपक कटियार आदि समेत सीआरपी सुब्रतचंद्र त्रिपाठी, शैलेश वर्मा, संजय देवगम, ममता बानरा, नीलम सिन्हा, प्रतिमा कालुंडिया व एमआईएस कुणाल गौतम, मिनिमय राय समेत अन्य उपस्थित थे।

बहरागोड़ा : बरसोल पुलिस ने फरार अभियुक्त के घर चिपकाया इश्तेहार

PHOTON NEWS BAHRAGORA: बहरागोड़ा प्रखंड के बरसोल थाना क्षेत्र का कांड संख्या 44/21 के तहत बुधवार को बरसोल पुलिस टीम द्वारा दो आरोपियों के घर पर इश्तेहार चिपका गया। ओड़िशा जाजपुर निवासी चिरंजीवी दास पिता महेश दास तथा राहुल दास पिता काली दास के घर ओड़िसा के कोराई पुलिस के सहयोग से बरसोल पुलिस ने न्यायालय द्वारा जारी इश्तेहार चिपका कर न्यायालय में समर्पण करने का आदेश दिया गया है।

फरार अभियुक्त के घर इश्तेहार चिपकाती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

इस दौरान पुलिस ने आरोपी के परिजनों को आत्मसमर्पण कराने के लिए समझाया। वहीं पुलिस ने गांव में डुगडुगी बजाकर दोनों आरोपी को पकड़वाने की अपील किया है। बरसोल थाना प्रभारी रामदयाल उरांव ने बताया कि बरसोल थाना में चिरंजीवी व राहुल के विरुद्ध लूट तथा मारपीट के आरोप में 44/2021 में कांड अंकित किया गया है। तब से वह फरार चल रहा है। माननीय न्यायालय द्वारा जारी उसके आत्मसमर्पण करने के लिए उसके घर पर नोटिस चिपका कर उनके परिजनों और ग्रामीणों को आत्मसमर्पण कराने की बात कही गई। इसके बाद भी उसके समर्पण नहीं करने पर न्यायालय के आदेश पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। इस मौके पुलिस अवर निरीक्षक रविकांत प्रसाद ,रामदेव यादव तथा सशस्त्र बल के जवान मौजूद थे।

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की ओर से किया गया श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

KARGIL युद्ध के वीर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद पूर्वी सिंहभूम की ओर से बुधवार को कारगिल युद्ध के वीर शहीदों को गोलमुरी स्थित पुलिस लाइन वार मेमोरियल पर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 220 फील्ड रेजीमेंट के कमांडिंग ऑफिसर के प्रतिनिधि के रूप में लेफ्टिनेंट मुकेश चौधरी, हवलदार अमरनाथ हवलदार, एनबी नायक, गिरिधारन वी लांस नायक, पवन सिंह लांस नायक, आर सतीश शामिल हुए।

सर्वप्रथम सेना के ऑफीसर्स ने कारगिल के शहीदों को रीथ चढ़ाकर सलामी दी। उसके उपरांत उपस्थित सभी पूर्व सैनिकों ने अपना श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इस अवसर पर परिषद के जिला अध्यक्ष बृज किशोर सिंह ने

श्रद्धांजलि सभा में शामिल पूर्व सैनिक। ● फोटोन न्यूज

कारगिल विजय दिवस की महत्व एवं उन दिनों भारतीय सेना के पराक्रम के बारे में जानकारी दी। सेना के प्रतिनिधियों को पूर्व सैनिक सेवा परिषद पूर्वी सिंहभूम द्वारा पुष्पगुच्छ देकर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। जबकि यूनिट के अधिकारी ने जिलाध्यक्ष बृजकिशोर सिंह सचिव दिनेश सिंह एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष हवलदार रमेश सिंह को पुष्प गुच्छ देकर उनके अच्छे कार्यों के लिये सम्मानित किया। पूर्व सैनिकों ने विजय दिवस की खुशी में लड्डू बांटे। सेना के प्रतिनिधि लेफ्टिनेंट मुकेश चौधरी ने कहा कि तीनों सेना से सेवानिवृत्त सैनिकों को एक साथ देख कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। यह आपकी एकता और अनुशासन को दशार्ता है। आप सबको जब भी हम सबों की आवश्यकता होगी निःसंकोच याद करें। हमारी यूनिट यहां रह रहे सभी पूर्व सैनिकों एवं वीर नारियों को हर संभव सहयोग करेगी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से राजीव रंजन बलजीत सिंह, विजय शंकर पांडे, राधेश्याम, चंद्रमा सिंह ,अशोक श्रीवास्तव, ललन शाह , बीके त्रिपाठी, राजेश कुमार, अजय केसरी, देवेंद्र त्रिपाठी, हरेंद्र शर्मा, डीएस तिवारी, अर्जुन ठाकुर, मिथिलेश सिंह, महेश प्रसाद, संजय पाठक ,मुरारी सिंह ,विद्या सिंह, अजय कुमार, रामाशंकर सिंह, अजय सिंह, रामजी सिंह आदि उपस्थित थे।

चेंबर ऑफ कॉमर्स ने झारखंड कर समाधान योजना के छह माह बढ़ाये जाने पर जताया हर्ष

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : झारखंड सरकार की कर समाधान योजना को 6 माह के लिए बढ़ाए जाने पर सिंहभूम चेंबर ऑफ कॉमर्स ने खुशी जाहिर की है। चैंबर के अध्यक्ष विजय आनंद मूनका एवं मानद महासचिव मानव केडिया ने बताया कि जनवरी माह में पुराने राज्य कर के बकाया मामलों को निपटाने के लिए झारखंड सरकार एक समाधान योजना लेकर आई थी। जिसकी अवधि 30:06.2023 को समाप्त हो गई थी। लेकिन चैंबर लगातार यह प्रयास कर रहा था की इस योजना को आगे बढ़ाया जाए ताकि और अधिक व्यापारियों को इसका लाभ मिल सके।

राज्य भर के व्यापारियों की मांग को मानते हुए सरकार ने बुधवार इस विषय पर एक अधिसूचना जारी करते हुए 6 माह के लिए कर समाधान योजना को बढ़ा दिया है। सचिव वित्त एवं कराधान पीयूष कुमार ने बताया कि इसमें कोई दो राय नहीं की कर समाधान योजना के तहत राज्य भर के हजारों व्यवसायियों को अबतक लाभ मिला है। किंतु कई ऐसे मामले हैं जो अपील या रिवीजन स्तर पर अभी भी लंबित हैं। विभाग को तुरंत ऐसे मामलों में निर्णय लेना चाहिए ताकि व्यापारी कर समाधान का लाभ उठा सकें। कई ऐसे मामले भी हैं जो पुनः आकलन के लिए महीनों से राज्य कर विभाग के विभिन्न अफसरों के स्तर पर लंबित हैं। ऐसे मामलों को संज्ञान में लेते हुए तुरंत इनपर निर्णय लिया जाना चाहिए।

डोभाल की खरी-खरी

कारगिल विजय दिवस से ठीक पहले जोहानिसबर्ग में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के विदेश मामलों के आयोग के निदेशक वांग यी से राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने जिस बेलाग तरीके से भारत के भरोसा दरकने की बात कही, उसके गहरे अर्थ हैं। खासकर तब, जब साल 2019 के बाद सीमा संबंधी मसलों पर दोनों देशों के विशेष प्रतिनिधियों की यह पहली बैठक हो। गौरतलब है, मई 2020 में जिस समय गलवान की घटना घटी थी, वांग यी चीन के विदेश मंत्री हुआ करते थे, और इस वक्त वह न सिर्फ वहां के शक्तिशाली पोलित ब्यूरो के सदस्य हैं, बल्कि राष्ट्रपति शी जिनपिंग के करीबी भी माने जाते हैं। इसलिए डोभाल की इस दोटूक बात से बीजिंग को एहसास हो गया होगा कि सरहद पर तनाव पैदा करके वह नई दिल्ली को सौदेबाजी के लिए बाध्य नहीं कर सकता! डोभाल से पूर्व भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर भी अनेक मौकों पर स्पष्ट कर चुके हैं कि जब तक सीमा पर शांतिपूर्ण संबंध न होंगे, तब तक दूसरी तमाम बातें मायने नहीं रखतीं। चीन हमेशा से यही चाहता रहा है कि सीमा संबंधी मसले को पीछे रखकर बाकी विषयों पर, खासकर कारोबारी रिश्तों के विस्तारीकरण की दिशा में आगे बढ़ा जाए, मगर भारत के सख्त रुख का ही नतीजा है कि उसके रवैये में कुछ नरमी दिखी है। मगर यह कितनी वास्तविक है, इसकी परख उसके द्वारा उठाए जाने वाले कदमों से होगी। क्या वह वास्तविक नियंत्रण रेखा पर मई 2020 से पहले की स्थिति कबूलने को तैयार है? दरअसल, कोविड महामारी के समय से ही चीनी अर्थव्यवस्था गंभीर मुश्किलों का सामना कर रही है। अब यह राज की बात नहीं कि अमेरिकी तनातनी के कारण उसके यहां से निवेशकों का पलायन हुआ है और कई चीनी कंपनियों को पश्चिमी देशों में तरह-तरह के प्रतिबंधों से गुजरना पड़ रहा है। अभी-अभी भारत सरकार ने इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली उसकी एक कंपनी के 8,200 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव को ठुकराया है। खबर यह भी है कि घरेलू मांग में कमजोरी के कारण चीन की अर्थव्यवस्था के सामने नए किस्म का संकट पैदा हो गया है और पोलित ब्यूरो ने इससे निपटने व आंतरिक स्तर पर मांग को मजबूती देने के लिए नीतिगत प्रोत्साहन का रास्ता सुझाया है। भारत की मजबूत होती आर्थिक स्थिति व वैश्विक मंचों पर उसके बढ़ते महत्व को स्वीकारने में बीजिंग को चाहे जितनी हिचक हो, वह इस असलियत की अनदेखी नहीं कर सकता। इसलिए वह चाह रहा है कि द्विपक्षीय रिश्तों में जमी बर्फ को पिघलाने का रास्ता निकाला जाए। भारत तो हमेशा से ही पड़ोसी देशों से बेहतर संबंधों का हिमायती रहा है, मगर चीन और पाकिस्तान से उसे बार-बार निराशा ही हाथ लगी है। यह सही है कि भूगोल पड़ोसी चुनने की इजाजत नहीं देता, मगर ताल्लुकात साफ नीयत पर ही टिकते हैं। शी जिनपिंग यदि वाकई विश्वास-बहाली को लेकर गंभीर हैं, तो बीजिंग को खुले दिल व ठोस कार्यक्रमों के जरिये सीमा-विवाद सुलझाने की पहल करनी चाहिए।

लोकतंत्र पर हमला

इस्राइली संसद ने सोमवार को वह रीजनेबलनेस बिल पास कर दिया, जिसे कथित न्यायिक सुधार का पहला चरण बताया जा रहा है। यह बिल नेतन्याहू सरकार की जुडिशरी को कमजोर करने की विस्तृत योजना का हिस्सा है और इसके खिलाफ वहां पिछले करीब छह महीने से व्यापक प्रदर्शन हो रहे हैं। संसद में बिल पास किए जाते समय विपक्ष मौजूद नहीं था, इसीलिए 64-0 से पास हो गया। लेकिन संसद के बाहर सड़कों पर उस समय भी हजारों लोग प्रदर्शन कर रहे थे। हालांकि नेतन्याहू सरकार इस बिल को जुडिशरी पर हमला नहीं मानती। उसके मुताबिक, यह देश के अंदर सत्ता समीकरण को फिर से संतुलित करने की कोशिश है। लेकिन इसमें दो राय नहीं कि पावर इक्वेशन को रीबैलेंस करने के नाम पर सरकार ने जुडिशरी के अधिकार कम किए हैं। इस बिल के कानून बनने के बाद न्यायपालिका को सरकार के फैसलों की समीक्षा कर-के उन्हें अवैध घोषित करने का अधिकार नहीं रह जाएगा। जाहिर तौर पर यह एक निर्वाचित सरकार द्वारा देश के लोकतंत्र को कमजोर करने का ऐसा मामला है, जिसे दुनिया के तमाम लोकतांत्रिक देशों और समाजों के लिए चेतावनी के रूप में लिया जाना चाहिए। किसी जमाने में वामपंथी विचारधारा को लोकतंत्र के लिए एक खतरे के रूप में देखा जाता था। लेकिन आज दुनिया के कई देशों में दक्षिणपंथ की तेजी से उभरती प्रवृत्तियां लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए खतरा बनती दिख रही हैं। ऐसे में इसे हलके में नहीं लिया जा सकता। यही वजह है कि इस्राइल के सबसे करीबी देशों में गिने जाने वाले अमेरिका ने भी उसे ऐसे विधेयकों पर जल्दबाजी न करने और आम सहमति बनाने का सुझाव दिया था। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, नेतन्याहू को भेजे संदेश में यहां तक कह चुके हैं कि इन बिलों को पारित करने पर जोर देकर उनकी सरकार दोनों देशों के रिश्ते को दांव पर लगा रही है। लेकिन खुद भी भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे नेतन्याहू ने सभी सुझावों को दरकिनार करते हुए जुडिशरी के पर कतरने का अपना अजेंडा लागू करना शुरू कर दिया है। ऐसे में अब पहले तो यह देखना होगा कि इस्राइल में इसके किस तरह के नतीजे सामने आते हैं। इसे जहां सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने की बात कही जा रही है वहीं इसके खिलाफ व्यापक हड़ताल की भी चेतावनी दी जा रही है।

विकराल समस्या बनता लचर शहरी ढांचा

ANALYSIS

✍ तरुण गुप्त

लचर बुनियादी ढांचे और जर्जर स्थानीय निकायों की समस्या बहुत विकराल हो चुकी है। इनकी निंदा को लेकर एक पत्रकार के रूप में हमारे समक्ष एक चुनौती यह भी उत्पन्न हो गई है कि ऐसी आलोचना की अभिव्यक्ति में नयापन कैसे लाएं। इस साल भी मानसून को लेकर हमारा अनुभव पिछले वर्ष से अलग नहीं रहा। हमारे शहरों की भयावह स्थिति और मानसून से निपटने की प्रशासन की तैयारी ने समान रूप से निराश किया। अपने स्पष्टीकरण में प्रशासन ने अप्रत्याशित एवं एकमुश्त वर्षा जैसे कारण गिनाए। इन बहानों से अवश्य ही बाज आना चाहिए। अप्रत्याशित शब्द तो इतने अतिशय रूप से उपयोग होने लगा है कि अपना अर्थ खोता जा रहा है। हर साल रिकार्ड टूट रहे हैं। इसे व्यापक अराजकता के बचाव से अधिक सांख्यिकीय आंकड़ेबाजी के रूप में देखना चाहिए। जहां तक एकमुश्त बारिश की बात है तो यह निष्कर्ष निकालने के लिए आपको कोई जलवायु विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं कि वैश्विक तापवृद्धि के कारण समय के साथ प्रतिकूल मौसमी परिघटनाओं की आवृत्ति बढ़ती जा रही है। पूरी दुनिया में लोग इससे भलीभांति परिचित हैं कि उन्हें भीषण ठंड, झुलसाने वाली गर्मी और अतिवृष्टि जैसी स्थितियों के लिए स्वयं को तैयार रखना होगा। सवाल यही है कि हमारी जिम्मेदार संस्थाएं इसके लिए कितनी तैयार हैं? आखिर भारतीय शहर कुछ ही घंटों की बारिश में क्यों अव्यवस्था से कराहने लगते हैं?

मानसून के दौरान हर साल हमारे शहरों में अव्यवस्था की कहानी बहुत आम हो गई है। यह बात नीति-नियंताओं को पता नहीं अब किस भाषा में समझानी होगी, क्योंकि अतीत से कोई सीख या सबक लिया ही नहीं जा रहा। इसी कारण हमारे शहर जरा सी बारिश में पानी से लबालब हो जाते हैं। उनमें जलजमाव, ट्रैफिक जाम, सड़कों का धंस जाना, करंट दौड़ जाने से लेकर जानमाल की भारी क्षति होती है। विडंबना यह है कि ऐसी घटनाएं इतनी आम हो गई हैं कि ये हमें आक्रोशित अवश्य करती हैं, किंतु आश्चर्यचकित नहीं। लचर बुनियादी ढांचे और जर्जर स्थानीय निकायों की समस्या बहुत विकराल हो चुकी है। इनकी निंदा को लेकर एक पत्रकार के रूप में हमारे समक्ष एक चुनौती यह भी उत्पन्न हो गई है कि ऐसी आलोचना की अभिव्यक्ति में नयापन कैसे लाएं। इस साल भी मानसून को लेकर हमारा अनुभव पिछले वर्ष से अलग नहीं रहा। हमारे शहरों की भयावह स्थिति और मानसून से निपटने की प्रशासन की तैयारी ने समान रूप से निराश किया। अपने स्पष्टीकरण में प्रशासन ने अप्रत्याशित एवं एकमुश्त वर्षा जैसे कारण गिनाए। इन बहानों से अवश्य ही बाज आना चाहिए। अप्रत्याशित शब्द तो इतने अतिशय रूप से उपयोग होने लगा है कि अपना अर्थ खोता जा रहा है। हर साल रिकार्ड टूट रहे हैं। इसे व्यापक अराजकता के बचाव से अधिक सांख्यिकीय आंकड़ेबाजी के रूप में देखना चाहिए। जहां तक एकमुश्त बारिश की बात है तो यह निष्कर्ष निकालने के लिए आपको कोई जलवायु विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं कि वैश्विक तापवृद्धि के कारण समय के साथ प्रतिकूल मौसमी परिघटनाओं की

आवृत्ति बढ़ती जा रही है। पूरी दुनिया में लोग इससे भलीभांति परिचित हैं कि उन्हें भीषण ठंड, झुलसाने वाली गर्मी और अतिवृष्टि जैसी स्थितियों के लिए स्वयं को तैयार रखना होगा। सवाल यही है कि हमारी जिम्मेदार संस्थाएं इसके लिए कितनी तैयार हैं? आखिर भारतीय शहर कुछ ही घंटों की बारिश में क्यों अव्यवस्था से कराहने लगते हैं? इसकी पड़ताल करें तो पाएंगे कि कालबाह्य ड्रेनेज के साथ ही अपर्याप्त सीवेज नेटवर्क इसका सबसे प्रमुख कारण है। अधिकांश शहरों में बरसाती नाले-नालियां सैकड़ों वर्ष पुरानी हैं। इन्हें अंग्रेजों ने तब बनाया था, जब आबादी मौजूदा स्तर से बहुत कम थी। इससे भी बदतर है इन नालियों में बहने वाली सामग्री। इनमें केवल वर्षा का पानी ही नहीं, बल्कि अशोधित सीवेज, हर किस्म का कचरा और औद्योगिक अपशिष्ट भी बहता है। अधिकांश भारतीय शहरों के आधे से भी कम हिस्से में सीवेज कवरेज है। आधे से अधिक घर सीवेज शोधन संयंत्रों से नहीं जुड़े हैं। शहरों के एक बड़े हिस्से में सीवेज लाइन नहीं हैं। कारखानों से निकलने वाले अपशिष्ट के शोधन में लगे संयंत्र स्तरीय नहीं हैं। इस अशोधित सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट को नालियों (या ड्रेन्स) में बहा दिया जाता है, जिस कारण ये अट जाती हैं और फिर जरा सी बारिश में अनियंत्रित होकर बहने लगती हैं। हमारा लक्ष्य रहा है कि इन नालियों को सीधे हमारी पवित्र नदियों में गिरने से पहले शोधन संयंत्रों के साथ जोड़ दिया जाए। जहां यह कार्य अभी भी अपूर्ण है, वहीं हमें यह भी विचार करना चाहिए कि क्या यह प्रयास अपने आप में पर्याप्त है? क्या हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि कचरे से भरी नालियां हमारे शहरों में कई किलोमीटर लंबा विस्तार लेकर बहती रहें? वे पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं, भूजल को दूषित करती हैं और खेती को हानिकारक बनाती हैं। नियमित अंतराल पर दुर्घटनाओं के कारण इनमें गिरने से लोगों को जान भी गंवानी पड़ती है। इन परिस्थितियों में खुले में शौच से मुक्ति का हमारा दावा भी बेमानी लगता है। इसका समाधान खासा सरल, लेकिन स्पष्ट रूप से गायब है। आखिर प्रत्येक घर और प्रतिष्ठान में एक भूमिगत पाइप कनेक्शन सुनिश्चित कर उसे शोधन संयंत्र के साथ जोड़ना कितना कठिन है? केवल शोधित सीवेज ही नालियों में बहे। इन नालियों को ढक दिया जाए ताकि वे किसी बड़े कूड़ेदान की मानिंद बनकर न रह जाएं। इन नालियों को ढकने से इनके ऊपर बनने वाले ढांचे का विभिन्न उत्पादक रूपों में उपयोग कर लाभ भी उठाया जा सकता है। अपने नागरिकों को स्वास्थ्य के अनुकूल जीवन स्थितियां उपलब्ध कराने के लिए विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था संसाधनों की कमी का बहाना नहीं बना सकती। हमें ड्रेनेज नेटवर्क का विस्तार करने के साथ ही उसे अतिक्रमण से मुक्त रखने की आवश्यकता है। हम पर्याप्त वर्षा जल संरक्षण के लक्ष्य से भी अभी काफी दूर हैं। इससे न केवल जलभराव से बचाव में मदद मिलेगी, बल्कि अतिरिक्त पानी इकट्ठा होकर भूजल स्तर को बढ़ाने में भी सहायक होगा। प्रबंधन का एक आधारभूत सिद्धांत है-यूनिटी आफ कमांड यानी एकीकृत कमान, जिसका पालन नहीं किया जाता। ड्रेनेज और सीवेज नेटवर्क का संचालन एवं रखरखाव विभिन्न विभागों एवं मंत्रालयों के बीच फैला है। नगर निगम, विकास प्राधिकरण, सिंचाई विभाग, जल विभाग और कैंटोनमेंट बोर्ड आदि की अपनी भूमिका होती है। विडंबना यही है कि जिम्मेदारी सभी की है, किंतु जवाबदेही किसी की नहीं। ऐसे में, इन संबंधित संगठनों के बीच एक अनुक्रम स्थापित कर उन्हें उसी अनुरूप जवाबदेह बनाना उपयोगी एवं प्रभावी सिद्ध होगा। स्मार्ट सिटी की तो बात रहने ही दीजिए, हमें रहने योग्य शहर मिल जाएं तो वही काफी है। शहरों को रहने योग्य बनाने की राह में आने वाली भारी कठिनाइयों से निपटने के लिए हमें सीवर और ड्रेन्स का प्रभावी उपाय करना ही होगा। यह स्पष्ट है कि हमारे देश में नागरिक सुविधाओं की गुणवत्ता हमारी आर्थिक प्रगति, डिजिटल क्रांति और बुनियादी ढांचे की वृद्धि से मेल नहीं खाती। अपनी अर्थव्यवस्था के आकार के अनुपात में हम स्वच्छता के मानकों पर अपनी क्षमताओं से बहुत पीछे हैं। ऐसे में, नागरिकों से मैं यही कहना चाहूंगा कि इन नारकीय परिस्थितियों को बर्दाश्त करना हमारी मजबूरी हो सकती है।

मणिपुर संघर्ष में औरतें क्यों बनीं निशाना

आज का वक्त विरोधाभासों और क्रूर विडंबनाओं का है। धर्म से हर पल पनाह मांगते लोगों की धर्म का रक्षक बनने की हिमाकत, स्त्री को नारायणी मानने का दम भरने के साथ उसकी अस्मिता को हर पल दांव पर लगाने की क्रूरता, समाज के कमजोर वर्गों की चुनावी हिमायत के साथ ही उनसे अकल्पनीय बर्बरता और इन सब के साथ अपने पर गर्व करने की मूर्खता। शायद इनसे हम पूरी तरह मुक्त तो कभी नहीं थे। ऐसा दोहरापन और आत्म-विरोध हमेशा ही हमारे साथ रहा है। लेकिन इसकी इतनी आत्मघाती स्वीकृति कभी नहीं रही, जितनी आज है। हमारे सामने एक ओर यह खुशनुमा पसमंजर है कि लड़कियां समाजिक जंजीरें काट रही हैं, निषिद्ध दुर्ग फतह कर रही हैं और बेवजह खींची हुई सीमाएं लांघ रही हैं। लेकिन साथ ही हम इस परिदृश्य के भी गवाह हैं कि स्त्रियों का जीवन अभी भी उसी जाल में फंसा हुआ है, जो उनकी अस्मिता और सम्मान के नाम पर उन्हें समाज के हर टकराव में घसीट कर उनकी देह को रणक्षेत्र बना देता है। स्त्री की अस्मिता को उसके शरीर तक सीमित कर देने की बेहूदी सोच युगों-युगों से चली आ रही है। द्वापर युग की मिथकीय द्रौपदी को निर्वस्त्र करने की जो हरकत कौरवों की राजसभा से शुरू हुई थी, वह आज तक जारी है। मणिपुर में भी हाल के दिनों में यही देखने को मिला। आलम यह है कि मामला पुरुषों के बीच का हो, दो जातियों या उप-जातियों के बीच का या धार्मिक समूहों या मात्र दो घरों के बीच का। टकराव में प्रतिद्वंद्वी को हराने मात्र से विजय पूरी नहीं होती। विरोधी पक्ष के कितने ही खजाने आप लूट लें, कितने ही समर्थक कब्जे में कर लें, प्रतिद्वंद्वी की स्त्रियों की देह न लूटी तो सब बेकार, ऐसा मर्दवादी सिद्धांत आमतौर पर चलता है।

राजशाही भी जहां खत्म हुई, वहां बहुत कुछ बदला, लेकिन उसके अनुरूप मर्दवादी या पितृसत्तात्मक सोच नहीं बदली। न सिर्फ बदली नहीं, कभी-कभी यह सोच ज्यादा कट्टर और भयानक हुई क्योंकि स्त्रियों में संघर्षशीलता बढ़ने के साथ मर्दवादी सोच को घबराहट हुई और उसने अपने शिकंजे को ज्यादा पैना करने की कोशिश की। आखिर स्त्री क्यों लपेट ली जाती है किसी भी लड़ाई में? शायद इसलिए कि वह प्रतिद्वंद्वियों का सबसे नाजुक बिंदु है और हर लड़ाई में हम अपने दुश्मन की सबसे नाजुक कड़ी पर हमला करना चाहते हैं। लेकिन स्त्री इतनी नाजुक कड़ी क्यों बना दी जाती है? शायद इसलिए कि हम लगातार स्त्री के लिए ही कहते हैं कि वह हमारे घर (समाज/कौम) की इज्जत है, सम्मान है। हम ऐसा कहते हैं, चाहे अपने घर और कौम में उसे अधिकारों से पूरी तरह वंचित रखें और उसके सम्मान पर हमला भी करते रहें। स्त्री को घर या बिरादरी का सम्मान मानते समय आमतौर पर जो रुख मिलता है, वह हमारे दोहरेपन को दिखाता है। एक तो यह कि हम पुरुष को घर या बिरादरी की इज्जत बिल्कुल भी उस अर्थ में नहीं मानते जिस अर्थ में स्त्री को मानते हैं। स्त्रियों पर पुरुषों के निजत्व के दावे के कारण वे किसी भी द्वंद्व में सबसे नाजुक कड़ी बन जाती हैं और हमलावर का पहला निशाना बनती हैं। अगर पुरुष और स्त्रियां दोनों समान रूप से घर की इज्जत माने जाएं तो शायद स्त्रियों की इस तरह की निशानदेही की एक वजह दूर हो जाए। लेकिन इसका सबसे बड़ा कारण तो वह वर्चस्ववादी प्रवृत्ति है, जिसे हम बचपन से पुरुषत्व के नाम पर पोषित करते हैं और जो स्त्रियों के बढ़ते कदमों से आज बहुत आतंकित है। यह पुरुषत्व संवेदना और सहयोग की क्षमता को तिल-तिल मारता है और स्त्री के शरीर पर पुरुष की ताकत को सेलिब्रेट करता है, पुरुष की बर्बर संवेदनहीन ताकत पर ताली बजाता है। ऐसी सोच में पोषित मर्द के लिए स्त्री देह को कब्जे में करना और उसके ऊपर मर्दानगी के झंडे गाड़ना ही उसके ह्यअसली मर्दह्न होने का प्रमाण है। इस पुरुषकेंद्रित युद्ध को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि मर्दवाद को मजबूत करने में सिर्फ पुरुषों का हाथ नहीं है। पितृसत्ता या मर्दवाद एक सोच है, जो स्त्री और पुरुष को एकदम अलग तरह के इंसानों में विभाजित रखता है। इस विभाजित इंसानियत की सोच के पक्ष में सिर्फ पुरुष ही नहीं, महिलाएं भी रही हैं। क्योंकि पुरुष और महिला दोनों में ये विचार बचपन से ही कूट-कूट कर भर दिए जाते हैं कि आत्म-सम्मान विहीन, साहस-विहीन और हर समय त्याग करने वाली स्त्री ही असल स्त्री होती है और जोर-जबरदस्ती करने वाला, दूसरों को दबा कर रखने वाला और अपनी इच्छा जबरन पूरी करने वाला पुरुष ही असल पुरुष होता है। दोनों ने एक-दूसरे की अपूर्ण और अनुचित छवियों को ही असली छवियां मानने की आदत डाल ली है। इस कारण स्त्री भी पितृसत्ता के इसी ढांचे के समर्थन में उतरती रहती है। नतीजे दुखद और शर्मनाक हैं। धर्म आधारित या जाति आधारित टकराहटों में हमने देखा है कि बहुत बार किस तरह एक वर्ग की औरतों ने दूसरे वर्ग की औरतों की अस्मिता नष्ट करने में पुरुषों का पूरा साथ दिया। सामान लूटा, दूसरे समूह की स्त्रियों को बलात्कारियों के हवाले किया। अपने ही देश में हमें बार-बार ये सब देखने का दुर्भाग्य मिला। तो, पूरा मामला स्त्री बनाम पुरुष का उस तरह से नहीं है, जिस तरह हम अभी तक समझते आए हैं। अस्मिताओं की टकराहट ज्यादा पेचीदा मामला है। विभाजन की राजनीति और इस राजनीति द्वारा अस्मिताओं में गुंथी भावनाओं के दोहन को समझे बिना स्त्री जीवन के चारों ओर बुने जाल को समझना संभव नहीं होगा।

Social Media Corner

सच के हक में...

आप में से जो लोग शोध में रुचि रखते हैं, उन्हें उच्चतर शोध पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। मरीज के लिए दवा प्रीसक्राइब करना जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण नई औषधियां विकसित करना हैं। मुझे उम्मीद है कि यदि आप शोध जारी रखेंगे तो आप चिकित्सा विज्ञान में नई दिशाओं की खोज कर पाएंगे। आप नोबेल पुरस्कार भी प्राप्त कर सकते हैं ।

(राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के ट्विटर अकाउंट से)

कारगिल विजय दिवस भारत के उन अद्भुत पराक्रमियों की शौर्यगाथा को सामने लाता है, जो देशवासियों के लिए सदैव प्रेरणाशक्ति बने रहेंगे। इस विशेष दिवस पर मैं उनका हृदय से नमन और वंदन करता हूं। जय हिंद!

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्विटर अकाउंट से)

अदम्य साहस, शौर्य और वीरता के प्रतीक कारगिल विजय दिवस के अवसर पर देश के अमर वीर जवानों की शहादत को शत-शत नमन।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

दुनिया में कैसे जम सकती है रुपये की धाक

1950 के दशक में, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, बहरीन, ओमान और कतर में लगभग सभी लेन-देन के लिए भारतीय रुपया वैध मुद्रा थी। खाड़ी राजतंत्र पाउंड स्टर्लिंग के साथ रुपये खरीदते थे। 1959 में सोने की तस्करी से जुड़ी चुनौतियों को कम करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (संशोधन) अधिनियम लाया गया। इससे गल्फ रुपया अस्तित्व में आया। इसके तहत आरबीआई द्वारा केवल खाड़ी क्षेत्र के लिए नोट जारी किए गए थे। हालांकि 1966 आते-आते भारत ने अपनी मुद्रा का अवमूल्यन कर दिया, जिससे डॉलर की विनिमय दर 4.76 रुपये से बढ़कर 7.5 रुपये हो गई। इसके कुछ महीने के भीतर कतर और यूएई जैसे देशों ने खाड़ी रुपये को वापस ले लिया और इसे अपनी मुद्राओं से बदल दिया। दो हजार रुपये के नोटों को लेकर उठाए गए हालिया कदम ने विनिमय के माध्यम के रूप में रुपये के प्रति जताए जाने वाले भरोसे को प्रभावित किया है। इस दौरान खाड़ी में भारतीय प्रवासी और पर्यटक प्रभावित हुए हैं क्योंकि मुद्रा विनिमय काउंटरों ने भारतीय रुपये के साथ लेन-देन करने से इनकार कर दिया है। रुपये को लेकर आम धारणा बदल गई है। यहां तक कि 500 रुपये के नोटों को भी कई बार अस्वीकृति झेलनी पड़ी है। हाल में ही विमुद्रीकरण ने भारतीय रुपये में विश्वास को हिला दिया। खासकर भूटान और नेपाल के नागरिकों पर इसका असर पड़ा। इस दौरान नेपाल ने अप्रैल 2018 तक के करीब 950 करोड़ रुपये के अमान्य भारतीय नोट समाप्त कर दिए। भूटान की रॉयल मॉनिटरी अथॉरिटी लगातार अपने नागरिकों को भारतीय मुद्रा रखने के जोखिमों के बारे में चेतावनी देती रहती है। दोनों देशों को फ्इक द्वारा अतिरिक्त नीतिगत बदलावों का डर बना हुआ है। पड़ोसी देशों की चिंताओं पर गौर किए बिना रुपये का अंतरराष्ट्रीयकरण शुरू नहीं हो सकता। फिलहाल भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीयकरण से बहुत दूर है। वैश्विक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपये की दैनिक औसत हिस्सेदारी 1.6 फीसदी और ग्लोबल गुड्स ट्रेड में भारत की हिस्सेदारी 2 फीसदी है। रुपये में व्यापार करने के लिए रूस के साथ चल रही बातचीत की गति खासी सुस्त है। रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि रूसी बैंक मुद्रा के और अधिक अवमूल्यन के जोखिम और स्थानीय मुद्रा सुविधाओं के बारे में व्यापारियों के बीच जागरूकता की कमी को देखते हुए व्यापार के प्रति अनिच्छुक बने हुए हैं। सीधे शब्दों में कहें तो भारतीय रुपये में व्यापार करने की मांग बहुत कम है। हमें युआन का अंतरराष्ट्रीयकरण करने के चीन के उदाहरण से सीखना चाहिए। 2007 तक चीन ने युआन बॉन्ड का बाजार बनाया। खासतौर पर हॉन्गकॉन्ग में वित्तीय संस्थानों को 2009 तक ऐसे बॉन्ड जारी करने की इजाजत दी गई, जिन्हें युआन में भुनाया जाना था। 2008 के बाद चीन ने व्यापार और वाणिज्य के लिए वित्तीय साधन के साथ निवेश और लंबी अवधि में आरक्षित मुद्रा के रूप में युआन के उपयोग को कारगर बनाने के लिए चरणबद्ध दृष्टिकोण अपनाया। इसके तहत उसने सबसे पहले चालू खाता और चुनिंदा निवेश लेनदेन के लिए चीन के बाहर मुद्रा के इस्तेमाल की अनुमति दी। 2009 तक चीन ने ब्राजील, यूके, थाइलैंड और उजबेकिस्तान सरीखे देशों के साथ मुद्रा विनिमय समझौते पर दस्तखत किए। जल्द ही उसने केंद्रीय बैंकों को डेट सिक्योरिटीज में युआन में अतिरिक्त निवेश की अनुमति दी। अनिवासी ऑनशोर और ऑफशोर खातों के बीच मुक्त व्यापार की अनुमति देने के लिए शंघाई मुक्त व्यापार क्षेत्र सितंबर, 2013 में लॉन्च किया गया। ऐसे कई सुधार हैं, जिन्हें रुपये का अंतरराष्ट्रीयकरण करने के लिए आगे बढ़ाया जा सकता है। 2060 तक पूर्ण परिवर्तनीयता के दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ इसे और अधिक परिवर्तनीय बनाया जाना चाहिए। ऐसा करने से विदेशी निवेशक रुपये को आसानी से खरीद और बेच सकेंगे, जिससे इसकी तरलता तो बढ़ेगी ही, यह ज्यादा आकर्षक भी हो जाएगा।

I WANT TO SAY...

THE PHOTON NEWS

राज्य में डाक्टरों की ओर से मेडिकल प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने की मांग लंबे समय से की जाती रही थी। इसके लिए राज्यभर में चिकित्सकों के संगठनों की ओर से सभा, बैठकें की गईं। अभियान चलाए गए। सरकार को ज्ञापन सौंपने का सिलसिला चलता रहा। इसमें कोई दो राय नहीं कि अपने अधिकारों की बात करनी चाहिए। हर किसी को अपनी सुरक्षा चाहिए। इसकी जरूरत भी है। लेकिन जब कर्त्तव्य की बात आती है तो ऐसे-ऐसे मामले सामने आते हैं जिसपर बचाव, लीपापोती और सफाई देने की कोशिशें शुरू हो जाती हैं। हाल में रांची सदर अस्पताल की घटना इसका बड़ा उदाहरण है। एक किशोरवय के लड़के को उसके माता-पिता यह सोचकर सदर अस्पताल ले आए कि यहां उसका समुचित इलाज हो सकेगा। उन्होंने सुन भी रखा था कि इस अस्पताल में इलाज की अच्छी व्यवस्था है। बाद में लड़के को निजी अस्पताल ले जाया गया। वहां सर्जरी की गई और उसकी मौत हो गई। आक्रोश भड़कना स्वाभाविक था। निजी अस्पताल के बाहर आक्रोशित लोगों ने जमकर हंगामा किया। यहां बड़ा सवाल यह है कि जब लड़के को सदर अस्पताल लाया गया तो फिर उसकी सर्जरी के लिए निजी अस्पताल क्यों ले जाया गया। मृतक की मां की ओर से थाने में दर्ज कराई गई प्राथमिकी में आरोप लगाया गया है कि सदर अस्पताल के ओपीडी में ड्यूटी कर रहे डाक्टर ने ही कहा कि लड़के को निजी अस्पताल ले जाएं। प्रथम दृष्टया डाक्टर की कर्त्तव्यहीनता की बात सामने आ रही है। मामले की जांच शुरू कर दी गई है। समझने के लिए काफी है कि इस मामले में कहीं न कहीं कुछ तो गड़बड़ है।

सफदर सुलतान, समाजसेवी कांके।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

BRIEF NEWS

फुटबॉल खिलाड़ियों से सामाजिक कार्यकर्ता मिले, मदद का दिया आश्वासन

ROURKELA : रघुनाथपल्ली विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत सेक्टर 7/17 स्थित अंबेडकर मैदान में सुबह प्रैक्टिस के दौरान आरएसपी में कार्यरत एससी, एसटी और ओबीसी फुटबॉल खिलाड़ियों से सामाजिक कार्यकर्ता खादल सेठी ने मुलाकात की इन सभी फुटबॉल खिलाड़ियों से विभिन्न सुविधाओं और कठिनाइयों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्हें आने वाले दिनों में अच्छा प्रदर्शन कर राउरकेला और आरएसपी का नाम रोशन करने का आह्वान किया। इस दौरानमें पूर्व क्रिकेटर व रणजी खिलाड़ी साबिर हुसैन, कैलाश चंद्र साहू, भगवान सेठी, बीरेंद्र टेंट, देवड़ी राव, मनोज साहू प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

बंडामुंडा से माओवादी के नाम पर ठगी करने का आरोपी गिरफ्तार

ROURKELA : बंडामुंडा इलाके में माओवादी के नाम पर पैसे मांगने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है।गिरफ्तार व्यक्ति मधुसूदन दास के पास से 50 हजार रुपये नकद, 2 मोबाइल फोन और एक स्कूटी जब्त किया गया है। बंडामुंडा डी' सेक्टर में रहने वाले मधुसूदन ने माओवादियों के नाम का इस्तेमाल कर एक स्थानीय दवा दुकान से 6 लाख रुपये की मांग की। दुकानदार ने पैसे देने में असमर्थता जताई।अंत में वे डेढ़ लाख रुपये देने पर राजी हो गये। आज 50 हजार रुपये की पहली किस्त लेते समय बंडामुंडा और बिसरा पुलिस ने मधुसूदन को गिरफ्तार कर कोर्ट चालान कर दिया गया है।

घर में आग लगने से लाखों की संपत्ति खाक

SUNDARGARH : जिले के लहुणीपाड़ा थाना अंतर्गत खूंटगांव गांव में एक घर में आग लगने से लाखों रुपये की संपत्ति जल गई। माना जा रहा है कि आग शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी है। खूंटगांव गांव के बिपिन कुमार सिंह के घर में बीती रात अचानक आग लग गयी।आग फैलने से घर में धुआं भर गया और फर्नीचर भी जल गया। घर के लोग घबराकर बाहर भागे और पड़ोसियों को बुलाया। पड़ोसी और घरवाले मिल के आग बुझाने का प्रयास किया। बणई अग्निशमन विभाग को भी सूचना दी गई। दमकल विभाग के कर्मियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। लेकिन तब तक घर का 70 हिस्सा जलकर राख हो चुका था।

डिस्ट्रिक्ट कराटे चैंपियनशिप 19-20 अगस्त को, जुटेंगे जिले भर से खिलाड़ी

CHAIBASA : स्पोर्टस कराटे एसोसिएशन ऑफ वेस्ट सिंहभूम डिस्ट्रिक्ट कराटे चैंपियनशिप का आयोजन 19 एवं 20 अगस्त को होगा। यह प्रतियोगिता जेकेएआई चाईबासा ब्रांच के मुख्य कराटे प्रशिक्षण केंद्र संत जेवियर कल्याण केंद्र के कम्युनिटी हॉल आयोजित होगी। इस चैंपियनशिप में स्पोर्ट्स कराटे एसोसिएशन ऑफ वेस्ट सिंहभूम से मान्यता प्राप्त संस्थाएं ही भाग लेगी। यह संस्था वेस्ट सिंहभूम डिस्ट्रिक्ट ओलंपिक एसोसिएशन से मान्यता प्राप्त है। इस चैंपियनशिप में जिले भर के लगभग 150 से लेकर 200 कराटेकारों के भाग लेने की संभावनाएं हैं। इसमें सब जूनियर, कैडेट, जूनियर एवं सीनियर कराटेकारों के लिए काता और कुमीते का इवेंट रखा गया है। इस चैंपियनशिप में आठ वर्ष के नीचे से लेकर 18 वर्ष तक के ऊपर तक के बालक-बालिका एवं पुरुष-महिला वर्ग के कराटेकार भाग लेंगे। यह जानकारी स्पोर्ट्स कराटे एसोसिएशन ऑफ वेस्ट सिंहभूम के अध्यक्ष सेंसाई पंकज कुमार सिंह एवं महासचिव नरेश हेस्सा ने दी।

ESTEEM PUBLIC SCHOOL के सीनियर ब्लॉक एवं विज्ञान प्रदर्शनी का उपायुक्त ने किया उद्घाटन

PHOTON NEWS CHAIBASA : इस्टीम पब्लिक स्कूल में बुधवार को सीनियर ब्लॉक का उद्घाटन सह साइंस प्रदर्शनी समारोह का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपायुक्त अनन्य मित्तल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला शिक्षा पदाधिकारी अभय कुमार शील उपस्थित हुए। दोनों अतिथियों समेत विद्यालय के निदेशक और प्राचार्य का तिलक लगाकर बैंडग्रुप के द्वारा स्कॉट कर कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। इसके बाद अतिथियों ने विद्यालय के सीनियर ब्लॉक का उद्घाटन किया। तत्पश्चात विद्यालय के

उद्घाटन के मौके पर उपायुक्त अनन्य मित्तल व उपस्थित अन्य। ● फोटोन न्यूज

चेयरमैन डॉ. मनोज झा ने अतिथियों को पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इसके बाद विधिवत दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम में बच्चों ने अपने गायन, नृत्य और अभिनय के प्रदर्शन से उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। क्लासिकल, सेमीक्लासिकल, लोकनृत्य व नृत्य-नाटिका की प्रस्तुतियों को खूब सराहना मिली। सांस्कृतिक कार्यक्रम के सत्र के बाद उपायुक्त अनन्य मित्तल ने विज्ञान-प्रदर्शनी का उद्घाटन फीता काटकर किया। इसके बाद उपायुक्त ने बच्चों द्वारा तैयार किए गए सभी मॉडल्स का निरीक्षण किया। इसी क्रम में बच्चों से मॉडल्स संबंधित सवाल-जवाब भी किए।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के सत्र 2022-23 के दसवीं बोर्ड टॉपर्स और 12वीं के टॉपर्स को उपायुक्त के द्वारा ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसके बाद प्राचार्य टी कुमार ने सभा को संबोधित करते हुए विद्यालय के स्वरूप, कार्यों तथा उपलब्धियों की जानकारी साझा की।

वहीं उपायुक्त ने अपने संबोधन में प्रत्येक बच्चे व अभिभावकों व शिक्षक-शिक्षिकाओं को विशेष बताया। जिनके आपसी सहयोग से ही सफलता की कहानी अच्छी पढ़ाई, अनुशासन, बेहतर रिजल्ट विद्यालय के द्वारा दिया जा रहा है। वहीं बच्चों की प्रतिभा साइंस एग्जीबिशन सराहनीय है। विद्यालय सफलता की ऊंचाइयों को हासिल करने के प्रति अग्रसर है। उन्होंने बच्चों द्वारा प्रदर्शित मॉडल्स एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मुक्त कंठ से सराहना की। अंत में विद्यालय के निदेशक डॉ. मनोज झा ने धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम का समापन किया।

कुमारडुंगी स्थित डिग्री कॉलेज में मनाया वन महोत्सव, विधायक ने किया पौधारोपण

ग्लोबल वार्मिंग रोकने को पौधारोपण ही एकमात्र विकल्प : निरल पुरती

PHOTON NEWS CHAIBASA : ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए पौधारोपण ही एकमात्र विकल्प है। उक्त बातें कुमारडुंगी स्थित डिग्री कॉलेज में वन विभाग की ओर आयोजित वन महोत्सव कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक निरल पुरती ने कही। विधायक ने कहा कि पौधारोपण ही एकमात्र विकल्प है। जिससे हम पूरे पृथ्वी को सुरक्षित रख सकते हैं। पूरे विश्व में ग्लोबल वार्मिंग का खतरा नजर आ रहा है। बरसात के समय भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया यहां तक कि खाड़ी देशों में भी बाढ़ की समस्या अचानक उत्पन्न हो जाती है।

पौधा रोपण करते विधायक निरल पुरती। ● फोटोन न्यूज

वहीं कई क्षेत्र में भीषण गर्मी के कारण लोगों का जीना मुहाल है। आज विश्व इसी को लेकर चिंतित है कि कैसे ग्लोबल वार्मिंग को रोका जा सके। इसका एकमात्र उपाय वृक्षों का संरक्षण है। भारत देश में भी कई क्षेत्र में बरसात से लोग परेशान हैं। जबकि कई क्षेत्र में सूखा पड़ रहा है। पहले भारत में तीन मौसम गर्मी, बरसात, ठंडा ज्यादा समय के साथ होता था। लेकिन अभी 6 से 8 माह तक लोग गर्मी के एहसास करते हैं। इससे बचने के लिए हर व्यक्ति की जिम्मेदारी बन रही है कि उन्हें एक वर्ष में कम से कम पांच पौधा जरूर लगाना चाहिए।

विधायक ने कहा कि सिर्फ पौधा लगाना ही हमारा मकसद न हो हमें संरक्षित कर उन्हें बड़ा करना भी होगा। अगर साल में हम सभी के प्रयास से हमारे घर, आंगन, खेत, मैदान में 3 से 4 करोड़ पौधा भी लगाए तो 10 सालों में उनका पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलेगा। इसलिए हमें यह संकल्प लेना है कि पौधे लगाने के साथ साथ वर्षा पानी का भी संरक्षण करें। क्योंकि वर्षा का पानी धरती के अंदर जाना बहुत जरूरी है।

मणिपुर हिंसा को लेकर सीपीआई का प्रदर्शन

PHOTON NEWS ROURKELA : सीपीआई ने सेक्टर 19 आमबागान चौक पर दलितों और आदिवासियों के विरोधी मणिपुर सरकार को बर्खास्त करने की मांग को लेकर सीपीआई ने बुधवार को विरोध प्रदर्शन की गईं।

पिछले दो महीनों से मणिपुर में सांप्रदायिक हिंसा के कारण सौ से अधिक लोग मारे गए हैं, 60,000 से अधिक लोग बेघर हो गए हैं। शरणार्थी शिविरों में शरण ली है, और सांप्रदायिक झड़पों में हत्या, उत्पात और लूटपाट की घटनाएं भी हो रही है। राज्य में रोजाना हो रही हिंसा पर काबू पाने में मणिपुर सरकार नाकाम रही है।4 मई को दंगाइयों ने दो आदिवासी महिलाओं को पुलिस हिरासत से उठा के सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में महिलाओं को नग्न कर सड़क पर घुमाया। इसके वाबजूद पुलिस और सरकार चुप है। अपराधियों को नही पकड़ा जा रहा है। महिलाओं की तत्काल शांति और

प्रदर्शन करते सीपीआई के कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

सुरक्षा, भाजपा और संघ परिवार हिंसा नीति और मणिपुर सरकार को तत्काल बर्खास्त करने की मांग को लेकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा विरोध और सभा आयोजित किया गया।

सीपीआई के नेता प्रदोष कुमार मोहंती, सदानंद साहू ने मुख्य भाषण दिया और देशवासियों से दलितों, आदिवासियों और अल्पसंख्यकों के खिलाफ भाजपा और संघ परिवार की हिंसक राजनीति के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान किया। पिछले दो महीने से अधिक समय से मणिपुर में हत्याएं, उत्पात, लूटपाट और घरों को जलाने का सिलसिला जारी है, जबकि देश के प्रधानमंत्री विदेश यात्रा कर रहे हैं, राज्य सरकार उपद्रवियों पर लगाम नही लगा पा रही है। राज्यसरकार और गृह मंत्री चुपचाप बैठे हैं । अगर मणिपुर राज्य में तुरंत शांति बहाल नहीं की गई तो आने वाले दिनों में सीपीआई सड़कों पर उतरेगी ।

कार्यक्रम में कृतिबास नायक, भाग्यधर राउत, दसुरु किसान, पचानन सुना, प्रमोद बेहरा, कार्तिक नायक, भागवत प्रसाद साहू, विनोद बाग प्रमुख शामिल हुए और मणिपुर सरकार को तत्काल बर्खास्त करने की मांग किया गया।

डीएवी गुवा में मनाया गया कारगिल दिवस, वीर शहीदों को किया नमन

PHOTON NEWS CHAIBASA : डीएवी पब्लिक स्कूल गुवा में स्कूल के प्राचार्य डा मनोज कुमार के मार्गदर्शन एवं दिशा निदेर्शानुसार, कारगिल दिवस को विजय दिवस के रूप में मनाया गया। स्कूल के वरीय शिक्षक अनंत कुमार उपाध्याय की अध्यक्षता में स्कूली शिक्षकों के द्वारा कारगिल के वीर शहीदों को नमन करते हुए पुष्प अर्पित किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रार्थना सभा में उपस्थित करीब 1000 बच्चों को कारगिल में शहीद हुए भारत के सपूतों को भारत देश का सच्चा वीर बताया गया। साथ ही उनमें राष्ट्रप्रेम जागृत कर देश का सच्चा प्रहरी बनने के लिए मार्गदर्शन दिया गया। वरीय शिक्षक अनंत कुमार उपाध्याय ने अपने संबोधन में कहा कि 26 जुलाई 1999 को भारतीय सेना ने करगिल में पाकिस्तानी घुसपैठियों द्वारा कब्जा की गई सभी सैन्य

कारगिल दिवस के मौके पर आयोजित किया गया कार्यक्रम। ● फोटोन न्यूज

चौकियों पर कब्जा करने के बाद ऑपरेशन विजय को सफल घोषित किया। स्कूल के इतिहास से शिक्षक पीके आचार्य ने कहा कि इस युद्ध में भारत के 527 वीर जवान शहीद हुए थे, 1363 जवान घायल हुए थे।

भारतीय सेना के जांबाज, कारगिल युद्ध के हीरो कैप्टन विक्रम बत्रा कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव व अन्य शहीदों को याद किया गया एवं द्रवित हृदय से श्रद्धा सुमन अर्पित की गई। सच्चाई यह है कि पाकिस्तान ने कारगिल युद्ध की शुरूआत 3 मई 1999 को ही कर दी थी। उसने कारगिल की ऊंची पहाड़ियों पर 5,000 सैनिकों के साथ घुसपैठ कर कब्जा जमा लिया था। इस बात की जानकारी जब भारत सरकार को मिली तो भारतीय सेना ने पाक सैनिकों को खदेड़ने के लिए ऑपरेशन विजय चलाया। जिसमें भारत देश को सफलता मिली एवं हिंदुस्तान के जांबाज सपूतों ने पाकिस्तानियों को खदेड़ भगाया।

बच्चे देश के भविष्य, आप वन व पर्यावरण की रक्षा में अहम भूमिका निभा सकते : आलोक कुमार वर्मा

PHOTON NEWS CHAIBASA : सारंडा वन प्रमंडल के ससंगदा वन प्रक्षेत्र किरीबुरु के तत्वाधान में 74वां वन महोत्सव किरीबुरु के प्रोस्पेक्टिंग स्थित दुर्गा पूजा पंडाल में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि नोवामुंडी प्रखंड प्रमुख पूनम गिलुवा, सारंडा वन प्रमंडल पदाधिकारी आलोक कुमार वर्मा, सीआरपीएफ 26 बटालियन के सहायक कमांडेंट शिबु मलिक, सीआईएसएफ के इन्स्पेक्टर रुपेश लखवार, वन क्षेत्र पदाधिकारी शंकर भगत, मुखिया लिपि मुंडा, सेल अधिकारी संदीप भारद्वाज, रिषभ सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। इसके बाद वन विभाग ने सभी अतिथियों को पौधा भेंट कर सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि पूनम गिलुवा ने कहा कि जंगल व पेड़-पौधे हमारे जीने का आधार है। इसके बगैर हम एक पल भी जिंदा नहीं रह सकते हैं। हम आदिवासी सदैव प्रकृति व

पौधा रोपण करते अतिथि। ● फोटोन न्यूज

पर्यावरण प्रेमी रहे हैं। हमें लकड़ी की जगह गैस का इस्तेमाल इंधन के रूप में करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति 10-10 पौधा लगाये।

वहीं सारंडा वन प्रमंडल पदाधिकारी आलोक कुमार वर्मा ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य हैं। आप वन व पर्यावरण की रक्षा में अहम भूमिका निभा सकते हैं। आपको अपने परिवार व समाज को वन व पर्यावरण की रक्षा हेतु जागरूक करने की जरुरत है। इस वर्ष ससंगदा प्रक्षेत्र में कुल लगभग 32000 पौधे लगाए जायेंगे। जिसकी शुरूआत वन महोत्सव के साथ की गई है। उन्होंने आह्वान किया कि पर्यावरण संरक्षण हमारी प्रमुख जिम्मेदारी है। प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा के लिए अपना योगदान देना चाहिए। हमारा कर्तव्य है कि हम आने वाली पीढ़ी को हर तरह से स्वस्थ वातावरण प्रदान करें। उन्होंने कहा कि वन महोत्सव पेड़ों के त्योहार के रूप में भी मनाया जाता है।

वन क्षेत्र पदाधिकारी शंकर भगत ने कहा कि सारंडा जंगल को सिर्फ आग व कटाई से बचा दिया जाये तो इस जंगल में वन महोत्सव मनाने की कभी जरूरत नहीं पडेगी। वन महोत्सव की शुरूआत वर्ष 1950 में कृषि मंत्रालय भारत सरकार द्वारा की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य भारत का पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने में पेड़ों और जंगलों के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

सीआरपीएफ 26 बटालियन के सहायक कमांडेंट शिबु मलिक ने कहा कि देश की उन्नति पर्यावरण के बगैर नहीं हो सकती। पेड़ हमारे लिये अनमोल है। यह हमारी जीने आधार है।

सेल प्रबंधन पर्यावरण के प्रति गंभीर : संदीप भारद्वाज

सेल मेघाहातुबुरु के सहायक प्रबंधक संदीप भारद्वाज ने कहा कि सेल प्रबंधन पर्यावरण के प्रति गंभीर है। इस वर्ष मेघाहातुबुरु प्रबंधन द्वारा 7 एकड़ में पेड़-पौधे लगाये जा रहे हैं। पीसीएस स्कूल के बच्चों ने भी पेड़-पौधे व पर्यावरण पर अपने-अपने विचार दिये।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों ने पूजा पंडाल मैदान में पौधरोपण किया। डीएफओ ने सारंडा के विभिन्न वन समितियों को टॉर्च प्रदान किये। इस दौरान सेल अधिकारी, मजदूर नेता वीर सिंह मुंडा, पर्यावरण प्रेमी अरविन्द चौहान, ससंगदा प्रक्षेत्र, गुवा प्रक्षेत्र एवं समता प्रक्षेत्र के वनकर्मी उपस्थित थे।

कुमारडुंगी के बड़ा जांबनी में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता संपन्न, विधायक हुए शामिल

JHARKHAND में खेल सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं, करियर भी : विधायक

PHOTON NEWS CHAIBASA : हेमंत सोरेन सरकार में खेल सिर्फ मनोरंजन का साधन बनकर नहीं रह गया है इसमें अब युवा करियर भी बनाने लगे हैं। यह बातें कुमारडुंगी के जंताल पूजा समिति खंडखोरी की ओर से बड़ा जांबनी में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता के दौरान संबोधित करते हुए विधायक निरल पुरती ने कही।

उन्होंने कहा कि हेमंत सोरेन मुख्यमंत्री बनते ही सभी वर्ग के विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। खासकर युवा वर्ग के लिए उन्होंने हर क्षेत्र में योजना तैयार कर रखी है। जिस क्षेत्र में भी युवा जाना चाहे उसके लिए द्वार खुला हुआ है। फुटबॉल प्रतियोगिता सिर्फ मनोरंजन का साधन बनकर नहीं रह गया है, इसमें अब युवा करियर

बड़ा जांबनी में आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता में शामिल टीमें। ● फोटोन न्यूज

बनाने के लिए भी देखने लगे हैं।

झारखंड सरकार खेल मंत्रालय के द्वारा वर्तमान में सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल प्रतियोगिता पंचायत, प्रखंड और जिला स्तर में आयोजित हो रहा है। जिसमें युवा प्रतिभा स्कूल से ही अपने करियर के बारे में सोच सकते हैं। इसके अलावा मुख्यमंत्री आमंत्रण फुटबॉल प्रतियोगिता, सहाय योजना आदि प्रतियोगिता से भी युवाओं को आगे बढ़ने का मौका दिया जा रहा है।

विधायक ने कहा कि हर क्षेत्र में झारखंड विकास कर रहा है। उन्होंने कहा कि अपने खेल से दर्शकों का दिल जीतने का प्रयास करें। आपके खेल देखने के लिए दर्शक दिन भर अपना कीमती समय देकर मैदान में मौजूद है। फुटबॉल खेल भावना के अनुरूप खेला जाता है। दर्शक तभी ताली बजाते हैं, जब कोई दूसरी टीम का खिलाड़ी मैदान में गिर गया हो और उसे उठाने के लिए विपक्षी टीम के खिलाड़ी चले जाते हैं तो यह एक टीम भावना का बड़ा उदाहरण है।

मौके पर जिला परिषद सदस्य कुमारडुंगी शशि भूषण पिंगुवा, उप प्रमुख बुधराम हेम्ब्रम, मुखिया खंडखोरी गोरबारी सिंकू, मुखिया बाइहातु संजु कोन्डांकेल, पंचायत समिति सदस्य खंडखोरी घनश्याम जेराई, शिक्षक रुपा सिंकू, कांग्रेसी रितेश तामसोय, ग्रामीण मुंडा अजीत कुमार सिंकू समेत जंताल पूजा समिति पदाधिकारी मौजूद थे।

सरकार की ओर से पंचायतों को 50 लाख अनुदान देने की घोषणा का जिला सरपंच संघ ने किया विरोध

प्रेस कांफ्रेंस करते ब्लॉक के सरपंच। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS SUNDARGARH : राज्य सरकार ने आमो ओडिशा नवीन ओडिशा नामक एक योजना की घोषणा की। इस योजना में राज्य सरकार ने राज्य की प्रत्येक पंचायत को विभिन्न प्रकार विकास कार्यों के लिए 50 लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा की है। लेकिन सुंदरगढ़ जिला सरपंच एसोसिएशन ने इस योजना की सफलता और कार्यशीलता पर सवाल उठाए हैं, इस संबंध मेंबुधवार को बणई डाकबंगला में जिला अध्यक्ष उग्रसेन किसान के नेतृत्व में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। प्रेस कॉन्फ्रेंस में ब्लॉक के सभी सरपंच जुटे और अपनी-अपनी शिकायतें रखीं।

सरपंच महासंघ के जिला अध्यक्ष के अनुसार, आमो ओडिशा नवीन ओडिशा' अभियान में सरपंचों की उपेक्षा की गई है। ग्राम सभा के बिना ही पार्टी कार्यकर्ता विभिन्न पंचायतों में सरपंचों को शामिल किए बिना ही विकास कार्यों की सूची तैयार करते हैं।

इसके अलावा महासंघ ने मांग की प्रशासनिक अधिकारी सरपंचों की ओर सहयोग का हाथ बढ़ाएं और विकास कार्य कराने में तत्परता दिखाएं। आने वाले दिनों में जिला सरपंच संघ आमो ओडिशा नवीन ओडिशा' अभियान के तहत सरपंचों सभी विकास कार्यों में शामिल नही की गई तो जिला सरपंच संघ सामूहिक कलम बंद आंदोलन करेंगे।

एकदिवसीय सीरीज देखने देर रात तक जागना होगा

मुम्बई टीम इंडिया के प्रशंसकों के लिए भारत और वेस्टइंडीज के बीच गुरुवार से शुरु हो रही तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज देखना कठिन रहेगा। इसका कारण मैच शुरू होने का समय है। एकदिवसीय सीरीज के मैच दोपहर 1ः30 बजे शुरू होंगे। वहीं भारतीय समयानुसार यह मैच शाम 7 बजे से शुरू होगा। इस प्रकार ये मैच रात करीब 3 बजे समाप्त होंगे। ऐसे में दर्शकों को मैच देखने के लिए देर रात तक जागना होगा। भारत और वेस्टइंडीज के बीच पहला एकदिवसीय मैच टीवी पर डीडी स्पोर्ट्स पर देख सकते हैं। भारत और वेस्टइंडीज के बीच पहले एकदिवसीय मैच की लाइव स्ट्रीमिंग आप जियो सिनेमा एप पर भी देख सकते हैं।

भारत-वेस्टइंडीज पहला एकदिवसीय आज, युवा खिलाड़ियों पर रहेंगी नजरें

शाम सात बजे से होगा मैच

ब्रिजटाउन।

भारतीय टीम गुरुवार को यहां मेजबान वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज में जीत से शुरुआत करने उतरेगी। टेस्ट सीरीज में मिली जीत से भारतीय टीम का मनोबल पहले ही बढ़ा हुआ है। आगामी एकदिवसीय विश्वकप को देखते हुए भी यह सीरीज अहम मानी जा रही है। इसलिए इसमें शामिल सभी खिलाड़ी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करेंगे। इस सीरीज में आक्रामक बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव बेहतर प्रदर्शन कर इस प्रारूप में भी अपने को उपयोगी साबित करना चाहेंगे। वहीं विश्वकप में दूसरे विकेटकीपर के स्थान के लिये ईशान किशन और संजू सैमसन का नाम सबसे आगे हैं, ऐसे में ये दोनो भी इस सीरीज में बेहतर प्रदर्शन कर अपनी दावेदारी मजबूत करना चाहेंगे। भारत एशिया कप और विश्व कप के लिये टीम संयोजन तैयार करने के मकसद से इस सीरीज में कुछ खिलाड़ियों को आजामा रहा है। चयन समिति के प्रमुख अजीत अगरकर भी इसके लिए यहां पहुंचे हैं। टेस्ट की तरह ही एकदिवसीय में भी भारतीय टीम जीत की प्रबल दावेदार है। इस सीरीज में सूर्यकुमार, ईशान, सैमसन, के अलावा युजवेंद्र चहल और उमरान मलिक के प्रदर्शन पर भी चयन समिति की नजरं रहेंगी। टी20 क्रिकेट में नंबर एक खिलाड़ी बने सूर्यकुमार चोटिल श्रेयस अय्यर की जगह चौथे नंबर पर बेहतर प्रदर्शन करने के लिए उतरेंगे। सूर्यकुमार को पहले मैच में अंतिम ग्यारह में जगह मिलने की उम्मीद है। वहीं जांघ की सर्जरी के बाद रिहैबिलिटेशन करा रहे लोकेश राहुल के नहीं होने के कारण उनकी जगह के लिए इस मैच में ईशान और सैमसन में से किसी एक को अवसर मिलेगा। सैमसन को टीम से भीतर बाहर होने की आदत है लेकिन 11 वनडे में 66 की औसत से रन बना चुके इस खिलाड़ी को टेस्ट सीरीज में अच्छा प्रदर्शन करने वाले ईशान को पहले मैच में विकेटकीपर की जिम्मेदारी मिलने की अधिक संभावना है। वहीं मध्यक्रम में सैमसन को जगह मिल सकती है। पारी की शुरुआत कप्तान रोहित शर्मा के साथ शुभमन गिल करेंगे। ऐसे में युवा रूतुराज गायकवाड़ को शायद ही जगह मिले। वहीं तेज गेंदबाजी में गेंदबाज उमरान मलिक के पास इसी सीरीज में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर है। उन्होंने सात वनडे में 13 विकेट लिए हैं। इस मैच में कुलदीप यादव की जगह पर यजुवेन्द्र चहल को शामिल किया जा सकता है। तेज गेंदबाजी आक्रमण की जिम्मेदारी मोहम्मद सिराज के अलावा जयदेव उनादकट, मुकेश कमार और शार्दुल ठाकुर के पास रहेगी। वहीं दूसरी ओर मेजबान वेस्टइंडीज टीम इस बार एकदिवसीय विश्व कप के लिये क्वालीफाई नहीं कर सकी है और ऐसे में उसका लक्ष्य बेहतर प्रदर्शन कर ये दिखाना होगा कि उसके पास अभी क्रिकेट प्रतिभाएं बरकरार हैं।

भारत-पाक मैच की तारीख बदलने को लेकर बीसीसीआई की राज्य क्रिकेट संघों के साथ बैठक आज

मुम्बई ।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने गुरुवार को सभी राज्य संघों की एक बैठक बुलायी है। इसमें एकदिवसीय विश्वकप में पाकिस्तान के खिलाफ 15 अक्टूबर को होने वाले मुकाबले की तारीख बदलने पर चर्चा होगी। यह अहम बैठक बीसीसीआई सचिव जय शाह ने बुलायी है। वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार एकदिवसीय विश्व कप का यह महामुकाबला 15 अक्टूबर को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाना पर इसी दिन से नवरात्रि समारोह भी शुरु होने वाले हैं। इसी को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियों ने सुरक्षा का हवाला देते हुए बीसीसीआई से मैच का कार्यक्रम बदलने को कहा है। स्थानीय पुलिस ने बीसीसीआई से कहा है कि उस दिन सुरक्षा का ध्यान रखना कठिन होगा। मेजबानी के लिए तैयार राज्य संघों के साथ बीसीसीआई अधिकारियों की यह बैठक नई दिल्ली में होगी। इसमें यह तय है कि अहमदाबाद में होने वाले भारत-पाक विश्व कप मैच की तारीख में संभावित बदलाव पर फैसला होगा। अगर भारत-पाकिस्तान मैच पहले किया जाता है तो इसका असर एकदिवसीय विश्व कप के पूरे कार्यक्रम पर पड़ सकता है। वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार, 14 अक्टूबर टूर्नामेंट में डबल हेडर वाला दिन है। विश्व कप मैच की तारीख में बदलाव से कई प्रशंसकों और अन्य प्रमुख हितधारकों पर भारी असर पड़ेगा, जिन्होंने पहले से ही इस मैच को लेकर अहमदाबाद के लिए आवास और उड़ान टिकट बुक कर लिए हैं।

पेरिस में 2024 ओलंपिक मशाल को लेकर नजर आये आयोजन समिति के प्रेसीडेंट टोनी एस्ट्रेंगयूट और मेयर एनी हिडालगो।

बीसीसीआई ने घोषित किया कार्यक्रम, मोहाली में होंगे दो अंतरराष्ट्रीय मुकाबले

मुम्बई ।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने अंतर्राष्ट्रीय घरेल सत्र 2023-24 के लिए कार्यक्रम घोषित कर दिया है। इसके तहत टीम इंडिया 16 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलेगी जिसमें 5 टेस्ट, 3 एकदिवसीय और 8 टी20 शामिल हैं। इसमें मोहाली में दो अंतरराष्ट्रीय मुकाबले रखे गये हैं। इससे पहले पंजाब क्रिकेट संघ ने विश्वकप में मोहली को मेजबानी नहीं मिलने पर विरोध जताया था। इस मामले में पंजाब के खेल मंत्री मीत हेयर ने भी केन्द्र सरकार से भी शिकायत की अब जो कार्यक्रम आया है। उसमें एक एकदिवसीय और एक टी20 मुकाबला यहां रखा गया है।

इसमें ऑस्ट्रेलियाई टीम के भारत दौरे का पहला एकदिवसीय मैच 22 सितंबर को मोहाली में खेला जाएगा। वहीं अफगानिस्तान टीम के भारत दौरे में 11 जनवरी को पहला टी-20 मोहाली में खेला जाएगा।

बीसीसीआई का अंतर्राष्ट्रीय घरेल सत्र 2023-24 का कार्यक्रम इस प्रकार है -

भारत का ऑस्ट्रेलिया दौरा (3 एकदिवसीय)

- 22 सितंबर - पहला एकदिवसीय (मोहाली)
- 24 सितंबर - दूसरा एकदिवसीय (इंदौर)
- 27 सितंबर - तीसरा एकदिवसीय (राजकोट)

ऑस्ट्रेलिया का भारत दौरा (5 टी-20 अंतरराष्ट्रीय)

- 23 नवंबर - पहला टी-20 इंटरनेशनल (वायजाग)
- 26 नवंबर - दूसरा टी-20 इंटरनेशनल (केरला)
- 28 नवंबर - तीसरा टी-20 इंटरनेशनल (गुवाहाटी)
- 01 दिसंबर - चौथा टी-20 इंटरनेशनल (नागपुर)
- 03 दिसंबर - 5वां टी-20 इंटरनेशनल (हैदराबाद)

अफगानिस्तान का भारत दौरा (3 टी-20 अंतरराष्ट्रीय)

- 11 जनवरी - पहला टी-20 इंटरनेशनल (मोहाली)
- 14 जनवरी - दूसरा टी-20 इंटरनेशनल (इंदौर)
- 17 जनवरी - तीसरा टी-20 इंटरनेशनल (बेंगलुरु)

इंग्लैंड का भारत दौरा (5 टेस्ट)

- 25 से 29 जनवरी - पहला टेस्ट (हैदराबाद)
- 02 से 06 फरवरी - दूसरा टेस्ट (वायजाग)
- 15 से 19 फरवरी - तीसरा टेस्ट (राजकोट)
- 23 से 27 मार्च - चौथा टेस्ट (रांची)
- 07 से 11 मार्च - 5वां टेस्ट (धर्मशाला)

संक्षिप्त समाचार

स्पेन ने भारतीय हॉकी टीम को 2-1 से हराया हराया

बार्सिलोना । भारतीय पुरुष हॉकी टीम को यहां स्पेन हॉकी महासंघ की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित चार देशों के अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट के पहले मैच में मेजबान टीम ने 2-1 से हरा दिया। इस मुकाबले में स्पेन की ओर से पॉल क्यूनिल ने 11 वें मिनट जबकि जोक्विन मेनिनी ने 33 वें मिनट में गोल किये। वहीं भारतीय टीम की ओर से एकमात्र गोल हरमनप्रीत सिंह ने 59वें मिनट में दागा। भारतीय टीम ने शुरुआती क्वार्टर में आक्रामक खेल दिखाया पर वह अपने प्रयासों को गोल में नहीं बढ़त पायी। मेजबान टीम के क्यूनिल ने पहले क्वार्टर के समाप्त होने से पहले ही गोल दागर स्पेन को बढ़त दिला दी। वहीं भारतीय टीम ने दूसरे क्वार्टर में वापसी के प्रयास किये पर वह सफल नहीं रही। भारतीय टीम ने तीसरे क्वार्टर में कई हमले किये। इस दौरान स्पेन की ओर से मेनिनी ने गोल कर अपनी टीम को 2-0 से आगे कर दिया। भारतीय टीम को तीसरे क्वार्टर में एक पेनल्टी कॉर्नर मिला पर भारतीय टीम उसे गोल में नहीं बदल पायी। भारतीय टीम ने चौथे क्वार्टर में बेहतर प्रदर्शन कर मेजबान टीम पर दबाव बनाया। इसी का लाभ उठाते हुए भारतीय टीम की ओर से 59वें मिनट में हरमनप्रीत ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में एक गोल दाग दिया। स्पेन ने इसके बाद कोई ओर गोले नहीं होने देते हुए मैच पर 2-1 से कब्जा कर लिया।

वॉर्नर और स्मिथ टेस्ट से ले सकते हैं संन्यास : वॉन

सिडनी । इंग्लैंड क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान माइकल वान के अनुसार इस एशेज सीरीज के बाद ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख बल्लेबाज स्टीव स्मिथ और डेविड वार्नर टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले सकते हैं। एशेज का चौथा टेस्ट ड्रा के कारण यह सीरीज अभी ऑस्ट्रेलिया के पास ही है। अब इंग्लैंड का लक्ष्य किसी प्रकार अंतिम मैच जीतकर सीरीज को बराबरी पर लाना रहेगा। वॉन ने कहा कि बरसात के दिनों में ऐसा हमेशा होता है जब पत्रकार थोड़े ऊब जाते हैं और आप कुछ लोगों से बात करना शुरू कर देते हैं। उसी दौरान स्मिथ और वार्नर के संन्यास की बातें सामने आयी है। वॉन बोले, स्मिथ के बारे में कहा जा रहा था कि ओवल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच अंतिम होगा। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान ने कहा कि हो सकता है कि मैनचेस्टर में बारिश के कारण ही लोग बात कर रहे हों पर कल प्रेस बॉक्स में यही चर्चा थी कि कुछ ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज खेल को अलविदा कह सकते हैं। वार्नर ने जनवरी 2024 से ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट के तीनों प्रारूपों से संन्यास लेने की अपनी योजना का खुलासा किया था हाल के दिनों में उनका फार्म भी अच्छा नहीं है जिससे ये अफवाह और जोर पकड़ रही है। वहीं दूसरी ओर स्मिथ इस समय अच्छे फॉर्म में हैं। ऐसे में वॉन के अनुमान कितने सही है ये समय ही बताएगा।

आईसीसी महिला एकदिवसीय रैंकिंग में हरलीन, जेमिमा ऊपर आयीं

हरमनप्रीत को हुआ नुकसान

दुबई ।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की महिला एकदिवसीय बल्लेबाजी रैंकिंग में भारतीय टीम की हरलीन देयोल ओर जेमिमा रोड्रिग्स ने लंबी छलांग लगायी है। हरलीन को बांग्लादेश के खिलाफ अंतिम एकदिवसीय में अर्धशतकीय पारी खेलने का लाभ मिला है। इसी के साथ ही हरलीन को रैंकिंग में 32 स्थान की बढ़त मिली है। इससे हरलीन ताजा आईसीसी रैंकिंग में 51वें स्थान पर पहुंच गई हैं। वहीं दूसरे एकदिवसीय में आक्रामक पारी खेलने वाली जेमिमा 41 स्थान के लाभ के साथ ही 55वें स्थान पर पहुंच गयी हैं। दूसरी ओर बल्लेबाजी रैंकिंग में भारत की स्मृति मंधाना के एक स्थान ऊपर आकर छठे स्थान जबकि कप्तान हरमनप्रीत कौर दो स्थान के नुकसान के साथ ही आठवें स्थान पर खिसक गयी हैं। गेंदबाजी रैंकिंग की बात करें तो भारत की दीप्ति शर्मा 9 वें और राजेश्वरी गायकवाड़ 10 वे स्थान पर हैं। स्नेह राणा तीन पायदान ऊपर आगर 38वें स्थान पर हैं। दीप्ति ऑलराउंडरों की रैंकिंग में सावें स्थान पर हैं। वहीं इंग्लैंड की ऑलराउंडर नताली साइवर-ब्रंट ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आईसीसी महिला चैम्पियनशिप श्रृंखला के अंतिम एकदिवसीय मैच में शतक लगाने के साथ ही पहली बार आईसीसी महिला एकदिवसीय खिलाड़ी रैंकिंग में नंबर एक बल्लेबाज बनी हैं। इसी के साथ ही वह अंक तालिका में ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी से आगे निकल गईं हैं। उन्होंने ऑलराउंडरों की रैंकिंग में शीर्ष पर बनी वेस्टइंडीज की कप्तान हैली मैथ्यूज पर अपनी बढ़त 39 रेटिंग अंक तक बढ़ा ली है। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर एश्ले गार्डनर ऑलराउंडरों की सूची में दो पायदान ऊपर करियर के सर्वश्रेष्ठ तीसरे स्थान पर हैं, जबकि बल्लेबाजी और गेंदबाजी रैंकिंग में भी करियर के सर्वश्रेष्ठ स्थान पर हैं।

जय शाह ने ऋषभ, बुमराह और श्रेयस की प्रगति पर संतुष्टि जाहिर की

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट बोर्ड बीसीसीआई सचिव जय शाह ने अभी बेंगलुरु की राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में अपनी फिटनेस हासिल कर रहे विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत, तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, बल्लेबाज लोकेश राहुल, श्रेयस अय्यर और प्रसिद्ध कृष्णा की प्रगति पर संतुष्टि जाहिर की है। ये सभी खिलाड़ी यहां रिहैब के दौर से गुजर रहे हैं। अभी इनके फिटनेस और कौशल पर काम जारी है। बुमराह और कृष्णा दोनों तेज गेंदबाज अपने पुनर्वास के अंतिम चरण में हैं और नेट्स में पूरी तेज के साथ गेंदबाजी कर रहे हैं। यह जोड़ी अब कुछ अभ्यास मैच खेलेगी, जिसका आयोजन एनसीए करेगा। बीसीसीआई मेडिकल टीम उनकी प्रगति से खुश है और अभ्यास खेलों की समीक्षा के बाद उनपर अंतिम फैसला करेगी। राहुल और अय्यर ने नेट्स पर बल्लेबाजी फिर से शुरू कर दी है और वर्तमान में ताकत और फिटनेस अभ्यास से गुजर रहे हैं। बीसीसीआई मेडिकल टीम उनकी प्रगति से संतुष्ट है और आने वाले दिनों में कौशल, ताकत और कंडीशनिंग दोनों के मामले में अपनी तीव्रता बढ़ाएगी। वहीं ऋषभ अपनी फिटनेस हासिल करने में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। वह नेट्स पर बल्लेबाजी कर रहा है। साथ ही साथ विकेटकीपिंग का भी अभ्यास कर रहे हैं।

विराट विश्व में सबसे ज्यादा कमाई करने वाले शीर्ष-100 खिलाड़ियों में शामिल एकमात्र भारतीय

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली रनों के साथ ही कमाई के मामले में भी अव्वल हैं। विराट विश्व में सबसे ज्यादा कमाई करने वाले शीर्ष-100 खिलाड़ियों में शामिल हैं। इसमें केवल दो एशियाई खिलाड़ी शामिल हैं। विराट साल 2022 में सबसे अधिक रकम पाने वाले शीर्ष 100 खिलाड़ियों में एकमात्र भारतीय हैं। उनकी कुल संपत्ति 1,000 करोड़ रुपये से अधिक है। वह साल 2022 के लिए जारी की गई शीर्ष 100 सबसे अधिक भुगतान हासिल करने वाले खिलाड़ियों की सूची में 61 वें स्थान पर हैं. भारतीय राष्ट्रीय टीम के अलावा आईपीएल फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के लिए खेलने वाले विराट ने वेतन और जीत से 2.9 मिलियन डॉलर और विज्ञापन से 31 मिलियन डॉलर कमाए हैं। उनकी कुल कमाई 33.9 मिलियन डॉलर आंकी गई है हालांकि वह 2021 में अपनी 59वीं रैंक से दो स्थान नीचे गिर गए हैं। कोहली के अलावा, इस सूची में एशिया से एकमात्र अन्य खिलाड़ी जापान की टेनिस स्टार नाओमी ओसाका हैं। 25 वर्षीय साल की ओसाका ने अपने करियर में 4 ग्रैंड स्लैम, दो अमेरिकी ओपन और दो ऑस्ट्रेलियाई ओपन जीते हैं। ओसाका इस सूची में 20वें स्थान पर आने वाली शीर्ष एशियाई खिलाड़ी हैं। ओसाका की कुल कमाई 53.2 मिलियन डॉलर आंकी गई है, जिसमें केवल 1.2 मिलियन डॉलर जीत से और 52 मिलियन डॉलर विज्ञापन से प्राप्त हुए हैं।

फीफा महिला विश्व कप - फिलीपींस ने न्यूजीलैंड को हराकर सबको किया हैरान

कोलंबिया ने दक्षिण कोरिया को हराया

सिडनी ।

फिलीपींस ने फीफा महिला विश्व कप में न्यूजीलैंड को 1-0 से हराकर इस टूर्नामेंट में पहली बार कोई मुकाबला जीता है। वहीं एक अन्य मुकाबले में कोलंबिया ने दक्षिण कोरिया को 2-0 से हरा दिया। एक रिपोर्ट के अनुसार ग्रुप ए में नॉर्वे ने स्विट्जरलैंड के साथ हुए मुकाबले में गोल रहित ड्रॉ खेला। इस मैच में नॉर्वे को अपने स्टार फ़ॉरवर्ड एडा हेगरबर्ग के बिना ही खेलना पड़ा। अब नॉर्वे को दो गेम में केवल एक अंक ही मिला है। अब उसे फिलीपींस से होने वाले अपने अंतिम ग्रुप मैच को किसी भी हालत में जीतना होगा। फिलीपींस ने ग्रुप के एक अन्य मैच में न्यूजीलैंड को हराकर एक बड़ा उलटफेर किया था। सरीना बोल्डन ने 24वें मिनट में फिलीपींस की ओर से विजयी गोल कर खेलों के सह मेजबान को हैरान कर दिया था। फिलीपींस के कोच एलन स्टैजिक ने कहा, मेरी आंखों में बाकी सभी के आंसू हैं, यह बहुत भावुक करने वाला है। आपने देखा कि न्यूजीलैंड को अपनी पहली जीत के लिए कितना लंबा इंतजार करना पड़ा। इसलिए फिलीपींस के लिए आज उसे हासिल करना अविश्वसनीय था। वहीं अपने पहले मैच में नॉर्वे पर ऐतिहासिक जीत के बाद न्यूज़ीलैंड टीम इस मैच में जीत की प्रबल दावेदार के तौर पर उतरी थी। न्यूजीलैंड ने दूसरे हाफ में बराबरी हासिल करने के लिए कई अच्छे आक्रमक किये पर उसके खिलाड़ी उन्हें गोल में बदल नहीं पाये। हार के बाद निराश न्यूजीलैंड के कोच जित्का क्लिमकोवा ने कहा, यह दिल तोड़ने वाला था, मैं अपने खिलाड़ियों की आंखों में आंसू देख सकता था। पर यह अभी सबकुछ समाप्त नहीं हुआ है। हमें अभी भी एक गेम खेलना बाकी है। स्विट्जरलैंड के खिलाफ गेम से पहले हमारे पास अभी भी अपना ध्यान केन्द्रित करने समय है। वहीं एक अन्य मैच में किशोरी लिंडा कैसिडो के गोल से कोलंबिया ने दक्षिण कोरिया को 2-0 से हरा दिया। 18 वर्षीय कैसिडो ने पहले हाफ के अंत में कोलंबिया के लिए दूसरा गोल दागा। वहीं दक्षिण कोरियाई टीम पहले हाफ के अधिकांश समय पीछे रही और कोलंबिया की मजबूत रक्षापंक्ति का सामना करने में विफल रही। दक्षिण कोरिया ने 78वें मिनट में सबसे कम उम्र की खिलाड़ी 16 वर्षीय फॉरवर्ड केसी फेयर को उतारा पर वह भी कोई कमाल नहीं कर पायी।

भारतीय टीम के प्रदर्शन से खुश रोहित बोले, वेस्टइंडीज में खेलना अलग प्रकार की चुनौती

पोर्ट ऑफ स्पेन । भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि वेस्टइंडीज में खेलना अपने आप में एक अलग प्रकार की चुनौती है। भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दो मैचों की सीरीज 1-0 से जीत ली है और अब उसे तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज खेलनी है। रोहित ने कहा कि वेस्टइंडीज में खेलने की अपनी चुनौती है और जिस तरह से चीजें उनकी टीम के लिए रहीं, उससे वह संतुष्ट हैं। भारतीय टीम यहां बारिश के कारण दूसरा टेस्ट मैच नहीं जीत पायी थी। रोहित ने मैच के बाद कहा, हर जीत अलग होती है। वेस्टइंडीज में खेलने की अपनी चुनौती होती है। जिस तरह से चीजें हुईं, उससे खुश हूं। हमने अच्छा प्रयास किया, बदकिस्मती से अंतिम दिन बारिश होने के कारण हमारे हाथ से जीत निकल गयी। हम सकारात्मक इरादे के साथ उतरे थे। बारिश ने अंतिम फैसला किया। हम काफी आश्वस्त थे। आप जानते हैं कि अंत में बल्लेबाजी करना वेस्टइंडीज के लिए कितना मुश्किल रहेगा। हम हमेशा उस तरह का स्कोर चाहते थे, जहां हम चाहते थे कि विपक्षी टीम इसके लिए आगे बढ़े। सतह पर ज्यादा कुछ नहीं था। अंतिम दिन खेल नहीं होने से हमारे हाथ से जीत का अवसर निकल गया। उन्होंने कहा कि वह एक टीम के रूप में बेहतर होने में विश्वास करते हैं।रोहित ने कहा, मैं हमेशा एक टीम के रूप में बेहतर होने में विश्वास करता हूं। मैंने विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के बाद भी कहा था। हमने लगातार क्रिकेट खेला है। हम इसी पर ध्यान दे रहे हैं। हम खेल के सभी तीन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। रोहित ने दूसरे टेस्ट में अच्छे प्रदर्शन के लिए तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज और युव बल्लेबाज ईशान किशन की प्रशंसा की।